₹ 10
www.kewalsachtimes.com
जून 2025

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

एयर इंडिया का विमान दुर्घटनाग्रस्त

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PS.-78

जन-जन की आवाज है केवल सच

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं, जो केवल सच हो

केवल सच TIMES

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay पे paytm

www.kewalsach.com www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

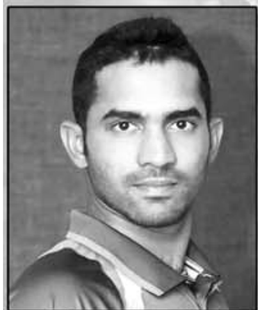

दिनेश कार्तिक
01 जून 1985

सोनाक्षी सिन्हा
02 जून 1987

स्व०जॉर्ज फर्नांडीस
03 जून 1930

अनिल अंबानी
04 जून 1959

मुकेश भट्ट
05 जून 1952

महेश भूपति
07 जून 1974

शिल्पा शेट्टी
08 जून 1975

किरण बेदी
9 जून 1949

सोनम कपूर
9 जून 1985

सुबोधकांत सहाय
11 जून 1951

किरण खेर
14 जून 1955

शेखर सुमन
14 जून 1960

मिथुन चक्रवर्ती
16 जून 1950

लियंडर पेस
17 जून 1973

राहुल गांधी
19 जून 1970

मुकेश खन्ना
19 जून 1958

राज बब्बर
23 जून 1952

वीरभद्र सिंह
23 जून 1934

करिश्मा कपूर
25 जून 1974

धर्मेन्द्र प्रधान
26 जून 1969

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Cover Page	3,00,000/-	N/A
Back Page	1,00,000/-	65,000/-
Back Inside	90,000/-	50,000/-
Back Inner	80,000/-	50,000/-
Middle	1,40,000/-	N/A
Front Inside	90,000/-	50,000/-
Front Inner	80,000/-	50,000/-

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेबसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेबसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

शब्दों की टूटती मर्यादा

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

सोसल मीडिया के मंच पर भारतीय राजनीति को शब्दों की मर्यादा से कलंकित किया जा रहा है और आम से खास तक को इससे कोई मतलब नहीं है कि किसी के बयान से दूसरे पर क्या असर पड़ेगा और जनता के बीच कैसा संदेश जायेगा। बिहार की राजनीति को लेकर नेहा सिंह राठौर बार - बार कहती है कि **बिहार में का बा?** साथ ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर कटाक्ष करती हैं लेकिन पश्चिम बंगाल एवं केरल और कर्नाटक के मुद्दे पर मौन हो जाती हैं और तो और सेना के शौर्य को भी कटघरे में डालती हैं। नेहा सिंह राठौर को अब सोसल मीडिया पर जवाब मिलने लगा है। बिहार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी यह बयान देते हैं कि तेजस्वी यादव अपने हांथ पर लिखें की **मेरा बाप चोर है**, उसका पलटवार करते हुए तेजस्वी यादव भी सम्राट चौधरी के पिता पर कटाक्ष करते हुए कहते हैं **मेरा बाप गद्दार है** लिखें। प्रशांत किशोर हों या अन्य राजनीतिक दल अपनी शब्दों के माध्यम से मर्यादा को ताड़ - ताड़ किया जा रहा है जिसकी वजह से आमजनता खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं। हत्या और बलात्कार जैसी घटनाओं पर भी गंदी राजनीति कर रहे हैं और कुछ भी बयान देने से बाज नहीं आते। सनातन धर्म को वायरस कहा जाता है तथा कई राजनीतिक दल ऐसे बयान का समर्थन करके भारत के गौरवशाली इतिहास को धूमिल करने की कोशिश की जाती है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर टिप्पणी करके या अन्य नेताओं पर अभद्र बयानबाजी करके वोट तो मिल जायेगा पर प्रतिष्ठा नहीं।

सत्ता पाने की लालच और पार्टी प्रमुख का खास बनने के चक्कर में कोई भी बयान देकर सोसल मीडिया पर वायरल हो जाता है लेकिन उसको यह ज्ञात नहीं होता की उसके शब्दों से किस प्रकार किसी की मर्यादा ताड़-ताड़ हो जाती है। मर्यादा का उल्लंघन किसी एक राजनीतिक दल द्वारा नहीं बल्कि यह प्रचलन बड़ी तेजी से फल-फूल रहा है भले ही देश की एकता और अखंडता खंडित हो उससे किसी को कोई सारोकार नहीं है और ऐसा करके लज्जित होने के बजाय उसको अपने बयान पर गर्व महसूस हो रहा है। इन दिनों राजद के विधायक मुन्ना यादव का यी बयान बड़ी तेजी से वायरल हो रहा है कि **मिश्रा, शर्मा, सिंह, झा** का कोई मतलब नहीं है और **भगवान श्रीराम पत्नी छोड़** था। लोग इसके बयान को लाइक भी कर रहे हैं और ऐसा करके सवर्ण को उनकी औकात दिखाने की कोशिश की जा रही है ताकि मुन्ना यादव तेजस्वी यादव का खास बन सके। एक साक्षत्कार में शिक्षित एवं मुद्दे पर बात करने वाले वामपंथ के बाद कांग्रेस के कन्हैया लालू यादव की सजा को शहीद भगत सिंह से तुलना करके राहुल गाँधी एवं तेजस्वी यादव को खुश करके राजनीति में अपनी साख मजबूत बनाना चाहता है। भारत में घुंसपैठियों पर नकेल कसने के बजाय वोटर लिस्ट से नाम कटने के पहले ही हाय-तौबा मचा रहीं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री खुले मंच से चुनाव आयोग को धमकी दे रही है ताकि एक कॉम को खुश किया जा सके। लोक गायिका के रूप में खुद को राजनीति में स्थापित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा की सरकार को कटघरे में खड़ा करके पूछती है कि बिहार में का बा? यूपी में का बा? गुजरात में का बा? महाराष्ट्र में का बा, आसाम-उड़ीसा में का बा? मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में का बा? का सवाल दागने वाली नेहा सिंह राठौर पश्चिम बगाल, कनार्टक, केरल की सरकार से सवाल क्यों नहीं पूछती। लोकतंत्र में सवाल पूछने की आजादी सबको है और निष्पक्ष सवाल करने वाले को देश की जनता उनको अपना मानती है और खुद को उसके रूप में देखती है लेकिन वर्तमान समय में शब्दों की मर्यादाओं का बलात्कार किया जाता है जैया बयान दिया जा रहा है। बिहार के उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी जिस प्रकार तेजस्वी यादव के उपर बयान देते हैं कि हांथ पर लिखकर घूमो की **''मेरा बाप चोर है''** तो इसके पलटवार में तेजस्वी यादव भी सम्राट चौधरी को कहते हैं कि अपने हांथ पर लिखकर घूमो **''मेरा बाप गद्दार''** है। जातिवाद एवं धर्मवाद के बाद शब्दों की मर्यादा के साथ खिलवाड़ करने वाले राजनेताओं के राजनीति के आड़ में सोसल मीडिया पर आम आदमी भी लोकतंत्र के साथ खेलता दिख रहा है। सोसल मडिया पर आकर विडिओ और ऑडियों वायरल करते हुए गंदी-गंदी गालियां तक दी जा रही है लेकिन सरकार एवं प्रशासन उसी पर कार्रवाई करती है जिससे उसका नुकसान हो रहा हो। जिस प्रकार सारिका पासवान और आशुतोष कुमार के बीच शब्दों की मर्यादा का बलात्कार हुआ है और हो रहा है उससे युवा पीढ़ी में एवं कानून की धज्जियां उड़ाई जा रही है। रोहिग्या और बांग्लादेशी घुसपैठी भारत की सुरक्षा व्यवस्था पर लगातार ठेंस पहुंचा रहे हैं तथा सर्वोच्च न्यायालय में जाकर मामला दर्ज करवाते हैं और न्यायालय उनको महत्व भी देती है जैसा संदेश भी सोसल मीडिया पर वायरल हो रहा है। शब्दों की मर्यादा इस प्रकार खंडित हो रहा है की आमजनता का विश्वास कानून से उठ जायेगा क्योंकि कानून अपनी शक्ति का एहसास कराने में विफल साबित हो रहा है। जब चुनाव आयोग के कार्य पर प्रश्न उठाया जायेगा तो उसके चुनाव पद्धति पर विश्वास करना कहां तक उचित होगा। पहले इवीएम पर सवाल उठाये जाते थे और अब वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन पर, ऐसे में सदन के भीतर हंगामा हो रहा है और एक - दूसरे पर गंदे शब्दों का बौछार जारी है। सोसल मीडिया के बढ़ते कदम की वजह से बड़े शीर्ष पर कार्यरत नेताओं के उपर कोई भी लांछन लगाया जा सकता है और लोग ऐसे लोगों को महत्व मिल रहा है जिसकी वजह से देश के भीतर के जयचंदों का प्रभाव बढ़ जाता है। नेहा सिंह राठौर पीएम मोदी के उपर जिस प्रकार भद्दी-भद्दी सवालों से उनके व्यक्तिगत जीवन एवं पीएम पद की गरिमा पर अमर्यादित शब्दों को लेकर सुर्खियों में है लेकिन अब **''का बा''** का जवाब देने के लिए कई लड़कियां भी शामिल हो गई हैं तो कई नेहा सिंह राठौर पर अमर्यादित बयान के लिए देशद्रोह का मुकदमा दर्ज करने का दवाब बना रहे हैं। कुर्सी के लिए नीचता के हद तक पहुंचने वाले राजनेता और राजनेत्री किसी पर भी टिप्पणी करने से गुरेज नहीं करती और फिल्म के साथ टीवी सिरियल में काम करने वाली अभिनेत्री से राजनेत्री बनी सांसदों पर भी अभद्र बयानबाजी का दौर चलता रहता है। हद तो तब हो जाती है कि सनातन धर्म को वायरस कहा जाता है तथा शंकराचार्य पर, कथावाचकों पर भी गलत बयानबाजी कर रहे हैं। पूर्णिया सांसद पप्पु यादव का धिरेन्द्र शास्त्री पर जिस प्रकार की अमर्यादित बयान सोसल मीडिया पर वायरल हो रहा है। क्या सांसद एवं विधायक एवं राजनीतिक दल के व्यक्ति को अमर्यादित बयान देने के पहले यह सोचना होगा कि भारत की जनता को क्या अच्छा लगता है और क्या नहीं, लेकिन चमचागिरी के चक्कर में निचले स्तर पर गिरकर देश की मर्यादा एवं भारतीय संस्कृति के साथ संस्कार के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं जिसकी वजह से समाज में गलत संदेश जा रहा है।

KEWAL SACH TIMES
A National Magazine
वर्षः- 14, अंकः- 168 माहः- जून 2025 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor
Arun Kumar Banka 7782053204
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)
Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)
Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor
Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor
Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor
Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565

Sub. Editor
Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922

Bureau Chief
Sanket kumar Jha 7762089203

Bureau
Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer
Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड
संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड
ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड
अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड
अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड
आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड
निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड
आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड
आवश्यकता है

गुजरात हेड
आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड
आवश्यकता है

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

पंजाब हेड
आवश्यकता है

हरियाणा हेड
आवश्यकता है

राजस्थान हेड
आवश्यकता है

उड़ीसा हेड
आवश्यकता है

आसाम हेड
आवश्यकता है

हिमाचल हेड
आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
मो०- 9868700991, 9431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 9433567880, 9339740757

झारखण्ड कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव, द्वितीय त्तल,
फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001
मो०- 9308815605

मध्यप्रदेश कार्यालय
केवल सच टाइम्स,
द्विभाषीय मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार पाठक
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
मो०- 8109932505,

विशेष प्रतिनिधी
भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,
मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

मई 2025

पाकिस्तान

मिश्रा जी,

मै केवल सच टाइम्स पत्रिका का नियमित पाठक हूं और इसकी सभी खबरों को प्राथमिकता के साथ पढ़ता हूं और मई 2025 अंक में प्रकाशित संजय सक्सेना की खबर "**सेना के साथ खड़ा भारत, सत्ता के लिए लड़ता पाकिस्तान**" में ऑपरेशन सिन्दूर की पूरी सच्चाई को पूर्ण बेबाकी के साथ पाठकों के समक्ष रखा गया है। भारत के भीतर बैठे जयचंदों को पत्रकार महोदय ने काफी सटीक शब्दों से उनको उनका देश प्रेम की सच्चाई को बताया है। विपक्ष सेना से भी सवाल पूछने के साथ-साथ घिनौना आरोप लगाकर अपनी गंदी राजनीति का परिचय देने में कामयाब हो जाता, जिससे उनका नुकसान होता है।

● **नवीन पाण्डेय, शास्त्री कॉलोनी, जहानाबाद**

Sex

संपादक महोदय,

मई 2025 अंक का संपादकीय "Mobile से सीख रहे हैं Sex" में वास्तविक रूप से जागरूक करने के लिए काफी उपयुक्त है। इस प्रकार का आलेख से संस्कार एवं संस्कृति का भी संरक्षण हो सकता है तथा इसका व्यापक पैमाने पर प्रसार हो तो इस गंभीर समस्या से निजात दिलाया जा सकता है। सोसल मीडिया के बढ़ते प्रभाव की वजह से मोबाइल पर ऐसे ऐसे एप हैं जिसकी वजह से बच्चों को गलत दिशा में मोड़ने की कोशिश की जा रही है। शिक्षा के नाम पर भी Sex का बाजार को बढ़ाया जा रहा है। करोना का कहर से भी ज्यादा खतरनाक बच्चों को विचलित करने वाला मोबाइल बन चुका है।

● **डॉ० लक्ष्मीनारायण, परसा बाजार, पटना, बिहार**

अहिल्या बाई

संपादक महोदय,

केवल सुख टाइम्स पत्रिका के मई 2025 अंक में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ० मोहन यादव ने अहिल्या बाई पर काफी सटीक एवं संदेशतमक आलेख को आवाम के बीच रखा है जिसको पढ़कर लोकमाता अहिल्या देवी के उत्कृष्ट कार्य की चर्चा की पूरी जानकारी मिलती है तथा कैसे एक महिला किस प्रकार राष्ट्र एवं समाज को एक नई दिशा देती है। डॉ० मोहन यादव ने अहिल्या देवी होल्कर की जीवन की उपलब्धियों एवं संघर्ष को भी प्राथमिकता से लोगों के बीच रखा है और उनके नाम पर सरकार कई उत्कृष्ट योजना को भी चला रही है। केवल सच टाइम्स पत्रिका सटीक एवं जानकारीप्रद खबरों को प्राथमिकता से प्रकाशित करता है।

● **रमेश यादव, रेलवे कॉलोनी, भोपाल**

ट्रोलनीति

संपादक महोदय,

"**यूपी की राजनीति में गिरती भाषा और बढ़ती ट्रोलनीति**" शीर्षक में पत्रकार अजय कुमार ने केवल सच टाइम्स पत्रिका के मई 2025 अंक में पूर्ण बेबाकी के साथ खबरों को प्राथमिकता से पाठकों के समक्ष रखा गया है कि सोसल मीडिया पर बयानबाजी इस कदर हावि हो गया है कि शब्दों की मर्यादा कोई मायने नहीं रखता। वहीं अजय कुमार की दूसरी खबर "राष्ट्रवाद के दौर में राहुल की जातिवादी राजनीति" भी पठनीय के साथ चिंताजनक है की देश के भीतर जातिवाद को सत्ता के लिए किसी भी हद तक गिरकर कार्य किया जा सकता है। राहुल गाँधी शिक्षित होकर भी जातिवादी राजनीति को महत्व दे रहे हैं ताकि बिहार में लाभ मिले लेकिन जनता को समझ नहीं रहे।

● **पंडित मोहन पाण्डेय, अस्सी घाट, बनारस**

ओवैसी

मिश्रा जी,

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के मद्देनजर अमित कुमार ने मई 2025 अंक "ओवैसी का बिहार में बड़ा दांव, महागठबंधन के साथ गठजोड़ की कोशिश" पर काफी सोचनीय खबर को प्राथमिकता से प्रकाशित किया है। एक ही पन्ने में महागठबंधन के साथ ओवैसी की पार्टी का गठजोड़ की चर्चा की वजह से बिहार के मुसलमानों के बीच यह चर्चा का माहौल है कि बिहारी मुसलमानो का नेतृत्व हैदराबाद वाला किस प्रकार करेगा। मुझे नहीं लगता कि ओवैसी बिहार में राजद एवं कांग्रेस के साथ गठजोड़ कररके चुनाव लड़ेगा लेकिन आपने व्याख्या के साथ खबर को रखा है जो काबिले तारिफ है। इस अंक में राजनीति की एक पर एक खबरें पठनीय हैं।

● **मनोज उरांव, कांटा टोली, रांची, झारखण्ड**

तंत्र और मंत्र

ब्रजेश जी,

मई 2025 अंक में पत्रकार नविन रॉगियाल ने "**तंत्र-मंत्र से हिन्दू लड़कियों का शिकार**" आलेख में मोहसिन खान के आतंक को बेनकाब किया है। किस प्रकार हिन्दू लड़कियों को तंत्र-मंत्र के नाम पर बहला-फुसलाकर गैंगरेप जैसी घटनाओं को अपने भाई एवं मित्रों के साथ मिल कर अंजाम देता है। यह खबर पढ़कर खून खौलता है और ऐसे कृत्य करने वाले को फांसी की सजा देनी चाहिए। इस प्रकार की घटनाओं से आवाम में काफी आक्रोश है और प्रशासन को इस प्रकार के घिनौनी हरकत करने वाले को कठोर से कठोर सजा दिलानी होगी अन्यथा ऐसे तत्व सरकार एवं समाज के लिए कोढ़ हैं। इस अंक का सभी खबर पठनीय एवं उपयोगी सामग्री वाला है।

● **विद्यानंद, रमना रोड, गया**

अन्दर के पन्नों में

10

Assam govt issues shoot-at 17

26

An Easy Guide to Choosing 40

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

फोन- 0612/3504251

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी

'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

कैलाश कुमार मौर्य

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

व्यवसायी

पटना, बिहार

7360955555

एक नजर

बबलू बंदक

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☛ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
e-mail:- kewalsach@gmail.com,
editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☛ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**

☛ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☛ सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☛ आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☛ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ सभी पद अवैतनिक हैं।

☞ विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 20001817444
BANK :- State Bank Of India
IFSC Code :- SBIN0003564
PAN No. :- AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of "APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
Registered Under the Indian Society Act 21, 1880
East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020
Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077
E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com
Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63
APNA GHAR
Now in the State of Bihar & Jharkhand
Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence in the lives of many Sr. Citizens.
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
A/C No. - 0600010202404
Bank Name - United Bank of India
IFSC Code - UTBIOKKB463
Pan No. - AAAAK9339D

शादी, हनीमून, हत्या और प्यार के जुनून में लिपटी

सोनम रघुवंशी की हेट स्टोरी

इंदौर के राजा रघुवंशी की मई में शादी हुई। हाथों से मेंहदी का रंग अभी उतरा भी नहीं था कि राजा की पत्नी सोनम ने पति की हत्या की साजिश रच डाली। इधर घरवाले शादी के बाद का हिसाब किताब कर रहे थे, उधर नई नवेली पत्नी सोनम पर भरोसा करके राजा उसकी जिद्द पर हनीमून पर मेघालय चला गया। वहां पत्नी ने ऐसा धोखा दिया कि अपने कत्ल के 2 मिनट पहले तक भी राजा को यह पता नहीं चल सका कि अगले कुछ पलों में उसकी पत्नी सोनम उसे मौत के घाट उतार देगी। पति को बेरहमी से मारा और अधमरा खाई में फेंक दिया। हत्या के 11 दिन बाद 2 जून को राजा रघुवंशी का शव मिला और 9 जून को सोनम यूपी के गाजीपुर में जिंदा मिली। इसके बाद अब इस पूरे कांड में कई किरदार सामने आ गए हैं। जिसमें सोनम का प्रेमी राज कुशवाह है, जिसके लिए सोनम ने राजा की हत्या करवा दी। मामला शादी के पहले सोनम के अफेयर का भी है। इसमें अफेयर की बात छुपाने का झूठ भी शामिल है। सोनम और राजा के परिवारों के बीच रिश्ते और भरोसे और फिर उस भरोसे के टूटने का भी है। शादी। हनीमून। धोखा और फिर हत्या। इंदौर के राजा रघुवंशी की हत्या और इस पूरे कांड में उनकी पत्नी सोनम रघुवंशी के मास्टरमाइंड होने की ये क्राइम थ्रिलर स्टोरी पिछले 18 दिनों से पूरे देश में ट्रेंड कर रही है। एक्स से लेकर फेसबुक तक और न्यूज पेपर से लेकर टीवी चैनल्स तक। कोई ऐसा मीडिया नहीं है, जहां प्यार, शादी धोखे और मर्डर की ये कहानी नजर नहीं आ रही है। अब इस पूरे कांड में कई परतें खुल रही हैं। हर घंटे में नए खुलासे हो रहे हैं। जानते हैं शुरू से लेकर अब तक इस हेट स्टोरी में कब कब क्या-क्या हुआ।

बताते चले कि इंदौर पुलिस के मुताबिक सोनम रघुवंशी और राज कुशवाहा के बीच पांच महीने से प्रेम-प्रसंग चल रहा था। राज ने कबूल किया कि सोनम

से अफेयर चार से पांच महीने से था। पिता के हार्ट पेशेंट होने से सोनम लव मैरिज नहीं कर पा रही थी। पिता समाज में शादी करना चाहते थे इसलिए उसने राजा रघुवंशी से शादी को हां कर दी थी। दोनों परिवारों की मुलाकात समाज की परिचय पुस्तिका से हुई। यह बात भी सामने आई कि राजा रघुवंशी को सोनम पसंद नहीं थी। वो उससे बात नहीं करती थी। राजा शादी से पहले उसके साथ घूमने-फिरने और मिलने जाना चाहता था, लेकिन वो मना कर देती थी। सगाई के बाद जब राजा, सोनम से बात करना चाहता, तो वह समय नहीं देती थी। राजा ने अपनी मां उमा देवी से कहा था कि वो सोनम से शादी नहीं करना चाहता है। सोनम उसमें इंटरेस्ट नहीं ले रही है। उमा देवी ने बताया कि राजा की इस बात पर उन्होंने सोनम से बात की थी, लेकिन उसका कहना था कि ऑफिस के काम की वजह से फोन पर बात नहीं कर सकी। हालांकि, बाद में दोनों के बीच बात होती रही।

ज्ञात हो कि सोनम 24

शादी, हनीमून और हत्या कब क्या हुआ :-

- 11 मई : राजा रघुवंशी और सोनम की शादी हुई।
- 20 मई : दोनों हनीमून मनाने शिलांग गए।
- 22 मई : शिलांग में किराए पर एक्टिवा हायर की।
- 23 मई : किराए पर ली गई स्कूटी लावारिस मिली।
- 24 मई : दोनों के मोबाइल बंद आने लगे। संपर्क टूटा।
- 27 मई : सीएम मोहन यादव ने मेघालय के सीएम से बात की।
- 27 मई : सर्चिंग में दो बैग पहाड़ी पर एक्टिवा के पास मिले।
- 2 जून : राजा का शव गहरी खाई में मिला, हत्या की पुष्टि।
- 3 जून (पोस्टमार्टम): राजा की हत्या पेड़ काटने हथियार से की।
- 4 जून : राजा का शव इंदौर लाया गया।
- 5 जून : शिलांग के होटल से दोनों के वीडियो सामने आए।
- 7 जून : सीसीटीवी फुटेज में सोनम की संदिग्ध मिली।
- 9 जून : गाजीपुर के एक ढाबे से सोनम गिरफ्तार।
- 10 जून : सोनम, प्रेमी राज समेत 3 आरोपियों को शिलांग पुलिस मेघालय ले गई।
- 11 जून : आरोपियों को शिलांग की कोर्ट में पेश किया गया।
- 11 जून : सोनम ने मेघालय पुलिस के सामने की हत्या की बात कबूल।

साल की है। घर वाले उसकी जल्दी शादी कराना चाहते थे क्योंकि उन्हें राज कुशवाह और सोनम के अफेयर की भनक थी। सोनम की मां ने इस बात की पुष्टि की है। राज कुशवाह मूल रूप से बिहार का रहने वाला था और इंदौर में सोनम के पिता की दुकान में काम करता था। कुछ समय पहले तक वह उसी मोहल्ले में किराए के घर पर रह रहा था। उसने सोनम के घर वालों का विश्वास जीत लिया था। जब सोनम के घरवालों ने राज के साथ सोनम को देखा तो वो भड़क गए उन्होंने सोनम और राज को समझाया। इसके बाद सोनम की शादी के लिए रिश्ते ढूंढ़ना शुरू हो गया था। अपनी मर्जी के खिलाफ शादी करने के बाद सोनम ने महज 3 दिनों में ही अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या की ठान ली। इंदौर क्राइम ब्रांच के सूत्रों की मानें तो सोनम ने ठान रखा था कि उसे राजा को मारना ही है। मेघालय पुलिस ने जब इंदौर के पकड़े गए आरोपियों से शुरुआती तफ्तीश के दौरान पूछताछ की तभी ये जानकारी निकलकर सामने आई। राजा और सोनम की 11 मई को शादी हुई। दोनों के परिवार बहुत खुश थे। 20 मई को दोनों हनीमून मनाने शिलांग गए। ये टिकट सोनम ने खुद करवाए और मन नहीं होने के बावजूद राजा को मेघालय जाने के लिए मना लिया। हनीमून पर जाने के बावजूद सोनम राजा से दूर रही। सोनम ने राजा रघुवंशी से कहा था कि कामख्या मंदिर में दर्शन के बाद ही वे एक दूसरे के पास आएंगे। उसने मान रखने का बहाना बनाया और राजा को पहले कामख्या मंदिर और फिर मेघालय जाने के लिए मनाया। सोनम की जिद् के चलते ही राजा रघुवंशी मेघालय जाने के लिए राजी हुआ।

गौरतलब है कि शादी के बाद 15 मई को सोनम अपने मायके आ गई थी। यहीं रहकर उसने अपने पति राजा के मर्डर की पूरी प्लानिंग की। प्रेमी के दोस्त विशाल, आनंद, आकाश को पैसे का लालच देकर पति की सुपारी दी। पुलिस सूत्रों के मुताबिक अगर हत्या के पहले प्लान में कामयाबी नहीं मिलती तो सोनम के पास दूसरा प्लान भी था। उसने अपने प्रेमी राज से कहा था कि उसके दोस्त (विशाल, आनंद, आकाश) अगर राजा को नहीं मार पाएंगे तो वो फोटो लेने के बहाने से राजा को पहाड़ से नीचे धक्का दे देगी। सोनम और राज ने यह योजना तक बना ली थी कि उनके कारनामे की भनक अगर किसी को लगी तो वो समय रहते नेपाल भाग जाएंगे। सोनम ने अपने प्रेमी राज से कहा था-जब मैं विधवा हो जाऊंगी, तब मुझसे शादी कर

लेना। क्योंकि उसके पिता ऐसे तो राज से उसकी शादी नहीं होने देंगे। ऐसे में विधवा होने की स्थिति में उन्हें शादी करने के लिए हा करनी ही पड़ेगी। सोनम ने पहले ही तय कर लिया था कि शादी के बाद राजा को मारकर राज के साथ रहने लगेगी। सोनम ने राज से कहा था कि जब मैं विधवा हो जाऊंगी, फिर तुम मुझसे शादी कर लेना। तब मेरे परिवार वाले भी हमारी शादी के लिए मान जाएंगे। राजा के परिजनों के मुताबिक वह बहुत ही सज्जन लड़का था। जब शादी हुई तो सोनम ने भी सारी रश्मों में खुश होकर हिस्सा लिया। राजा के घर पर भी सोनम एक सप्ताह से अधिक समय तक रही, लेकिन कभी परिवार वालों को शक नहीं हुआ कि वो एक बड़ी साजिश का शिकार हो रहे हैं। सोनम ने हनीमून पर जाने से पहले राजा के अकाउंट से बड़ी धनराशि निकलवा ली थी, जिसका उपयोग बाद में कांट्रेक्ट किलर को देने में किया गया। बता दें कि हत्या के पहले सोनम ने शिलांग में राजा को कॉफी पिलाने की कोशिश की। लेकिन उसने नहीं पी। यह बात राजा ने अपनी मां से भी शेयर की थी। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं हो सका कि उस काफी में जहर था या वो नॉर्मल कॉफी थी। लेकिन यह तय था कि राजा, सोनम पर पूरा भरोसा करने लगा था और उसे यह पता नहीं चल सका कि वो उसे मारने वाली है। आरोपियों ने पुलिस को बताया कि 23 मई की दोपहर 1.30 बजे शिलांग के पर्यटन क्षेत्र में राजा की हत्या की गई। 23 मई को सोनम ने अपरा एकादशी व्रत किया था। यह बात उसने फोन पर अपनी सास को भी बताई थी। एक धारदार हथियार से उसकी हत्या की गई।

पहले आरोपी तैयार नहीं हुए तो सोनम ने राजा के पर्स से 15 हजार रुपए निकाल कर दिए और लाखों रुपए और देने की बात कहकर राजा को हथियार से कटवा दिया। राजा की हत्या सोनम की आंखों के सामने हुई। यहां तक कि उसे खाई में फेंकने के लिए खुद सोनम ने धक्का दिया। इंदौर के एडिशनल डीसीपी राजेश दंडौतिया के मुताबिक शिलांग व इंदौर पुलिस की संयुक्त पूछताछ में ऐसे कई खुलासे हुए हैं। आरोपियों ने पुलिस को बताया कि 23 मई की दोपहर 1.30 बजे राजा की हत्या की गई। 23 मई को सोनम ने अपरा एकादशी व्रत किया था। यह बात उसने फोन पर अपनी सास को भी बताई थी। यह रिकॉर्डिंग वायरल है। वही राजा की हत्या के बाद सोनम गायब हो गई। उसे मृत मानकर सर्चिंग जारी रही। लेकिन वो मेघालय से बिहार होते हुए यूपी के गाजीपुर पहुंच गई। कहा जा रहा है कि वो इस बीच इंदौर भी आई और बनारस भी गई। वहां से गाजीपुर पहुंची और एक ढाबे पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। इधर कॉल डिटेल के आधार पर शिलांग और इंदौर पुलिस ने राज कुशवाह और उसके दोस्त विशाल, आनंद और आकाश को गिरफ्तार किया। हालांकि सोनम का प्रेमी राज शिलांग नहीं गया, वो इंदौर से ही सोनम और हत्यारों के संपर्क में रहा और उन्हें डायरेक्ट करता रहा। अब सभी आरोपी पुलिस गिरफ्त में हैं। सनद् रहे कि देश के एक प्रतिष्ठित मीडिया हाउस ने अपनी रिपोर्ट में दावा किया है कि सोनम का हाल ही में प्रग्नेंसी टेस्ट किया गया है। हालांकि, डाक्टरों का कहना है कि पहली बार में टेस्ट के रिजल्ट सटीक नहीं आते। ऐसे में सोनम का अल्ट्रासाउंड होगा। लेकिन यदि सोनम प्रेग्नेंट हुई तो राजा के डीएनए से भी उसका मिलान हो सकता है। ऐसा हुआ तो इस बात की पुष्टि हो सकती है कि सोनम की नजर राजा रघुवंशी की संपत्ति पर भी थी। दरअसल, राजा इंदौर के प्रतिष्ठित ट्रांसपोर्ट कारोबारी का बेटा था। परिवार के नाम पर करोड़ों रूपये की संपित्त है। ऐसे में सोनम चाहती थी कि राजा के मर्डर को वह एक दुर्घटना साबित कर देगी और परिवार की बहू होने के नाते संपत्ति पर भी अधिकर जता सकेगी।

बहरहाल, मानवीय संबंध किसी भी समाज की नींव होते हैं। प्रेम, विश्वास, त्याग और समझदारी के धागों से बुने ये संबंध व्यक्ति के जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। किंतु, वर्तमान समय में इन संबंधों में एक भयावह क्षरण देखने को मिल रहा है। हाल ही में घटित एक घटना, जो इंदौर निवासी राजा रघुवंशी की नवविवाहित पत्नी द्वारा मेघालय में हनीमून के दौरान अपने प्रेमी से मिलकर हत्या हमारे समाज में गहराती संवेदनहीनता और रिश्तों की नश्वरता का एक वीभत्स प्रतीक है। यह घटना हमें इस बात पर चिंतन करने को मजबूर करती है कि आखिर क्यों आज मानवीय संवेदनाएं इतनी खोखली हो गई हैं और रिश्तों का ताना-बाना बिखरता जा रहा है। आज की उपभोक्तावादी संस्कृति ने व्यक्ति को अत्यधिक आत्म-केंद्रित बना दिया है। 'मैं' और 'मेरा' की भावना इतनी प्रबल हो गई है कि संबंध भी उपयोगिता के तराजू पर तौले जाने लगे हैं। जब तक संबंध व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति करते हैं, तब तक वे बने रहते हैं, अन्यथा उन्हें त्यागने में कोई हिचक नहीं होती। प्रेम और त्याग के बजाय, 'मुझे क्या मिलेगा' का प्रश्न प्रमुख हो गया है। सोशल मीडिया और वर्चुअल रिश्ते वास्तविक मानवीय संबंधों की गहराई को कम कर रहे हैं। स्क्रीन पर बनी दुनिया में भावनाओं की अभिव्यक्ति उतनी सच्ची और टिकाऊ नहीं होती। सतही संपर्क और त्वरित संतुष्टि की चाह ने धैर्य और प्रतिबद्धता जैसे गुणों को कमजोर किया है, जो किसी भी गहरे संबंध के लिए आवश्यक हैं। परिवार और समाज में नैतिक शिक्षा का अभाव संवेदनाओं के क्षरण का एक बड़ा कारण है। सहानुभूति, करुणा, ईमानदारी और वफादारी जैसे मूल्य धीरे-धीरे पृष्ठभूमि में जा रहे हैं। जब नैतिक मापदंड कमजोर होते हैं, तो व्यक्ति अपने तात्कालिक सुख और लाभ के लिए किसी भी हद तक जाने से नहीं हिचकता। वर्तमान पीढ़ी में हर चीज तुरंत पाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। संबंधों में भी वे धैर्य और संघर्ष करने को तैयार नहीं हैं। छोटी सी असहमति या समस्या

आते ही, संबंध तोड़ना या उससे बाहर निकलने का रास्ता ढूंढना आसान लगता है, बजाय इसके कि उसे सुलझाया जाए। आधुनिक जीवन की तेज गति, करियर का दबाव और सामाजिक अपेक्षाएं व्यक्ति को अत्यधिक तनावग्रस्त कर रही हैं। ऐसे में संबंधों को निभाने के लिए आवश्यक समय और भावनात्मक ऊर्जा का अभाव होता है। कई व्यक्तियों में अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता कम होती है। वे दूसरों की भावनाओं को भी ठीक से नहीं समझ पाते, जिससे गलतफहमियां बढ़ती हैंऔर संबंधों में दरार आती है।

गौरतलब है कि राजा रघुवंशी की इस घटना के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान पीढ़ी की सोच और मनोविज्ञान का विश्लेषण जरूरी है। राजा रघुवंशी की हत्या की घटना वर्तमान पीढ़ी के एक विशेष वर्ग के मनोविज्ञान पर कई सवाल खड़े करती है। एक महीने के भीतर ही इस तरह की घटना का घटित होना दिखाता है कि कुछ लोगों के लिए विवाह जैसी पवित्र संस्था भी केवल एक समझौता मात्र है, जिसमें प्रतिबद्धता का अभाव है। रिश्तों को तुरंत तोड़ने और नए संबंध बनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है। वही प्रेमी से मिलकर अपने ही पति की हत्या करवाना दर्शाता है कि नैतिक मूल्यों का कितना गहरा क्षय हो चुका है। भावनाओं पर नियंत्रण का अभाव, तात्कालिक आवेगों पर कार्य करना और परिणामों की परवाह न करना, ऐसी घटनाओं को जन्म देता है। बाहरी तौर पर मधुर दिखने वाले संबंध भीतर से खोखले हो सकते हैं, जहां व्यक्ति दोहरा जीवन जी रहा होता है। यह मनोविज्ञान विश्वासघात और छल को जन्म देता है, जो समाज के लिए अत्यंत घातक है। कुछ युवा संबंधों को एक प्रयोग की तरह देखते हैं। यदि एक संबंध सफल नहीं होता, तो तुरंत दूसरे की तलाश शुरू कर देते हैं, बिना यह समझे कि हर संबंध को सींचने और सहेजने की आवश्यकता होती है। वही इस प्रकार की क्रूर घटना बताती है कि कैसे कुछ व्यक्तियों में हिंसा को समस्या सुलझाने के एक तरीके के रूप में देखा जाने लगा है। संवेदनशीलता और सहानुभूति की जगह क्रूरता ने ले ली है। संबंधों का क्षरण एक गंभीर सामाजिक चुनौती है, जो हमारे मानवीय ताने–बाने को कमजोर कर रहा है। ऐसी घटनाओं को केवल आपराधिक कृत्य मानकर खारिज नहीं किया जा सकता, बल्कि यह हमारे समाज की गहरी मनोवैज्ञानिक और नैतिक विकृतियों का प्रतिबिंब हैं।

बहरहाल, इस संकट से उबरने के लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे। परिवार, स्कूल और समाज में नैतिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी। युवाओं में अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने, प्रबंधित करने और व्यक्त करने की क्षमता विकसित करनी होगी। डिजिटल दुनिया से परे वास्तविक मानवीय संबंधों के महत्व को समझना और उन्हें प्राथमिकता देना आवश्यक है। संबंधों में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना धैर्य और समझदारी से करना सीखना होगा, न कि तुरंत पलायन करना। मानसिक स्वास्थ्य और संबंध संबंधी समस्याओं पर खुलकर बात करने और पेशेवर सहायता लेने के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाना होगा। जब तक हम इन मूल कारणों पर ध्यान नहीं देंगे, तब तक मानवीय संवेदनाओं और रिश्तों का यह क्षरण जारी रहेगा और ऐसी दर्दनाक घटनाएं हमें बार–बार शर्मसार करती रहेंगी। एक स्वस्थ और मजबूत समाज के लिए, हमें अपने संबंधों को पुनः परिभाषित करना होगा और उनमें प्रेम, विश्वास और त्याग की जड़ों को मजबूत करना होगा।

Didi's time is up, BJP will come to power in Bengal in 2026: Amit Shah

Union Home Minister Amit Shah on Sunday launched a sharp offensive against West Bengal's Mamata Banerjee government, asserting that in a violence-free election, the people of the state would ensure the Trinamool Congress's defeat and the BJP will form the government in 2026.

Three days after Prime Minister Narendra Modi declared in North Bengal's Alipurduars that West Bengal needs freedom from 'Five Sankats (problems)' - politics, violence, appeasement, riots, and corruption - Shah told BJP workers here "In Bengal, during the elections and after Didi's (Chief Minister Banerjee) victory, hundreds of BJP workers were killed. Didi, how long will you protect them?" "I'm telling you — your (government's) time is up. In 2026, the BJP will form the government," Shah said in his address to the party workers at the Netaji Indoor stadium here. "I assure all our Mandal office-bearers that once the Trinamool government is ousted, we will dig out the culprits from beneath the ground if necessary and ensure they are punished for murdering our workers. Violence has no place in a democracy. Didi, if you have the courage, conduct an election without violence and see what happens. The people of Bengal will make sure you forfeit your deposit," he said.

Countering Mamata Banerjee's allegation that Prime Minister Narendra Modi is selling 'Operation Sindoor' for political traction, the Union Home Minister said, "A few days ago in Pahalgam, terrorists sent by Pakistan brutally killed innocent civilians after asking their religion in front of their families. You tell me — should those terrorists sent by Pakistan not be punished? Was Modi ji not right to carry out Operation Sindoor?"

"This is what's causing pain in Didi's stomach. When people from Bengal were being killed there, it would have been right if Didi had expressed this pain. But she said nothing then. Now, when Modi ji comes here after Operation Sindoor, a cheap political comment is made opposing the operation. You were not just opposing Operation Sindoor — you were toying with the emotions of crores of mothers and sisters of this country," Shah said. Shah

appealed to the "maternal power of Bengal" to make Banerjee understand the true value of indoor (vermilion) in the upcoming election for daring to question Operation Sindoor. "Mothers and sisters, show her what it truly means to insult sindoor!" he added. Shah, who arrived at Netaji Indoor Stadium at 2.16 pm along with Leader of the Opposition Suvendu Adhikari and BJP state president Sukanta Majumdar, opened his speech by paying 0homage to Rabindranath Tagore, Swami Vivekananda, Ramakrishna Paramhansa and Netaji Subhas Chandra Bose, He also paid tributes to Syama Prasad Mookerjee - the founder of BJP's precursor Bharatiya Jana Sangh.

"This land has guided India for generations. Be it knowledge, science, spirituality, or the freedom struggle — Bengal has always led the way. For many years, Bengal was ruled by the communists. Then came Mamata Didi with her slogan of 'Ma-Mati-Manush' (Mother, Motherland, and People). "Today, she has turned this great land of Bengal into a hub of infiltration, corruption, atrocities on women, crime, bomb blasts, and mistreatment of Hindus," he said. Shah's fierce criticism of Mamata Banerjee and the Trinamool Congress, close on the heels of PM Modi denouncing the state government, is a clear indication that the BJP top leadership has begun sounding the bugle for the 2026 assembly elections in the state.

मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन को एसीबी का नोटिस

दिल्ली सरकार की भ्रष्टाचार निरोधक शाखा (ACB) ने सरकारी विद्यालयों में कक्षाओं के निर्माण में कथित भ्रष्टाचार को लेकर आम आदमी पार्टी के नेताओं मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन को तलब किया है। सत्येंद्र जैन को 6 जून को एसीबी के समक्ष पेश होने को कहा गया है जबकि सिसोदिया को 9 जून को पूछताछ के लिए बुलाया गया है। दिल्ली सरकार के विद्यालयों में 12,000 से अधिक कक्षाओं या अर्द्ध-स्थायी संरचनाओं के निर्माण में 2,000 करोड़ रुपए की वित्तीय अनियमितताओं के आरोपों के आधार पर 30 अप्रैल को एसीबी द्वारा एक प्राथमिकी दर्ज किए जाने

के बाद यह समन जारी किया गया है। अधिकारियों ने बताया कि राष्ट्रीय राजधानी में पूर्ववर्ती 'आप' सरकार में वित्त एवं शिक्षा विभाग संभालने वाले सिसोदिया और उस समय लोक निर्माण विभाग एवं अन्य मंत्रालयों के प्रभारी रहे जैन से केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) द्वारा चिह्नित कथित विसंगतियों के संबंध में पूछताछ की जा रही है। संयुक्त पुलिस आयुक्त (एसीबी) मधुर वर्मा ने कहा कि सीवीसी के मुख्य तकनीकी परीक्षक की रिपोर्ट ने परियोजना में कई विसंगतियों की ओर इशारा किया है। रिपोर्ट पर कथित तौर पर लगभग तीन साल तक कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धारा 17-ए के तहत सक्षम प्राधिकारी से मंजूरी मिलने के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई थी। भाजपा के नेताओं कपिल मिश्रा, हरीश खुराना और नीलकांत बख्शी ने 2019 में एसीबी में शिकायत दर्ज कराई थी, जिसमें दिल्ली के तीन क्षेत्रों में कक्षाओं के निर्माण में गंभीर वित्तीय अनियमितताओं का आरोप लगाया गया था। शिकायत के अनुसार, प्रति कक्षा औसत लागत 24.86 लाख रुपये बताई गई थी – जो समान संरचनाओं के लिए अनुमानित पांच लाख रुपये की लागत से काफी अधिक थी।

पहले रेप फिर हत्या, सूटकेस में मिली 9 साल की मासूम

दिल्ली में फिर से दिल दहला देने वाली दरिंदगी सामने आई है। इस बार एक 9 साल की मासूम के साथ रेप, फिर हत्या और शव को सूटकेस में बंद करने की हैरान करने वाली खबर सामने आई है। अब तक जो सामने आया है उसमें कहा कहा जा रहा है कि बच्ची के साथ पहले रेप किया गया। इसके बाद बेरहमी से उसकी हत्या कर दी गई। पुलिस की जांच में पता चला है कि जिन आरोपियों पर पीड़ित परिवार को शक है वो इस घटना को अंजाम देने के बाद से ही फरार हैं। उनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस छापेमारी कर रही है। मामला दिल्ली के नेहरू विहार इलाके का है। जहां 9 साल की बच्ची से रेप और बाद में उसकी हत्या करने का एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। बच्ची का शव एक सूटकेस में मिला है। पीड़ित परिवार का आरोप है कि इस घटना को कुछ स्थानीय लड़कों ने ही अंजाम दिया है। पीड़ित परिवार की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ पॉस्को एक्ट के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने बच्ची के शव को कब्जे में लेकर उसे पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

☞ **पिता लेकर पहुंचे थे अस्पताल :** पुलिस के अनुसार मामले की जानकारी मिलने के बाद जब स्थानीय

पुलिस मौके पर पहुंची तो उन्हें पता चला कि पीड़िता के पिता उसे बेहोशी की हालत में उठाकर जेपीसी अस्पताल गए हैं। इसके बाद पुलिस की टीम अस्पताल पहुंची। अस्पताल पहुंचने पर बताया गया कि बच्ची की मौत अस्पताल पहुंचने से पहले ही हो गई थी।

☞ **चेहरे और शरीर पर हैं चोट के निशान :** पुलिस के अनुसार शुरुआती जांच में पता चला है कि मृतक बच्ची के चेहरे और शरीर के अन्य अंगों पर चोट के निशान हैं। ऐसे में इस बात का अंदेशा है कि आरोपियों ने उसकी हत्या करने से पहले उसके साथ मारपीट भी की होगी। हालांकि, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।

मोदी सरकार के 11 साल में कितने कमाल

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 साल के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि उनके नेतृत्व में सरकार द्वारा किए गए कार्यों को 'स्वर्ण अक्षरों' में लिखा जाना चाहिए। नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश की राजनीतिक संस्कृति को बदल दिया और एक जिम्मेदार और जवाबदेह सरकार प्रदान करके सुशासन की राजनीति शुरू की, जबकि कांग्रेस के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती संप्रग सरकार 'भ्रष्टाचार, घोटाले और तुष्टीकरण' की राजनीति के लिए जानी जाती थी। यहां भाजपा मुख्यालय में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश की राजनीतिक संस्कृति को बदल दिया और एक जिम्मेदार और जवाबदेह सरकार प्रदान करके सुशासन की राजनीति शुरू की, जबकि कांग्रेस के नेतृत्व वाली पूर्ववर्ती संप्रग सरकार 'भ्रष्टाचार, घोटाले और तुष्टीकरण' की राजनीति के लिए जानी जाती थी। उन्होंने कहा कि पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार द्वारा किए गए कार्य असाधारण हैं और उन्हें स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाना चाहिए। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने एक उत्तरदायी और मजबूत सरकार प्रदान की। नड्डा ने मोदी सरकार द्वारा लिए गए साहसिक निर्णयों में अनुच्छेद 370 को निरस्त करना, तीन तलाक को खत्म करना, वक्फ संशोधन, नोटबंदी, महिला आरक्षण विधेयक का हवाला दिया। प्रधानमंत्री मोदी ने 9 जून 2024 को तीसरे कार्यकाल के लिए शपथ ली थी। मोदी सरकार अपने तीसरे कार्यकाल की पहली और कुल मिलाकर 11वीं वर्षगांठ मना रही है। उन्होंने केंद्र सरकार की विदेश नीति और ऑपरेशन सिंदूर की आलोचनाओं पर विपक्ष के नेता राहुल गांधी को आड़े हाथ लेते हुए कहा, वह गैर-जिम्मेदार विपक्ष की भूमिका निभा रहे हैं, भगवान उन्हें सद्बुद्धि दे। नड्डा ने सरकार के स्थायित्व के सवाल पर कहा कि राजग सरकार यह कार्यकाल तो पूरा करेगी, अगला कार्यकाल भी पूरा करेगी।

गौरतलब है कि वही कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार के 11 साल में कोई जवाबदेही नहीं बल्कि सिर्फ प्रचार हुआ है। उन्होंने कहा कि केंद्र वर्तमान के बारे में बात करना छोड़ अब 2047 के सपने बेच रहा है। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में भीड़भाड़ वाली लोकल ट्रेन

से गिरकर कम से कम 4 यात्रियों की मौत और 6 के घायल होने की घटना के बाद राहुल गांधी ने सरकार पर यह हमला किया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा कि जब मोदी सरकार 11 साल की 'सेवा' का जश्न मना रही है, तब देश की हकीकत मुंबई से आ रही दर्दनाक खबर में दिखती है- ट्रेन से गिरकर कई लोगों की मौत। उन्होंने कहा कि भारतीय रेल करोड़ों की जिंदगी की रीढ़ है, लेकिन आज यह असुरक्षा, भीड़ और अव्यवस्था की प्रतीक बन चुकी है। वही कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि मोदी सरकार के 11 साल में न जवाबदेही, न बदलाव, सिर्फ प्रचार हुआ है। सरकार 2025 पर बात करना छोड़ अब 2047 के सपने बेच रही है। उन्होंने कहा कि देश आज क्या झेल रहा है, ये कौन देखेगा? मैं मृतकों के परिवारों के प्रति गहरी संवेदना प्रकट करता हूं और घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह रेल दुर्घटना दिवा और कोपर रेलवे स्टेशन के बीच उस समय घटी, जब ट्रेन कसारा की ओर जा रही थी। रेलवे अधिकारियों ने मृतकों की संख्या की पुष्टि किए बिना बताया कि घटना संभवत: भीड़भाड़ वाली 2 ट्रेनों के पायदान से लटके यात्रियों और उनके बैग के एक-दूसरे से टकराने के कारण हुई, क्योंकि ट्रेन विपरीत दिशाओं से गुजर रही थीं।

Assam govt issues shoot-at-sight orders at night in Dhubri as communal tension continues after cow head found in temple

Rhe Law and order situation of Dhubri has forced the government to issue shoot-at-sight orders at night, Assam Chief Minister Himanta Biswa Sarma said on Friday this while interacting with newsmen, and added that a communal force is active in Dhubri to disrupt peace. He said that the government has issued shoot at sight orders in Dhubri. The Chief Minister further added that the Rapid Action Force and CRPF will be rushed to Dhubri to contain the situation.

"The law and order situation was a little challenging here for the last week. After the Eid al-Zuha, somebody kept a severed head of a cow in the Hanuman temple. Peace committees are formed involving Hindus and Muslims. However, it was repeated the next day," he said while adding that there were also cases of stone pelting at night, he said. The chief minister further added that a Bangladesh-backed organization, Nobin Bangla has also done posterering in Dhubri demanding inclusion of Dhubri district in Bangladesh.

He said that these posters indicate that a communal force backed by Bangladesh is active in Dhubri, and they are working to destabilize Dhubri. On June 9, the Dhubri District Administration has to impose a prohibition order under BNSS 2023 in Dhubri town following the likelihood of breach of peace and public tranquility in areas falling under the Dhubri police station due to communal tension. Tension gripped Dhubri town following the recovery of banned meat, including a severed cow head, from the premises of a Hanuman temple in the town's Ward no 3. This triggered widespread protests in the town, and the locals demanded immediate action against the culprits. Although the police and senior district administration officials reached the spot immediately, they faced resistance from the locals, forcing them to impose restrictions. Although the restrictions under BNSS were lifted the next day, tension continued in the district.

Codename Madame N कौन है ज्योति मल्होत्रा का ISI एजेंट के साथ पॉडकास्ट

देश की गद्दार ज्योति मल्होत्रा को लेकर नए-नए खुलासे सामने आ रहे हैं। मीडिया खबरों के मुताबिक यह बात सामने आई है कि ज्योति मल्होत्रा ने यूट्यूबर्स के जरिए जासूसी नेटवर्क बनाया था। इसी केस में यह भी खुलासा हुआ है कि ज्योति ने आईएसआई एजेंट के साथ पॉडकास्ट किया था। पूरे मामले में मैडम एन का कोडनेम भी सामने आया है।

☞ **पूर्व सब इंस्पेक्टर भी एजेंसियों के रडार पर :-** ज्योति मल्होत्रा केस में नई-नई बातें सामने आ रही हैं। पाकिस्तान के पंजाब पुलिस में एक पूर्व सब-इंस्पेक्टर और अब एक यूट्यूबर नासिर ढिल्लों, भारत में जासूसी गिरोह का मास्टरमाइंड होने और खालिस्तानी प्रचार को बढ़ावा देने के लिए गहन जांच के दायरे में आ गए हैं। पूर्व पाकिस्तानी पुलिस अधिकारी एक व्यापक जासूसी नेटवर्क में शामिल होने और आईएसआई के लिए लोगों की भर्ती करने के लिए रडार पर आ गया है।

☞ **पॉडकास्ट से बड़ा खुलासा :-** ज्योति मल्होत्रा की गिरफ्तारी से पता चला कि यूट्यूबर्स के जरिए पाकिस्तान ने भारत में जासूसी का नेटवर्क बनाया था। इसी जासूसी नेटवर्क पर एक और बड़ा खुलासा हुआ है। नए खुलासे में पाकिस्तानी एजेंट है, जिसका कोडनेम मैडम एन है। जांच एजेंसियों का मानना है कि सैकड़ों पूर्व पाकिस्तानी पुलिसकर्मी इस रैकेट में शामिल हो सकते हैं। पंजाब से जसबीर की गिरफ्तारी एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम था, क्योंकि उसने खुलासा किया कि नासिर ढिल्लों ने उसे आईएसआई एजेंट से मिलवाया था और लाहौर में एजेंट के साथ उसकी मुलाकात तय की थी। यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा का एक पॉडकास्ट सामने आया है। इस वीडियो में वह पाकिस्तान पुलिस के रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर और ISI एजेंट नासिर ढिल्लों के साथ बातचीत कर रही है। ज्योति मल्होत्रा के संपर्क में भी था, जिसके साथ उसने पॉडकास्ट भी किया था। मीडिया खबरों के मुताबिक जांच में यह भी सामने आया कि नासिर ढिल्लों भारतीय यूट्यूबर्स को आईएसआई के गुर्गों से मिलवाने के बाद उन्हें जासूसी का काम देता था।

☞ **ज्यादा से ज्यादा लोग पाकिस्तान घूमने जाएं :-** मीडिया खबरों के मुताबिक नासिर ने यह वीडियो ऑपरेशन सिंदूर (7 मई) से 24 दिन पहले, यानी 14 अप्रैल 2025 को अपने यूट्यूब चौनल पर अपलोड किया था। इस पॉडकास्ट में ज्योति अपने हिसार स्थित घर से ही वर्चुअली जुड़ी थी। 25 मिनट 47 सेकेंड के इस वीडियो में ज्योति कहती है- भारत के लोगों के मन में पाकिस्तान की जो छवि है, उसे बदलने का मौका मुझे मिल रहा है। मैं चाहती हूं कि ज्यादा से ज्यादा हिंदू आबादी पाकिस्तान घूमने जाए। इसके लिए मैं वीडियो पर काम कर रही हूं। अन्य सबूत नासिर ढिल्लों के दानिश नामक एक अन्य व्यक्ति के साथ संबंध की ओर भी इशारा करते हैं, जिससे इस जासूसी नेटवर्क का दायरा और गहरा होता है। इस खुलासे से पता चलता है कि कैसे ढिल्लों जैसे पूर्व पाकिस्तानी पुलिस कर्मियों का इस्तेमाल सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और गुप्त अभियानों के माध्यम से आईएसआई के प्रभाव को बढ़ाने के लिए किया जा रहा था।

Bengaluru Rapido driver detained for slapping woman after 'Go back to your country' remark; CCTV reveals she hit him first

A shocking incident involving a Rapido bike taxi driver and a woman commuter has sparked debate across the country. The driver was detained after allegedly slapping a woman and telling her to "go back to your country" during an argument in Bengaluru. However, newly surfaced CCTV footage has added a twist to the case—showing that the woman allegedly hit him first.

The incident reportedly occurred in Bengaluru's Jayanagar area. The woman, who reportedly works at a jewellery store, booked a Rapido ride. According to reports, an argument broke out between the two after the woman confronted the Rapido driver over rash driving after getting off mid-ride. During the verbal exchange, the woman accused the driver of slapping her and making a racist comment: "Go back to your country." A viral video showed the driver slapping her, which threw on onto the ground. Following her complaint, the Rapido driver was detained by local police and questioned under relevant sections.

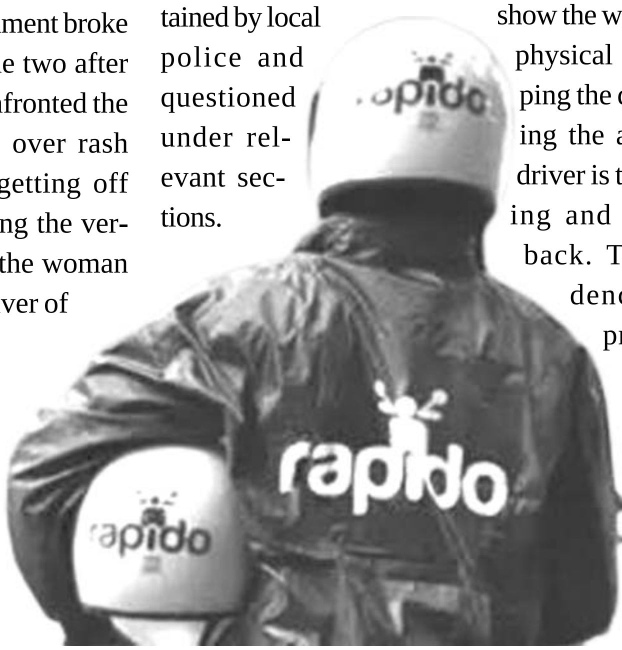

However, a CCTV footage from a nearby building has now emerged and appears to show the woman initiating physical contact—slapping the driver first during the argument. The driver is then seen reacting and slapping her back. This new evidence has prompted a review of the case, and police are reportedly verifying the full sequence of events.

एयर इंडिया का विमान दुर्घटनाग्रस्त

पूर्व सीएम विजय रूपाणी का भी निधन

● **अमित कुमार**

ब्रिटेन लंदन जा रहा एयर इंडिया का एक विमान 12 जून को अहमदाबाद हवाई अड्डे से उड़ान भरने के कुछ ही क्षणों बाद यहां एक आवासीय इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में चालक दल के 10 सदस्यों सहित 242 लोग सवार थे। इस हादसे में विमान में सवार सभी लोगों की मौत हो गई। विमान में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी भी सवार थे। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, ब्रिटेन के पीएम स्टार्मर ने भी हादसे पर दुख व्यक्त किया है। विमान में ब्रिटिश नागरिक भी सवार थे। जहां विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ, वहां भी कई लोगों

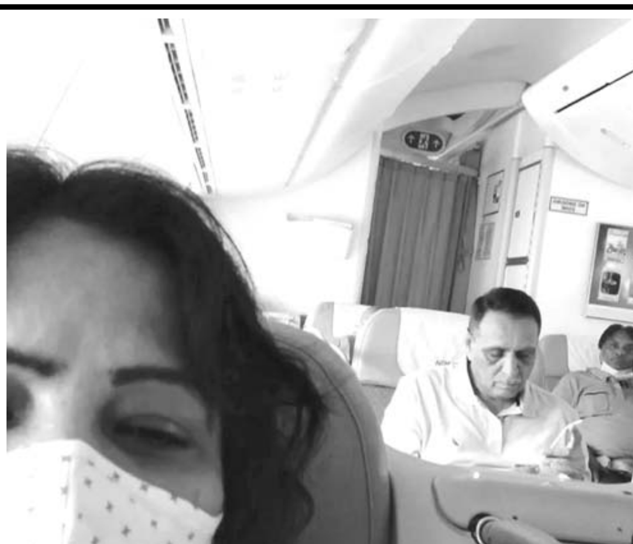

मारे गये। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर विमान (एआई171) को उड़ान भरने के तुरंत बाद एकदम तेजी से नीचे आते देखा गया और यह अपराह्न करीब दो बजे वल्लभभाई पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के नजदीक मेघाणी नगर इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटना के तुरंत बाद, इलाके में काले धुएं का एक बड़ा गुबार उठता देखा गया। इसके बाद शहर में उड़ानों का परिचालन अस्थायी रूप से स्थगित कर दिया गया। एअर इंडिया के अनुसार, अहमदाबाद से लंदन के गैटविक जा रही उड़ान में 169 भारतीय, 53 ब्रिटिश, एक कनाडाई और 7 पुर्तगाली नागरिक सवार थे। सरकारी सूत्रों ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन

नायडू से बात की तथा उन्हें अहमदाबाद जाकर, दुर्घटना से प्रभावित लोगों को तत्काल यथासंभव सहायता उपलब्ध कराने को कहा है। बता दे कि विमान के 'ब्लैक बॉक्स' (फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर और कॉकपिट वॉइस रिकॉर्डर) की भी तलाश जारी है, ताकि यह पता चल सके कि अंतिम क्षणों में क्या हुआ था। बोइंग 787 ड्रीमलाइनर विमान को उड़ान भरने के तुरंत बाद एकदम तेजी से नीचे आया और यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। दुर्घटनास्थल पर काले धुएं का गुबार उठता देखा गया। यह विमान 11 साल पुराना था। लंबी यात्रा के लिए ईंधन टंकी पूरी तरह से भरी रहने का उल्लेख करते हुए विमानन विशेषज्ञों ने बताया कि विमान नीचे गिरने से पहले सिर्फ 600 से 800 फुट की ऊंचाई पर गया था। उन्होंने कहा कि उपलब्ध वीडियो फुटेज के अनुसार, दोनों इंजन का पूरी क्षमता से काम न करना या पक्षी का टकराना दुर्घटना के संभावित कारणों में से एक हो सकता है। टेलीविजन पर प्रसारित फुटेज में देखा जा सकता है कि विमान उड़ान भरने के तुरंत बाद नीचे की ओर आया, जबकि उसका लैंडिंग गियर (पहिया) अब भी बाहर निकला हुआ था। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) के एक बयान के अनुसार, ''विमान ने अहमदाबाद से अपराह्न 1:39 बजे रनवे 23 से उड़ान भरी। इसने एटीसी (हवाई यातायात नियंत्रण) को 'मेडे' (आपातकालीन संदेश देने के लिए) कॉल किया, लेकिन उसके बाद एटीसी द्वारा की गई कॉल का विमान से कोई जवाब नहीं मिला। बचावकर्मियों ने मलबे में, जीवित बचे लोगों को खोजने और घायलों को बाहर निकालने के लिए काफी जद्दोजहद की, जिनमें से कई गंभीर रूप से झुलसे हुए थे। दुर्घटनास्थल के वीडियो में झुलसे हुए शवों को बाहर निकालते हुए तथा घायलों को, जिनमें से कई झुलसे हुए थे, नजदीक स्थित सिविल अस्पताल ले जाते देखा जा सकता है। अहमदाबाद में प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद इसमें लगी आग इतनी भीषण थी कि उसकी वजह से कई बहुमंजिला इमारतें बुरी तरह से प्रभावित हुईं, पेड़ झुलस गए और कारें क्षतिग्रस्त हो गईं। एक वीडियो में विमान का पिछला हिस्सा इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल से टकराता हुआ देखा जा सकता है, जो नर्सों और चिकित्सकों के छात्रावास का भोजन कक्ष प्रतीत हो रहा है। एक प्रत्यक्षदर्शी, जयेश पटेल ने बताया कि जब उन्होंने तेज आवाज सुनी और धुआं उठता देखा, तब वह लगभग 500-600 मीटर की दूरी पर थे।

उन्होंने एक टीवी चैनल से कहा कि मैंने ऐसा कुछ पहले कभी नहीं देखा था। उन्होंने बताया कि हजारों लोग सड़क पर आ गए। आपातकालीन प्रतिक्रिया दल तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और उन्होंने तत्काल बचाव, निकासी और अग्निशमन अभियान शुरू कर दिया। बृहस्पतिवार को हुई विमान दुर्घटना, गुजरात के इस शहर में दूसरी हवाई दुर्घटना है। 19 अक्टूबर 1988 को इंडियन एयरलाइंस का एक विमान अहमदाबाद हवाई अड्डे पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें 130 लोग मारे गए थे।

गौरतलब है कि क्षण भर में विमान आग के गोले में तब्दील हो जाए और ऐसे में किसी व्यक्ति की जान बच जाए तो इसे ईश्वर का चमत्कार ही कहा जाएगा। इस हादसे में विमान में सवार एक व्यक्ति की जान बच गई, जबकि दूसरा विमान में सवार नहीं हो पाया, इसलिए उसकी जिंदगी बच गई। दोनों ही मामले किसी करिश्मे से कम नहीं है। ऐसे में यही कहा जा सकता है-'जाको राखै साइयां...'। पहला यात्री रमेश विश्वास तो विमान में ही मौजूद था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक रमेश विश्वास कुमार ने बताया कि टेक ऑफ होने के 30 सेकेंड के बाद प्लेन क्रैश हो गया था। एक वीडियो में रमेश चलता हुआ दिखाई दे रहा है। हालांकि उसके चेहरे पर चोटें

आई हैं। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। रमेश का सीट नंबर 11ए था। रमेश के पास इकोनॉमी क्लास का टिकट था। हालांकि रमेश की कहानी जिसने भी सुनी, उसने दांतों तले अंगुली दबा ली। इस विमान से जुड़ा एक और करिश्मा हुआ। सावजी भाई टिंबाडिया इसी विमान से लंदन जाने वाले थे, लेकिन उन्होंने ऐन मौके पर अपना विचार बदल दिया और वे विमान में सवार नहीं हुए। एबीपी न्यूज से बात करते हुए टिंबाड़िया ने कहा कि मैं स्वामीनाथ भगवान का भक्त हूं और उन्हीं की कृपा से बचा हूं। साबजी भाई ने बताया कि मुझे अंदर से महसूस हुआ कि आज नहीं जाना है। हालांकि मेरी टिकट बुक थी। टिकट का नंबर ए1 है। सनद् रहे कि दोपहर को उड़ान भरने के तत्काल बाद दुर्घटनाग्रस्त हुए एयर इंडिया के 'बोइंग 787 ड्रीमलाइनर' विमान (एआई 171) का मलबा बीजे मेडिकल कॉलेज परिसर में चिकित्सकों के छात्रावास व आवासीय क्वार्टरों के आसपास बिखरा हुआ है। गुजरात के इतिहास में सबसे भीषण दुर्घटनाओं में से एक इस विमान हादसे के बाद वायरल हुए वीडियो में मलबे में झुलसे हुए शव भी दिखाई दे रहे हैं। दुर्घटनास्थल के आसपास का इलाका घनी आबादी वाला है। विमान ने अपराह्न एक बजकर 39 मिनट पर उड़ान भरी और इसके तुरंत बाद ही यह बीजे मेडिकल कॉलेज एवं सदर अस्पताल के चिकित्सकों एवं कर्मचारियों के छात्रावास तथा आवासीय क्वार्टरों के ऊपर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान का एक हिस्सा पांच मंजिला इमारत से बाहर निकला हुआ था। चश्मदीद हरेश शाह ने बताया कि विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से पहले बहुत तेजी से नीचे आ रहा था। इमारत से टकराने पर धमाके जैसी आवाज आई और विमान व इमारत में आग लग गई। घटनास्थल पर सबसे पहले पहुंचने वाले स्थानीय निवासियों ने यात्रियों के साथ-साथ इमारत में मौजूद लोगों को बचाने की कोशिश की। निवासियों द्वारा मोबाइल फोन पर शूट किए गए शुरुआती फुटेज में मलबे के बीच झुलसे हुए शव दिखाई दिए। एक अन्य प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि विमान छात्रावास के डाइनिंग हॉल (खाना खाने की जगह) से टकराया, जहां लोग मौजूद थे। उनमें से कई घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया। वही अमित शाह ने प्रधानमंत्री को बताया कि वह जमीनी स्तर पर बचाव एवं राहत कार्यों की निगरानी के लिए अहमदाबाद जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने मंत्री को तत्काल सभी आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है तथा स्थिति के बारे में नियमित रूप से जानकारी देने को कहा है। वहीं, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्थिति का आकलन करने के लिए गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से बातचीत की है। इस बीच, नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने एक बयान में कहा कि अहमदाबाद हवाई अड्डे के पास आवासीय इलाके में दुर्घटनाग्रस्त हुए एअर इंडिया के विमान में 232 यात्री और चालक दल के 10 सदस्य सवार थे। दुर्घटना के बाद, आपातकालीन प्रतिक्रिया दल तुरंत घटनास्थल पर पहुंच गए और उन्होंने तत्काल बचाव, निकासी और अग्निशमन अभियान शुरू कर दिया। बता दे कि एअर इंडिया ने 'एक्स' पर एक पोस्ट कर कहा कि अहमदाबाद-लंदन गैटविक की उड़ान संख्या एआई171 आज, 12 जून 2025 को दुर्घटनाग्रस्त हो गई। फिलहाल हम विवरण का पता लगा रहे हैं और जल्द ही आगे की जानकारी अपनी वेबसाइट के साथ-साथ एक्स हैंडल पर साझा करेंगे। एअर इंडिया के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन ने कहा कि दुर्घटना स्थल पर आपातकालीन प्रतिक्रिया दलों की सहायता के लिए एयरलाइंस हर संभव प्रयास कर रही है और इस हादसे में प्रभावित लोगों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करेगी। चंद्रशेखरन ने एक बयान में कहा कि बहुत दुख के साथ, मैं पुष्टि करता हूं कि अहमदाबाद से लंदन गैटविक के लिए उड़ान भरने वाली एअर इंडिया की उड़ान, एआई 171 आज दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस

घटना में प्रभावित सभी लोगों के परिवारों और प्रियजनों के साथ हमारी गहरी संवेदनाएं हैं। चंद्रशेखरन टाटा समूह के चेयरमैन भी हैं। उन्होंने कहा कि इस समय हमारा प्राथमिक ध्यान सभी प्रभावित लोगों और उनके परिजनों की सहायता करने पर है। हम दुर्घटना स्थल पर आपातकालीन प्रतिक्रिया दलों की सहायता करने और प्रभावित लोगों को सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए काम कर रहे हैं। एअर इंडिया ने एक बयान में कहा कि हमने और विवरण उपलब्ध कराने के लिए एक यात्री हॉटलाइन नंबर 1800 5691 444 शुरू किया है।

बताते चले कि अहमदाबाद एयर इंडिया प्लेन क्रैश के बाद कई तरह की थ्योरीज सामने आ रही हैं। इसमें ह्यूमन एरर से लेकर तकनीकी खामी, कोई साजिश या स्टाफ की लापरवाही भी बताई जा रही है। अभी तो शवों को गिनने और उन्हें पहचानने का काम किया जा रहा है। ऐसे में ये हादसा कैसे हुआ और क्यों हुआ इसका पता लगाने में शायद बहुत वक्त लग जाएगा। तब तक जानते हैं अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया प्लेन क्रैश में कौन कौनसी थ्योरीज चल रही है। विमानन विशेषज्ञों के अनुसार, हादसा संभवत: पक्षी के विमान के दोनों इंजनों से टकराने के कारण हुआ। कैप्टन सी.एस. रंधावा (पूर्व डीजीसीए उप प्रमुख) ने बताया, अहमदाबाद हवाई अड्डे के आसपास पक्षियों की भीड़ रहती है। ईंधन दूषित होना या नियंत्रण प्रणाली जाम होना भी संभावित कारण हो सकते थे। सुरक्षा सलाहकार कैप्टन मोहन रंगनाथन ने हवाई अड्डे के निकट अवैध कसाईखानों और इमारतों की ऊँचाई उल्लंघन को जिम्मेदार ठहराया। वही दुर्घटना का कारण अभी तक बहुत कम ज्ञात होने के साथ, अधिकारियों ने पुष्टि की कि पायलट की कथित तौर पर भयावह 'मेडे' (May-day) संकटकालीन कॉल के बाद चुप्पी छा गई और हवाई यातायात नियंत्रण (एटीसी) से कोई और प्रतिक्रिया नहीं मिली। भारत के नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) द्वारा इंटरसेप्ट किए गए अंतिम प्रसारण में संकट का कारण 'इंजन

विफलता' बताया गया। कथित तौर पर एटीसी विमान के रडार से गायब होने से पहले प्रतिक्रिया नहीं दे सका। एक साक्षात्कार में विमानन सुरक्षा सलाहकार जॉन एम. कॉक्स ने कहा कि जांचकर्ता जो सवाल पूछेंगे उनमें से एक यह होगा कि क्या एयर इंडिया का विमान उड़ान के लिए ठीक से कॉन्फिगर किया गया था।

हालांकि उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कोई भी निष्कर्ष निकालना जल्दबाजी होगी, वाशिंगटन डीसी स्थित सेफ्टी ऑपरेटिंग सिस्टम्स के सीईओ ने एपी को बताया कि उड़ान की धुंधली तस्वीरों से पता चलता है कि जांच का एक क्षेत्र यह हो सकता है कि जब विमान चढ़ने का प्रयास कर रहा था तो स्लैट्स और फ्लैप सही स्थिति में थे या नहीं। उन्होंने कहा, 'तस्वीर में विमान का अगला हिस्सा ऊपर उठता हुआ और उसका नीचे गिरना जारी दिखता है।' 'इससे पता चलता है कि विमान पर्याप्त लिफ्ट (उठाव) नहीं बना पा रहा था।' स्लैट्स और फ्लैप को इस तरह से स्थित होना चाहिए कि पंख कम गति पर अधिक लिफ्ट (उठाव) पैदा करें।

इस सारे अंदेशों के अलावा प्लेन क्रैश में साजिश की बात भी कही जा रही है। क्या यह कोई अंतराष्ट्रीय साजिश हो सकती है। हालांकि इसे लेकर अब तक कोई बयान नहीं आया है, लेकिन सोशल मीडिया में इस बात की भी सुर्खियां बनी हुई है। इसके अलावा हादसे के दूसरे दिन एअर इंडिया के ही एक विमान को बम की धमकी मिली है। इस की थाइलैंड में इमरजेंसी लैंडिंग करवाई गई। बता दें कि एअर इंडिया की यह विमान AI 379 थाईलैंड के फुकेत से दिल्ली जा रहा था। बम की धमकी मिलने के बाद विमान को थाईलैंड में इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। इस फ्लाइट में मौजूद 156 यात्रियों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। विमान ने अंडमान सागर के ऊपर चक्कर लगाने के बाद फुकेत हवाई अड्डे पर वापस लैंड किया। धमकी देने वाले के बारे में अभी तक कोई जानकारी नहीं मिली है। यह घटना अहमदाबाद दुर्घटना के एक दिन बाद हुई है।

बहरहाल, विशेषज्ञों का मानना है कि अहमदाबाद से लंदन जा रहे एयर इंडिया के विमान के हादसे का शिकार होने का संभावित कारण दोनों इंजनों का फेल होना या उड़ान भरने के तुरंत बाद पक्षी का टकरा जाना हो सकता है। विमान में चालक दल सहित 242 लोग सवार थे। बड़े विमानों के तीन वरिष्ठ पायलट ने पीटीआई को बताया कि इस दुर्घटना के सार्वजनिक रूप से उपलब्ध वीडियो को देखने से ऐसा लगता है कि इंजन उड़ान भरने के लिए आवश्यक गतिबल (थ्रस्ट) नहीं जुटा पाए, जिसके परिणामस्वरूप उड़ान भरने के कुछ सेकंड बाद ही आवासीय क्षेत्र में भीषण दुर्घटना हो गई। ये तीनों पायलट प्रशिक्षण का कार्य भी करते हैं। अहमदाबाद से लंदन गैटविक के लिए उड़ान भरने वाले बोइंग 787-8 विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के विशिष्ट कारणों का पता विमान दुर्घटना जांच ब्यूरो (एएआईबी) द्वारा विस्तृत जांच पूरी होने के बाद ही चलेगा। विशेषज्ञों ने विमान के नीचे गिरने के उपलब्ध दृश्यों के आधार पर संभावित कारणों का उल्लेख किया। एक कमांडर ने कहा कि ऐसा नहीं लगता कि यह किसी एक इंजन के फेल होने का मामला है, क्योंकि ऐसी स्थिति में विमान एक ओर झूल रहा होता, लेकिन इस मामले में विमान स्थिर था। उन्होंने कहा कि इसलिए, दोनों इंजन के फेल होने की आशंका है। दोनों इंजन में 'थ्रस्ट' की कमी हो सकती है, लेकिन ये केवल संभावनाएं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि तस्वीरों से ऐसा लगता है कि या तो फ्लैप ऊपर थे या उड़ान भरते वक्त लैंडिंग गियर नीचे था। दूसरे कमांडर ने उल्लेख किया कि जिस तरह से विमान नीचे गिरा, उससे संकेत मिलता है कि दोनों इंजन में 'थ्रस्ट' की कमी थी। उन्होंने कहा कि ऐसा तब हो सकता है जब पक्षी के टकराने के कारण दोनों इंजन फेल हो गए हों। तीसरे कमांडर ने कहा कि विमान के दोनों इंजन की शक्ति कम हो गई होगी। उन्होंने कहा कि एक इंजन फेल हो सकता है और संभवतः उड़ान भरने के बाद लैंडिंग गियर को वापस नहीं खींचे जाने के कारण, दूसरे इंजन में पर्याप्त शक्ति नहीं रही होगी। हालांकि ऐसा भी अनुमान लगाया जा रहा है कि विमान का वजन अनुमेय सीमा से अधिक हो सकता था, लेकिन इस कमांडर ने कहा कि यदि ऐसा होता, तो

'टेक-ऑफ' संभव नहीं होता। विमान का वजन वी-1 गति या टेक-ऑफ गति निर्धारित करता है। यदि गणना की गई गति आवश्यकता से कम है, तो इंजन विमान को हवा में उड़ते रहने के लिए संघर्ष करेंगे। विमान नियामक नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने कहा कि उड़ान भरने के तुरंत बाद हवाई यातायात नियंत्रक को एक 'मेडे कॉल' दिया गया था, लेकिन उसके बाद हवाई यातायात नियंत्रक की ओर से की गई कॉल का विमान से कोई जवाब नहीं मिला। डीजीसीए ने एक बयान में कहा कि रनवे 23 से प्रस्थान करने के तुरंत बाद विमान हवाई अड्डे की परिधि के बाहर नीचे गिर गया। एक वीडियो संदेश में एयर इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) और प्रबंध निदेशक (एमडी) कैम्पबेल विल्सन ने कहा, ''जांच में समय लगेगा लेकिन हम जितना कुछ कर सकते हैं, कर रहे हैं।

गौरतलब है कि घटना के 28 घंटे बाद विमान का ब्लैक बॉक्स मिला गया है। यह क्रैश साइट पर मौजूद बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल की छत पर पड़ा मिला है। ब्लैक बॉक्स से हादसे की जांच को तेजी मिलेगी। साथ ही हादसे का कारण भी सामने आएगा। अहमदाबाद क्रैश जांच में ब्लैक बॉक्स ये साफ कर सकता है कि हादसा मैकेनिकल फेल्यर, इंजन खराबी, बर्ड स्ट्राइक, ऑनबोर्ड फायर या मानवीय गलती के कारण हुआ। रिकॉर्डिंग्स से MAYDAY कॉल, ऑटोमेटेड चेतावनियां और टेकऑफ के बाद के महत्वपूर्ण पलों में रिकवरी के प्रयासों की जानकारी मिलेगी। दरअसल, ब्लैक बॉक्स ब्लैक कलर का कोई बॉक्स नहीं होता। 'ब्लैक बॉक्स' असल में ब्राइट ऑरेंज कलर के क्रैश-रेसिस्टेंट डिवाइस हैं, जो जिन्हें एक्सट्रीम कंडीशन और आग से बचने के लिए डिजाइन किया जाता है। हर कमर्शियल विमान में दो ऐसे रिकॉर्डर होते हैं, जो रीइन्फोर्स्ड केसिंग में रखे जाते हैं और विस्फोट, आग, पानी के दबाव और हाई-स्पीड क्रैश को झेल सकते हैं। ये रिकॉर्डर लगातार 25 घंटे की जानकारी स्टोर करते हैं, जिसमें उस टाइमपीरियड की पिछली उड़ानों का डेटा भी शामिल होता है, जो कभी-कभी समय के साथ डेवलप हुई मैकेनिकल खामियों के संकेत दे सकता है। एसोसिएटेड प्रेस के मुताबिक 1953 में ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिक डेविड वॉरेन ने पहली बार कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर का विचार दिया। ऑस्ट्रेलियाई रक्षा विभाग ने उनकी मृत्यु के बाद एक बयान में कहा कि वॉरेन 1953 में दुनिया के पहले कमर्शियल जेट विमान, कॉमेट की दुर्घटना की जांच कर रहे थे और उन्होंने सोचा कि किसी एयरलाइन दुर्घटना की जांच के लिए कॉकपिट (जिसमें पायलट बैठे होते हैं) में आवाजों की रिकॉर्डिंग करने में सहायक होगा। फ्लाइट रिकॉर्डर इन्वेस्टिगेटर्स को क्रैश से पहले की घटनाओं का सेकंड-बाय-सेकंड रिकंस्ट्रक्ट करते हैं, जो कॉकपिट और विमान सिस्टम्स में क्या हुआ, इसकी साफ डिटेल देते हैं। ये क्रिमिनल केस में DNA सबूत की तरह हैं - जब इंसानी गवाह उपलब्ध नहीं होते, तब ये निष्पक्ष गवाही देते हैं। इसलिए हादसे की वजहों को जानने के लिए एक जरूरी सबूत है। ब्लैक बॉक्स में दो डिवाइस शामिल हैं-कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर और फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर। फ्लाइट डेटा रिकॉर्डर महत्वपूर्ण टेक्निकल पैरामीटर्स जैसे अल्टीट्यूड, स्पीड, इंजन थ्रस्ट, और फ्लाइट पाथ डेटा रिकॉर्ड करता है। आधुनिक विमान, जैसे क्रैश हुआ बोइंग 787, हजारों पैरामीटर्स रिकॉर्ड कर सकता है, जिसमें कॉकपिट कमांड इनपुट्स से लेकर एयर कंडीशनिंग सिस्टम तक शामिल हैं। कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर कॉकपिट के सभी ऑडियो- पायलट की बातचीत, रेडियो ट्रांसमिशन, वॉर्निंग अलार्म और मैकेनिकल आवाजें-रिकॉर्ड करता है, जो क्रैश से पहले के पलों की महत्वपूर्ण जानकारी दे सकता है। ये डिवाइसेज DGCA या एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो के फोरेंसिक लैब में भेजे जाएंगे, जहां एक्सपर्ट्स मेमोरी मॉड्यूल्स निकालेंगे। वॉइस और फ्लाइट डेटा को सिंक्रोनाइज करेंगे और रडार लॉग्स और एयर ट्रैफिक कंट्रोल रिकॉर्ड्स के साथ मिलान करेंगे।

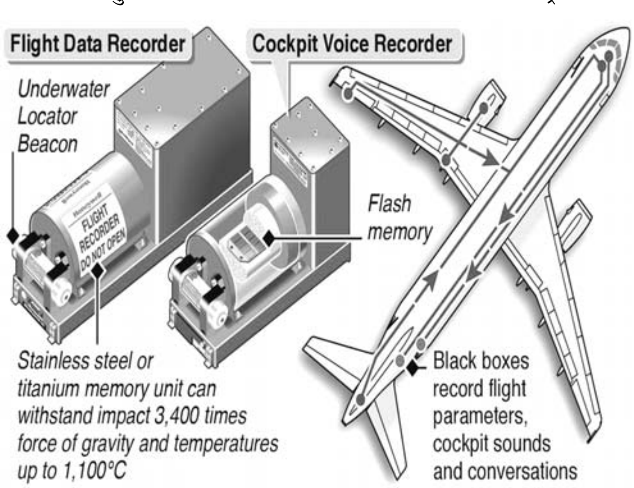

बहरहाल, अब तक 297 लोगों की मौत की पुष्टि: अहमदाबाद में हुए प्लेन हादसे में अब तक 297 लोगों की मौत की पुष्टि हो गई है। विमान में सवार 242 लोगों में से 241 लोगों की मौत हो गई है। हादसे में सिर्फ एक यात्री की जान बच पाई है। मृतकों में 229 लोग यात्री थे, जबकि 12 विमान के क्रू मैंबर्स थे। इसके अलावा प्लेन क्रैश करने के बाद जिस मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल पर गिरा था वहां मौजूद 56 लोगों की भी जान चली गई है। वही केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा कि AAIB के माध्यम से हो रही तकनीकी जांच से एक महत्वपूर्ण अपडेट घटनास्थल से ब्लैक बॉक्स की बरामदगी है। AAIB टीम का मानना है कि ब्लैक बॉक्स की डिकोडिंग गहराई से जानकारी देने वाली है कि दुर्घटना की प्रक्रिया के दौरान या दुर्घटना से पहले के क्षणों में वास्तव में क्या हुआ होगा। इसकी जानकारी हम इस बात का भी बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं कि AAIB द्वारा पूरी जांच के बाद क्या परिणाम या रिपोर्ट सामने आएगी। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह सचिव के नेतृत्व में जांच कमेटी गठित की गई है, जो 3 महीने में अपनी रिपोर्ट सौंपेगी।

भगवान का दूसरा पर्याय हैं पिता

पिता एक ऐसा शब्द है, जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता, जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक आपकी सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। दुनियां भर के सारे रिश्ते निभाकर हमने ये जाना है की माता-पिता के सिवाय कोई अपना नहीं होता। जिसने भी इस सच को जान लिया, वो बहुत ही खुशनसीब है और जिन्होंने इस सच को जानते हुए भी अपनी आंखे बंद कर ली, इस दुनियां में उनसे ज्यादा बदनसीब और कोई नहीं। ***हमारे जीवन में पिता एक ऐसे इंसान हैं, जिनको हम जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता की कमी हमें तब महसूस होती है, जब हमारे बीच सभी लोग हो, लेकिन पिता न हो।*** इसलिए पिता को समझने की हमें कोशिश करनी चाहिए और उनका सहारा बनना चाहिए। किसी व्यक्ति के जीवन में पिता का क्या महत्व होता है, इन बातों को कितने भी पन्नों में लिखकर कैद कर ली जाये, फिर भी यह अधूरी ही होगी, क्योंकि पिता का महत्व को कभी आंका नहीं जा सकता। हां पिता के महत्व और उनका अपने बच्चों के प्रति दिये गये योगदान 'फादर्स डे' यानि 'पिता दिवस' में चार चांद जरूर लगा देंगे और उक्त दिवस को खास बनाने के लिए ऐसा क्या किया जाना चाहिए, जो यादगार बन जाये? प्रस्तुत है 'पिता दिवस' के अवसर पर पत्रिका के संयुक्त संपादक **अमित कुमार** के द्वारा उन तमाम बच्चों की तरफ से उनके पिता के महत्व और योगदान पर विश्लेषनात्मक रिपोर्ट :-

हमारे ग्रन्थों में माता-पिता और गुरु तीनों को ही देवता माना गया है। जिस स्थूल जगत् में हम हैं, उसमें वही हमारे वास्तविक देवता हैं। इनकी सेवा और भक्ति में कसर रह जाए तो फिर ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं और अगर हमने इनकी सेवा पूरे मन से की तो भगवान स्वयं कच्चे धागे से बंधे भक्त के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। आखिर श्रवण कुमार में ऐसा क्या खास था कि किसी भी भगवान से उनकी अहमियत कम नहीं है। माता-पिता की भक्ति और सेवा ने उसे भक्त प्रह्लाद और ध्रुव के बराबर का आसन दिलाया है। पिता चाहे कैसे भी वचन बोले, कैसा भी बर्ताव करे, संतान को उनके प्रति श्रद्धा और विनम्रता से आज्ञाकारी होना ही चाहिए। केवल इतना सूत्र भर साध लेने से हम उस ईश्वर के राज्य के अधिकारी बन जाते हैं, जिसे पाने के लिए जाने कितने तपस्वियों ने शरीर गलाया, बरसों साधना की। कन्धे पर माता-पिता को लेकर तीर्थ कराने निकला श्रवण जब उनकी प्यास बुझने के लिए पानी भरते हुए राजा दशरथ का एक तीर लग जाने से प्राण त्यागता है, तब यही कहता है- 'मेरे माता-पिता प्यासे हैं, आप उन्हें जाकर पानी पिला दें।' प्राण त्यागते हुए भी जिसे अपने माता-पिता का ध्यान रहे, वह संतान उस युग में ही नहीं, इस युग में भी धन्य है। उसे किसी काल की परिधि में नहीं बांध सकते।

पिता एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सीखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते हैं और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक आपकी सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसी को ध्यान में रखकर पितृ दिवस मनाने की परंपरा का आरम्भ हुआ।

पिता को आमतौर पर पापा भी कहते हैं तथा अंग्रेजी में फादर कहते हैं। वह परिवार के मुखिया होते हैं, इसीलिए घर के हर छोटे बड़े निर्णय लेने का अधिकार केवल पिता के ही पास होता है, क्योंकि उनके पास लंबे समय का अनुभव और जीवन का ज्ञान होता है। वह अपने इस अनुभव और ज्ञान के कारण परिवार को दूसरी बुराइयों और दुनियां के गलत लोगों से बचाते हैं। पिता का स्वभाव बाहर से जितना कठोर होता है वे अन्दर से उतने ही शांत और सरल होते हैं, यदि कोई व्यक्ति गलत कार्य करता है तो उसे डांटते भी है, जिस वजह से वह अपनी गलती सुधार कर अच्छा निर्णय ले सके।

जीवन का आधार ही पिता है, पिता से ही घर होता है। पिता ही जीवन में सबसे महत्वपूर्ण होते है। बिना पिता के जीवन नरक सा लगता है। माता-पिता के बिना जीवन अनुसाशन के बिना ही बीतता है, कोई रोक टोक नहीं होती है, मगर जीवन एक कटी हुई पतंग के सामान हो जाता है। पिता हमारे जीवन में बहुत महत्व रखते हैं, पिता न होते तो शायद मेरा कोई अस्तित्व ही न होता। पिता बिना किसी लोभ के अपने बच्चों के लिए पूरी जिंदगी मेहनत करते है ताकि उनका बच्चा पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बने और उनका नाम गर्व से ऊँचा हो। हर हाल में माता-पिता चाहते हैं की हमारे बच्चे को किसी भी प्रकार का दु:ख न देखना पड़े। धरती पर भगवान के रूप में मेरे माता पिता ही हैं जो मुझे प्यार करते है और मेरे साथ हमेशा मेरी परेशानियों को हल करने में सहायता देते है। जीवन में पिता का होना बहुत जरुरी होता है बिना पिता के जीवन मानो बीना छत के घर, बीना आसमान के जमीन का होना है। पिता का जीवन में बहुत बड़ा भाग होता है, जिसकी व्याख्या करना बेहद मुश्किल है। पिता न होते तो घर नहीं चलता। बिना पिता के दुनिया कभी नहीं अपनाती। पिता का जीवन में होना बहुत जरूरी है, जिनके पास पिता होते हैं उसके पास दुनिया की सबसे बड़ी ताकत होती है। पिता से ही नाम है और पहचान है, माता-पिता एक वो अनमोल रत्न हैं, जिनके आशीर्वाद से दुनियां की सबसे बड़ी कामयाबी भी हांसिल की जा सकती है। माता-पिता ही है जो हमें सच्चे दिल से प्यार करते हैं, बाकी इस दुनिया में सब नाते रिश्तेदार झुठे होते हैं। पिता हमें पढ़ाते हैं, लिखाते हैं, एक कामयाब इन्सान बनाते है। जब बच्चे को कामयाबी हांसिल होती है; चाहे वो कितनी बड़ी हो, चाहे कितनी छोटी माता-पिता को लगता है की ये कामयाबी उन्हें मिली है। पता नहीं क्यों हमे हमारे पिता इतना प्यार करते हैं, दुनिया के बैंक खाली हो जाते हैं, मगर पिता की जेब हमेशा हमारे लिए भरी रहती हैं। पता नहीं जरुरत के समय न होते हुए, कहाँ से पैसे आ जाते हैं।

पिता शब्द की व्याख्या करना वैसे तो बहुत कठिन है, क्योंकि वह बहुत विस्तृत है। फिर भी मैं अपने विचारों को पाठकों के सम्मुख रखने का प्रयास कर रहा हूँ, इसमें कुछ त्रुटि हो तो क्षमा करे। पिता परिवार के लिए वटवृक्ष की तरह होते हैं। वह बच्चों के जीवन का आधार होते हैं। वह एक उम्मीद, एक आस और विश्वास होते हैं। पिता बच्चों के लिए भगवान स्वरूप होते हैं, जो उनके हर सपने को पूरा करने की सोच रखते हैं। एक पिता का जीवन अपने परिवार के इर्दगिर्द घूमता रहता है, वह हमेशा बच्चों को खुशी देने की सोच रखते हैं, पिता बच्चों के संघर्ष में हौंसलों की दीवार है। जीवन में पिता का होना बहुत जरूरी होता है, पिता से ही बच्चों की पहचान है। उनका प्रेम अनमोल होता है, माता-पिता के आशीर्वाद से दुनियां की बड़ी से बड़ी कामयाबी हासिल की जा सकती है। कोई भी समस्या हो उसका समाधान पिता के पास होता है, बच्चों को पिता की महत्ता का पता जब वे खुद माता-पिता बनते हैं, तो और अधिक होता है। बचपन में माता-पिता निस्वार्थ भाव से बच्चों का पालन पोषण करते हैं। उसी प्रकार उनके बूढ़े हो जाने पर दुनिया के

हर इंसान को उनको बच्चों की तरह प्यार और विश्वास देना चाहिए, उनके पास बैठना चाहिए, उनसे बांते करना चाहिए, जिससे वह खुश हो सके और उनको लगे कि, जो संस्कार मैंने अपने बच्चों को दिये है, वह आज मुझे फलते-फूलते नजर आ रहे हैं। बस यही इच्छा हर पिता की होती है। माता पिता का कर्ज दुनियां में सभी कर्जो से बड़ा होता है, जिसे किसी भी कीमत पर चुकाया नहीं जा सकता है, वह अनमोल होता है। फिर भी जो अमूल्य समय बचपन में उन्होंने हमें दिया है, उसे हमें भी उन्हें बूढापे में देना चाहिए।

पुराणों में कहा गया है की पिता राज प्रदान नहीं कर सकता, लेकिन दुनियां के हर पुत्र का ये फर्ज होता हे की वो अपने पिता को राज प्रदान करने की हर एक कोशिश करे। दुनियां भर के सारे रिश्ते निभाकर हमने ये जाना है की माता-पिता के सिवाय कोई अपना नहीं होता। जिसने भी इस सच को जान लिए वो बहुत ही खुशनसीब है और जिन्होंने इस सच को जानते हुए भी अपनी आंखे बंध कर ली है इस दुनियां में उनसे ज्यादा बदनसीब और कोई नहीं। ***हमारे जीवन में पिता एक ऐसे इंसान हैं, जिनको हम जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता की कमी हमें तब महसूस होती है, जब हमारे बीच सभी लोग हो, लेकिन पिता न हो।*** इसलिए पिता को समझने की हमें कोशिश करनी चाहिए और उनका सहारा बनना चाहिए। जो अपनी आंखे बंद करके आपसे भरोसा और प्रेम करे वो प्रेमिका होती हे और आंखे खोलकर आपसे प्रेम करे वो आपका सच्चा दोस्त होता है, जबकि जो अपनी आंखे बंद होने तक आपसे प्रेम करे, वो माँ होती है और आँखों में प्रेम न जताये हुए भी आपसे प्रेम करे वो एक पिता ही होता है। पिता वो है जो अपना पूरा समय अपने संतानो, पत्नी और परिवार के लिए हर रोज काम करते हैं। वो खुद के लिए कम लेकिन अपने संतानो, परिवार और पत्नी के लिए अपना खून पसीना एक करते है, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। पिता वो हैं जिनके होने का हमें कभी अहसास नहीं होता, लेकिन पिता न होने का एहसास जिन्दगी भर रहता है। पिता वो है, जो अपने परिवार के लिए अपनी हर खुशी को कुर्बान कर देते हैं। यानि कि पिता वो फरिस्ता है, जो हमें सिर्फ देता है। दुनियां का कोई भी आदमी अपना रात-दिन एक करता है तो उसके पीछे खुद का शरीर कम, लेकिन अपने संतानो पत्नी और परिवार के भरण-पोषण कही ज्यादा रहता है, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। वो पिता ही होते हैं, जो अपने बच्चे को अपने कंधे पर बैठकर दुनियां दिखाते हैं, चाहे वो छेद वाले कपडे पहने, लेकिन अपने बच्चो को नए कपडे पहनाते हैं, वो पापा, डैडी और बाबूजी हैं। आज के युग में बच्चे ऐसे होते हे की कभी पापा जमीन पर बैठे हुए होते हैं और उनके संतान सोफे में बैठे हुए नजर आते हैं, कई बार हमें ये भी मालूम नहीं पड़ता की। उसमे पिता कौन और बेटा कौन है? पिता ही घर होता है और पिता ही अपने परिवार का आधार होता हैं। पिता ही होते हैं, जिन पर घर की हर जिम्मेदारी होती है। पिता एक नीम के पेड़ की तरह होते हैं, जो भले ही हमे डांट लें, लेकिन उसके पीछे हमारी ही भलाई होती है।

INSPIRATION for Father's Day was Civil War veteran William Jackson Smart, who reared six children after his wife died.

आचार्य चाणक्य के अनुसार पुत्र वही है, जो अपने पिता की आज्ञा का पालन करे यानि कि बच्चो को अपने पिता की हर सलाह का पालन करना चाहिए और सदैव उनकी बातों का अनुसरण करे। पिता को अपने संतानो के प्रति बहुत प्यार होता है, लेकिन पिता को माँ की तरह उसे बयां करना नहीं आता। माँ अपने संतानो को दुःख में देखकर रो लेंगी मगर एक पिता अपने अंदर ही अंदर झुझते रहेंगे, मगर वो कहेंगे नहीं वरना ममता और भावुकता में पिता किसी से पीछे नहीं रहते। ना पिता में जज्बात कम होते हे और ना ही आस्था बस वो अपने प्यार को अपनी कमजोरी नहीं बनने देते और यही उनकी ताकत होती है। पूरी दुनियां में एक पिता ही वो इंसान हैं, जो ये चाहता है की आप उससे भी ज्यादा कामयाब बने। माता-पिता ही होते हैं, जो आपको बिना कोई स्वार्थ के प्यार करते हैं, इसलिए अपने माता-पिता की जीते जी कदर करे, क्योकि वो ही होते हैं जिन्होंने आपको अपना सबकुछ छोड़कर आपको सबकुछ दिया है। जब भी आपके पिता आप पर गुस्से हो तो आप उनके गुस्से को समझो, क्योकि पिता के गुस्से के पीछे भी उनका अपनापन होता है, इसलिए अपने माता-पिता के गुस्से को कभी दिल पर न लो। किसी भी इंसान के विकास के लिए माँ के ममता के साथ-साथ पिता का योगदान भी इतना ही आवश्यक है, पिता से ही बच्चो का सपूर्ण विकास सम्भव है।

एक बच्चे के सपूर्ण विकास में एक पिता का योगदान माता के योगदान से कम नहीं होता। यानि कि अपने बच्चो के कठिन समस्या के आगे पिता एक चट्टान की तरह खड़ा होता है और अपने संतानो पर जरा सी भी आंच नहीं आने देते। पिता का व्यक्तित्व आपको भले ही ऊपर से कठोर लगे, लेकिन वो ही कठोर पिता के अंदर से अपने संतानो के लिए हमेंशा प्यार ही होता है। अक्सर पिता अपने संतानों पर लाड प्यार न जताये, लेकिन अपने संतानो की खुशी के लिए अपना दिन रात एक कर देता है। संतानो के लिए एक पिता वटवृक्ष की तरह होते हैं जो अपने संतानो के सुख और दुःख में हमेंशा साथ होते हैं। यानि कि एक पिता किसी भी बच्चे के लिए किसी भगवान से कम नहीं होते। वो पिता ही होते हैं जो अपने बच्चो के सपनो को पूरा करने की सोच रखते हैं और वो ही ये चाहते हैं की मेरा बच्चा मेरे से भी ज्यादा तरक्की करे। बच्चो की चाहे छोटी समस्या हो या बड़ी, उनका समाधान पिता के पास होता है। पिता के बिना हमारी जिन्दगी कटी पतंग की तरह होती है, जो कहा हमें ले जाएगी ये हमें भी मालूम नहीं होता। पिता ही होते हैं जो हमें सही क्या है और गलत क्या है, इसका ज्ञान देते हैं, हमें सही रास्ते की पहचान करवाते हैं। पिता के बिना हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं है। जीवन में पिता होना ही हमारे लिए काफी है, क्योकि पिता ही हमारी पहचान होते हैं। लेकिन हमे पिता को जीते जी पहचान नहीं पाते। पिता का महत्व उनसे पूछो, जिनके सर पर पिता का हाथ नहीं है। पिता का प्यार अनमोल होता है। माता-पिता के आशीर्वाद से हम बड़ी सी बड़ी कामयाबी भी हासिल कर सकते हैं। पिता का हमारी जिन्दगी में होना ही काफी है, क्योकि जिनके

पास पिता होते हैं, उनके पास दुनियां की सबसे बड़ी ताकत होती है। पिता का महत्व हमें तब समझ आता है, जब हम खुद एक पिता बने। तब हमें ये महसूस होता है की एक पिता की जिन्दगी एक पिता ही समझ सके। पिता जिस तरह से अपने बच्चो को बचपन में पालन पोषण, प्यार करते हैं, वैसे ही हमें भी जब पिता वृद्ध हो जाये तब हमें भी पिता का ख्याल रखना चाहिए, क्योकि हर एक पिता की ये ख्वाइश होती है की उनके संतान उसके पास रहे और उनकी ख्याल रखे। इसलिए हमें अपने माता पिता को प्यार और विश्वास देना चाहिए। उनके साथ बैठना चाहिए और सुख दुःख की बाते करनी चाहिए, ताकि उनको लगे की जो हमने अपने बच्चो को संस्कार दिए थे वो आज हमें नजर आ रहे हैं। इस दुनिया में सभी कर्जो से बड़ा कर्ज माता पिता का होता है, जिसे हम किसी भी जन्म में चूका नहीं पाएंगे, फिर भी हमें माता पिता ने बचपन में जो समय उन्होंने दिया, वो हमें माता पिता के वृद्ध होने पर देना चाहिए। अपने पिता की हर एक बात सुने और पालन करे, क्योकि वो पिता ही होते हैं, जिन्होंने तब भी आपकी सुनी, जब आपको कुछ भी बोलना नहीं आता। कुछ लोग बड़े होकर अपने माता पिता को ये कहते हैं की आपने मेरे लिए किया ही क्या है, लेकिन शायद उनको ये मालूम नहीं होता की माता पिता की पूरी जिन्दगी निकल जाती है।

बहरहाल, आज सम्पूर्ण देश ही नहीं बल्कि विश्व पिता के महत्वों पर 'फादर्स डे' यानि पिता दिवस के रूप में मनाता है। भारतीय संस्कृति में 'पितृ-दिवस' के मायने ही अलग हैं। यहां इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अपने पिता द्वारा उनके पालन-पोषण के दौरान किए गए असीम त्याग और उठाए गए अनंत कष्टों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना है। वैश्विक स्तर पर विशेष दिवस के रूप में अनेक पर्व एवं कार्यक्रम प्रचलित होने लगे हैं, जिनमें से एक 'पितृ-दिवस' यानी 'फादर्स डे' भी है। दुनिया में यह अलग-अलग तिथियों को मनाया जाता है। भारत, अमेरिका, श्रीलंका, अफ्रीका, पाकिस्तान, बर्मा, बांग्लादेश, जापान, चीन, मलेशिया, इंग्लैण्ड आदि दुनिया के सभी प्रमुख देशों में इसे जून के तीसरे रविवार को मनाते हैं। भारत में पिछले कुछ वर्षों से 'पितृ-दिवस' के प्रति रूझान में बड़ी तेजी से बढ़ौतरी दर्ज की जा रही है। 'फादर्स डे' मनाने की शुरूआत पश्चिमी वर्जीनिया के फेयरमोंट में 5 जुलाई, 1908 को हुई थी। इसका मूल उद्देश्य 6 दिसम्बर, 1907 को पश्चिम वर्जीनिया के मोनोंगाह की एक खान दुर्घटना में मारे गए 210 पिताओं को सम्मान देना था। लेकिन, इसके बाद 'फादर्स डे' मनाने का सिलसिला धीरे-धीरे बढ़ता चला गया और यह वैश्विक स्तर पर मनाया जाने लगा। बेशक, 'फादर्स डे' के मूल में पश्चिमी वर्जीनिया की एक दर्दनाक खान दुर्घटना मौजूद हो, लेकिन भारत में अपने माता-पिता और गुरु को सम्मान देने और उन्हें भगवान समान समझने के संस्कार एवं नैतिक दायित्व चिरकाल से चलते आ रहे हैं। भारतीय संस्कृति में 'पितृ-दिवस' के मायने ही अलग हैं। यहां इस दिवस का मुख्य उद्देश्य अपने पिता द्वारा उनके पालन-पोषण के दौरान किए गए असीम त्याग और उठाए गए अनंत कष्टों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना अथवा स्वर्गीय पिताश्री की स्मृतियों को संजोना है ताकि हम एक श्रेष्ठ एवं आदर्श संतान के नैतिक दायित्वों का भलीभांति पालन कर सकें। इस

तरह के सुसंकार भारतीय संस्कृति में कूट-कूटकर भरे हुए हैं। अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने, उनके दिखाए मार्ग पर चलने, वृद्धावस्था में उनकी भरपूर सेवा करने आदि हर नैतिक दायित्वों का पाठ बचपन से ही पढ़ाया जाता है। भारतीय संस्कृति और पौराणिक साहित्य में माता-पिता और गुरु को जो सर्वोच्च सम्मान और स्थान दिया गया है, शायद उतना कहीं और किसी सभ्यता व संस्कृति में देखने को नहीं मिलेगा।

हिन्दी साहित्य में 'पिता' को 'जनक', 'तात', 'पितृ', 'बाप', 'प्रसवी', 'पितु', 'पालक', 'बप्पा' आदि अनेक पर्यायवाची नामों से जाना जाता है। पौराणिक साहित्य में श्रवण कुमार, अखण्ड ब्रह्चारी भीष्म, मर्यादा पुरुषोत्तम राम आदि अनेक आदर्श चरित्र प्रचुर मात्रा में मिलेंगे, जो एक पिता के प्रति पुत्र के अथाह लगाव एवं समर्पण को सहज बयां करते हैं। वैदिक ग्रन्थों में 'पिता' के बारे में स्पष्ट तौर पर उल्लेखित किया गया है कि 'पाति रक्षति इति पिता' अर्थात जो रक्षा करता है, 'पिता' कहलाता है। यास्काचार्य प्रणीत निरूक्त के अनुसार, 'पिता पाता वा पालयिता वा', 'पिता-गोपिता' अर्थात 'पालक', 'पोषक' और 'रक्षक' को 'पिता' कहते हैं। वही महाभारत में 'पिता' की महिमा का बखान करते हुए कहा गया है :-

पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता हि परम तपः।
पितरि प्रितिमापन्ने सर्वाः प्रीयन्ति देवताः

अर्थात 'पिता' ही धर्म है, 'पिता' स्वर्ग है और पिता ही सबसे श्रेष्ठ तपस्या है। 'पिता' के प्रसन्न हो जाने से सभी देवता प्रसन्न हो जाते हैं। इसके साथ ही कहा गया है कि 'पितु र्हि वचनं कुर्वन न कन्श्चितनाम हीयते' अर्थात 'पिता' के वचन का पालन करने वाला दीन-हीन नहीं होता।

वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड में पिता की सेवा करने व उसकी आज्ञा का पालन करने के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा गया है :-

न तो धर्म चरणं किंचिदस्ति महत्तरम्।
यथा पितरि शुश्रुषा तस्य वा वचनक्रिपा।।

अर्थात, पिता की सेवा अथवा, उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर कोई धर्माचरण नहीं है।

हरिवंश पुराण के विष्णुपर्व में पिता की महत्ता का बखान करते हुए कहा गया है :-

दारूणे च पिता पुत्र नैव दारूणतां व्रजेत।
पुत्रार्थ पदःकष्टाः पितरः प्रान्पुवन्ति हि।।

अर्थात, पुत्र क्रूर स्वभाव का हो जाए तो भी पिता उसके प्रति निष्ठुर नहीं हो सकता, क्योंकि पुत्रों के लिए पिताओं को कितनी ही कष्टदायिनी विपत्तियाँ झेलनी पड़ती हैं।

महाभारत में युधिष्ठर ने यक्ष के एक सवाल के जवाब में आकाश से ऊँचा 'पिता' को कहा है और यक्ष ने उसे सही माना भी है। इसका अभिप्राय है कि पिता के हृदय-आकाश में अपने पुत्र के लिए जो असीम प्यार होता है, वह अवर्णनीय है।

पदमपुराण में माता-पिता की महत्ता बड़े ही सुनहरी अक्षरों में इस प्रकार अंकित है :-

सर्वतीर्थमयी माता सर्वदेवमयः पिता।
मातरं पितरं तस्मात सर्वयत्रेन पुतयेत।।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्त द्वीपा वसुंधरा।
जानुनी च करौ यस्य पित्रोः प्रणमतः शिरः।
निपतन्ति पृथ्वियां च सोअक्षयं लभते दिवम्।।

अर्थात, माता सभी तीर्थों और पिता सभी देवताओं का स्वरूप है। इसलिए सब तरह से माता-पिता का आदर सत्कार करना चाहिए। जो माता-पिता की प्रदक्षिणा करता है, उसके द्वारा सात द्वीपों से युक्त पृथ्वी की

परिक्रमा हो जाती है। माता-पिता को प्रणाम करते समय जिसके हाथ घुटने और मस्तिष्क पृथ्वी पर टिकते हैं, वह अक्षय स्वर्ग को प्राप्त होता है। मनुस्मृति में महर्षि मनु भी पिता की असीम महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं :-

उपाध्यान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्त्रं तु पितृन माता गौरवेणातिरिच्यते।।

अर्थात, दस उपाध्यायों से बढ़कर 'आचार्य', सौ आचार्यों से बढ़कर 'पिता' और एक हजार पिताओं से बढ़कर 'माता' गौरव में अधिक है, यानी बड़ी है।

'पिता' के बारे में मनुस्मृति में तो यहां तक कहा गया है :

''पिता मूर्तिः प्रजापतेः''

अर्थात, पिता पालन करने से प्रजापति यानी राजा व ईश्वर का मूर्तिरूप है।

भारतीय संस्कृति और वैदिक साहित्य में जोर देकर कहा गया है कि माता-पिता द्वारा जन्म पाकर ललित पालित होने के पश्चात बच्चा जब बड़ा हो जाता है तब, माता-पिता के प्रति उसके कुछ कर्तव्य हो जाते हैं, जिसका उसे पालन करना चाहिए। वैदिक संस्कृति कहती है कि पुत्र का कर्तव्य है कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करे। जो पुत्र माता-पिता एवं आचार्य का अनादर करता है, उसकी सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं, क्योंकि माता-पिता के ऋण से मुक्त होना असम्भव है। इसीलिए, माता-पिता तथा आचार्य की सेवा-सुश्रुषा ही श्रेष्ठ तप है। लेकिन, विडम्बना का विषय है कि आधुनिक युवा वर्ग अपने पथ से विचलित होकर अपनी प्राचीन भारतीय वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति को निरन्तर भुलाता चला जा रहा है। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। आज घर-घर में पिता-पुत्रों के बीच आपसी कटुता, वैमनस्ता और झगड़ा देखने को मिलता है। भौतिकवाद आधुनिक युवावर्ग के सिर चढ़कर बोल रहा है। उसके लिए संस्कृति और संस्कारों से बढ़कर सिर्फ निजी स्वार्थपूर्ति और पैसा ही रह गया है। इससे बड़ी विडम्बना का विषय और क्या हो सकता है कि एक 'पिता' अपने पुत्र के मुख से सिर्फ प्रेम व आदर के दो शब्द की उम्मीद करता है, लेकिन उसे पुत्र से उपेक्षित, तिरस्कृत और अभद्र आचरण के अलावा कुछ नहीं मिलता है। निःसन्देह, यह हमारी आधुनिक शिक्षा पद्धति के अवमूल्यन का ही दुष्परिणाम है। पौराणिक ग्रन्थ देवीभागवत में स्पष्ट तौर पर लिखा गया है :-

धिक तं सुतं यः पितुरीप्सितार्थ,
क्षमोअपि सन्न प्रतिपादयेद यः।
जातेन किं तेन सुतेन कामं,
पितुर्न चिन्तां हि सतुद्धरेद यः।।

अर्थात, उस पुत्र को धिक्कार है, जो समर्थ होते हुए भी पिता के मनोरथ को पूर्ण करने में उद्यत नहीं होता। जो पिता की चिन्ता को दूर नहीं कर सकता, उस पुत्र के जन्म से क्या प्रयोजन है?

इसी तरह गरूड़ पुराण में लिखा गया है :-

सर्वसौख्यप्रदः पुत्रः पित्रोः प्रीतिविवर्द्धनः।
आत्मा वै जायते पुत्र इति वेदेषु निश्चितम्।

अर्थात, पुत्र सब सुखों को देने वाला होता है, माता-पिता का आनंदवर्द्धक होता है। वेदों में ठीक ही कहा गया है कि आत्मा ही पुत्र के रूप में जन्म लेती है।

आधुनिक युवापीढ़ी को 'पितृ-दिवस' पर संकल्प लेना चाहिए कि वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति के अनुरूप वे अपने पिता के प्रति सभी दायित्वों का पालन करने का हरसंभव प्रयास करेंगे और साथ ही महर्षि वेदव्यास द्वारा महाभारत के आदिपर्व में दिए गए ज्ञान का सहज अनुसरण करेंगे कि 'जो माता-पिता की आज्ञा मानता है, उनका हित चाहता है, उनके अनुकूल चलता है तथा माता-पिता के प्रति पुत्रोचित व्यवहार करता है, वास्तव में वही पुत्र है।' हमें हमेशा यह याद रखने की आवश्यकता है कि ''देवतं हि पिता महत'' अर्थात 'पिता' ही महान देवता है।

पिता के महत्वों और उनके बच्चों का पिता के प्रति निष्ठा को पूरा करने को पूरी उम्र भी कम है किन्तु एक खास दिन का चयन जरूर हुआ है जो पिता और उनके बच्चों के लिए अहमितयत रखता है, जिसे फादर्स डे के रूप में मनाया जाता है। फादर्स डे अपने पिता को स्पेशल महसूस कराने का दिन होता है। इस दिन बच्चे अपने पिता के प्रति अपने आदर को तरह-तरह के माध्यम से दर्शाते हैं।

कहते हैं कि पितृ दिवस की शुरुआत बीसवीं सदी के प्रारंभ में पिता धर्म तथा पुरुषों द्वारा परवरिश का सम्मान करने के लिये मातृ दिवस के पूरक उत्सव के रूप में हुई। यह हमारे पूर्वजों की स्मृति और उनके सम्मान में भी मनाया जाता है। पितृ दिवस को विश्व में विभिन तारीखों पर मनाते है- जिसमें उपहार देना, पिता के लिये विशेष भोज एवं पारिवारिक गतिविधियाँ शामिल हैं। आम धारणा के विपरीत, वास्तव में पितृ दिवस सबसे पहले पश्चिम वर्जीनिया के फेयरमोंट में 5 जुलाई, 1908 को मनाया गया था। 6 दिसम्बर, 1907 को मोनोंगाह, पश्चिम वर्जीनिया में एक खान दुर्घटना में मारे गए 210 पिताओं के सम्मान में इस विशेष दिवस का आयोजन श्रीमती ग्रेस गोल्डन क्लेटन ने किया था। 'प्रथम फादर्स डे चर्च' आज भी सेन्ट्रल यूनाइटेड मेथोडिस्ट चर्च के नाम से फेयरमोंट में मौजूद है। फादर्स डे मनाने के पीछे इसका एक महत्वपूर्ण इतिहास है। इस दिवस के मनाने का पहला आईडिया सोनोरा लौइस स्मार्ट डोड के दिमाग में आया। इन्होने ही पहली बार एक विशेष दिन अपने पिता विलियम स्मार्ट को विशेष रूप से सम्मानित करने की योजना बनायी। चूँकि यह अपने पिता को सम्मान देने की एक नयी प्रणाली थी, जिसमे क्रिएटिविटी को भी स्थान प्राप्त हो रहा था, इस वजह से यह दिन काफी मशहूर हुआ और लोगों ने इस दिवस का मनाना औपचारिक रूप से शुरू किया। सोनोरा ने यह दिवस जून के पहले रविवार को मनाने की योजना बनायी, क्योंकि यह दिवस इनके पिता के जन्मदिवस के करीब था। इस तरह से यह दिवस पहली बार 19 जून 1910 को वाशिंगटन के स्पोकेन में मनाया गया। वर्ष 1966 में प्रेसिडेंट लिंडन जॉनसन ने जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे का आयोजन किया। इसके उपरान्त वर्ष 1972 में प्रेसिडेंट रिचर्ड निक्सन ने फादर्स डे को औपचारिक छुट्टी का दिन घोषित किया। पौराणिक मान्यता के अनुसार फादर्स डे मनाने की शुरूआत अमेरिकन महिला सोनोरा स्मार्ट डोड ने इसलिए किया था क्योंकि उनके जन्म के तुरंत बाद उनकी मां की मौत हो गई थी, जिसके बाद उनके पिता ने उनका बेहद अच्छी तरह से पालन पोषण किया था। यह देख सोनोरा के मन में ख्याल आया कि एक दिन पिता के नाम भी होना चाहिए। 1 मई 1972 को ही राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 'फादर्स डे' को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया था। किसी भी बच्चे के लाइफ में जितनी अहम भूमिका मां की होती है उतनी ही पिता की भी होती है। लेकिन मदर्स डे सेलिब्रेशन की धूम ज्यादा देखने को मिलती है। ये अच्छा मौका होता है जब आप अपने पिता को हर उस चीज के लिए धन्यवाद कह सकते हैं, जो उनकी वजह से हासिल हुई हैं। इसे सेलिब्रेट करने का कोई प्रचलित तरीका नहीं है। जहां कोई गले मिलकर, गिफ्ट देकर इसे मनाता है वहीं कुछ लोग फादर्स के साथ ट्रिप प्लान कर, उन्हें लंच या डिनर पर ले जाकर इसे स्पेशल बनाते हैं। पिता अपने परिवार के लिए प्रतिदिन कार्य करते हैं और उससे जो भी पूंजी प्राप्त होती है, वह परिवार के सुख के लिए लगा देते हैं। यदि आसान शब्दों में कहे तो पिता हमारे परिवार का एक महत्वपूर्ण आधार होता है, जो किसी भी तरह की समस्याओं से लड़ने के लिए तैयार रहते हैं। पिता के बारे में जितना कहे उतना कम है। पिता परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों में से एक होते हैं। वह अपनी खुशियों का बलिदान देकर अपने बच्चों और परिवार की खुशियों का ध्यान रखते हैं। वह अपने बच्चों

से प्यार भी करते हैं और बच्चे गलत कार्य करते हैं तो उन्हें डांटते भी है, अपने बच्चों के बेहतर भविष्य और खुशी के खातिर वे मेहनत करने से कभी नहीं कतराते हैं। इसलिए हर साल पिता के सम्मान के लिए फादर्स डे मनाया जाता है। यह दिवस इसीलिए भी मनाया जाता है क्योंकि जिन लोगों के पिता नहीं होते हैं उन्हें पिता का महत्व तथा उनकी कमी का अनुभव ना हो। जिन लोगों के पिता की मृत्यु हो जाती है वह भी इस दिवस को बड़े अच्छे से मनाते हैं। समय के साथ आजकल के लोग इतने व्यस्त हो गये हैं, कि अपने सपने के पीछे घर को समय नहीं दे पाते हैं। यद्यपि वे अपने माता पिता से बहुत अधिक प्रेम करते हैं, किन्तु वे अपने प्रेम को दर्शाने का समय नहीं पा सकते है. ऐसे में यह एक दिन बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस दिन सभी बच्चे अपने पिता के प्रति कृतज्ञता जाहिर करने के लिए या तो औपचारिक छुट्टी लेते हैं, अथवा सरकार की तरफ से स्वयं छुट्टी घोषित की जाती है। इस दिन बच्चे सारा दिन अपने पिता के साथ गुजारते हैं, जिससे उनके बीच आई दूरियां कम हो जाती है। इस दिन बच्चे चाहे विदेश में भी होते हैं, तो इस दिन के बहाने अपने घर वापस आ जाते है। जिस तरह माँ पर मदर्स डे मनाया जाता है और इसका जीवन में अत्यधिक महत्व है, उसी तरह इस दिन का भी महत्व लोगों में बहुत अधिक है, इसलिए लोग फादर्स डे के रूप में इसे सेलिब्रेट करते हैं। स्वयं इस दिन के मायने सभी बच्चों के लिए खास हैं क्योंकि अपने बच्चों के प्रयासों को देखकर इस दिन पिता बहुत खुश रहते हैं। अतः बच्चे अपनी इच्छा पिता के सामने रख सकते हैं। इस दिन परिवार एक साथ रहता है। परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्य अपनी भावनाएं साझा करते हैं, जिससे एक दूसरे के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त होती है और उन्हें समझने में आसानी होती है। इससे उनके स्वभाव के बारे में भी पता चलता है और पिता अपने परिवार के सदस्यों से वैसे ही बर्ताव करते हैं। इस दिन बच्चों को नए नए पकवान खाने को मिलते हैं। कुछ लोग अपने पिता के लिए केक भी लाते हैं, जिसको पूरा परिवार मिलकर खाता है। इस तरह से बहुत सारी मिठाई और केक खाने को मिलता है। इस दिन पिता के सामने हम अपनी कोई भी गलती रखते हैं तो वह उस गलती को माफ भी कर देते हैं। यदि गलती बड़ी हो तो उसे अपने स्तर पर समझाने की कोशिश करते हैं। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि पिता हमारे जीवन में कितने महत्वपूर्ण और अलौकिक सदस्य हैं। फादर्स डे के दिन पिता का अतिरिक्त प्यार प्राप्त होता है। वह अपने बच्चों से इतने प्रसन्न रहते हैं कि उन्हें किसी और चीज की आवश्यकता नहीं होती है। यह वह दिन होता है जिससे हमें कई लाभ प्राप्त होते हैं चाहे वह गलतियां माफ करना हो या पिता के साथ कहीं घूमने जाने की प्लानिंग हो।

फादर्स डे यानि पिता दिवस मनाने के तरह-तरह के तरीके आजकल लोग इस्तेमाल करते हैं। पिता दिवस का दिन जितना किसी पिता के लिए महत्वपूर्ण होता है, उतना ही उनके बच्चों के लिए महत्वपूर्ण होता है। फादर्स डे के दिन अपने आदर को प्रकट करने के लिए आप निम्नलिखित तरीके अपना सकते हैं। इस दिन आप अपने पिता को सुन्दर फादर्स डे का कार्ड देकर उनका मान बढ़ा सकते हैं। बाजार में कई काड्र्स की दुकाने हैं, जहाँ से आप फादर डे थीम पर तरह तरह के कार्ड प्राप्त कर सकते हैं। कई बार ऐसी स्थिति हो जाती है कि बच्चे पिता को वह सभी बातें नहीं कह पाते हैं, जो वे अपने पिता के प्रति सोचते हैं। अतः इन कार्ड में आप अपने पिता के लिए अपने मन की बात भी लिख सकते हैं। आप अपने पिता के लिए खुद से तरह-तरह की शायरी व कवितायें लिख कर भी अपना प्रेम व्यक्त कर सकते हैं। यह एक अनोखी प्रक्रिया होगी, जिसके अंतर्गत आपके समस्त भाव एक सुन्दर रूप में समने आयेंगे। आप अपने जमा किये अथवा कमाए पैसे की सहायता से अपने पिता को गिफ्ट दे सकते हैं। आपको यह तो पता ही होगा कि आपके पिता की सबसे पसंदीदा चीज अथवा मिठाई आदि क्या है? आप अपने पैसे से अपने पिता के लिए यह खरीद सकते हैं। आप चाहें तो अपने पिता के लिए छोटी सी सरप्राइज पार्टी भी रख सकते हैं, इससे आपके पिता को यह ज्ञात होगा कि आप जिम्मेदार हो चुके हैं। इस दिन आप अपने पिता को उनके पसंदीदा स्थान पर भ्रमण कराने के लिए ले जा सकते हैं, अथवा ऐसी जगह जहाँ पर आपके पिता जाना चाहते हैं, पर अब तक नहीं जा पायें हैं। इससे यह दिन आप और आपके पिता के लिए यादगार हो जायेगा।

बहरहाल, जीवन में माता-पिता का ऐहसासों में माँ का प्यार अपने बच्चों के प्रति जो भाव देता है तो उससे कही ज्यादा एक पिता का अपने बच्चों के जीवन को नई दिशा और भविष्य बनाने में मील का पत्थर साबित होता है और अपने बच्चों के वह सपने जो नामुमकिन दिखते हैं, फिर भी उसे मुमकिन बनाने के लिए एक पिता सबकुछ करता है। आज ऐसे ही कई सच्ची कहानियां का उदाहरण पिता दिवस को सप्रेम भेंट में करते हुए हुए चर्चा करते हैं, जिसमें पिता ने अपने बच्चों के सपनों को पूरा करने में सफलता पायी और पिता द्वारा उन सपनो का पूरा किये जाने में उनके बच्चों ने जो अहम भूमिका निभायी तथा समाज में ख्याति प्राप्त कर गये। आइए जानते हैं :-

☞ **गरीबी में पिता ने ठेले पर पान बेचकर पढ़ाया, आज बेटी कम्पनी की CEO बन चुकी है :-** एक दौर था जब लोग ये कहा करते थे, "अगर किस्मत में होगा तो सफलता एक दिन जरूर मिलेगी।" लेकिन आज का दौर ऐसा है कि जब तक आप परिश्रम ना करेंगे, तब तक सफलता आपके कदमों को नहीं चूमेगी। आज की हमारी यह कहानी एक ऐसी महिला की है, जिन्होंने अपने परिश्रम के बदौलत सफलता को अपने कदमों में झुकाया और आज लोगों को भी रोजगार दे रही हैं। एक दौर ऐसा था, जब उनके पिता पान के ठेले से आजीविका चलाया करते थे और आज एक दौर ऐसा है कि उनकी बेटी कम्पनी में सीइओ हैं।

महाराष्ट्र के एक छोटे से शहर अकोला के रहने वाले एक ऐसे पिता जिनकी गरीबी ने कमर तोड़ रखी थी। वह अपने परिवार के आजीविका के लिए ठेला लगाकर पान बेचा करते थे। इसी से उनके परिवार का गुजारा चलाता था। ये पिता गरीब तो था, लेकिन चाहता था कि उसके

बच्चे शिक्षा हासिल कर कामयाबी की सीढ़ी चढ़ें, जिससे उन्हें गरीबी का सामना ना करना पड़े और वो गरीबी को पछाड़ते हुए सफलता हासिल करे। उस पिता के सिर पर उसकी पत्नी और 3 बच्चों की जिम्मेदारी थी, परन्तु काम मात्र पान बेंचना। अब उन्होंने अन्य नौकरी की तलाश की तब उन्हें एक बैंक में जॉब मिली, जो रिकरिंग एजेंट का था। इस जॉब में उन्हें लोगों के यहां जाना था और उनसे पैसे लेकर बैंक में डिपोजिट करना था। अब आप ये सोंच रहे होंगे कि ऊपर पंक्तियों में एक महिला की सफलता का जिक्र किया गया है, लेकिन यहां एक पिता के विषय में क्यों बताया जा रहा है? इसका उत्तर ये है कि वे वही पिता हैं, जिनकी छोटी बेटी ***काजल राजवैद्य*** हैं। आज काजल किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उन्हें आज हर एक शख्स जानता है, क्यूंकि वो सफलता की उस ऊंचाई पर पंहुची हैं जहां जाना हर युवा की ख्वाहिश होती है। काजल राजवैद्य ने चौथी क्लास तक की शिक्षा नगर परिषद विद्यालय से हासिल की। परन्तु आगे व्यवस्था कुछ खास नहीं था जिससे वह आगे की शिक्षा हासिल करें। वह पढ़ने में तेज-तर्रार थी, परन्तु वित्तिय स्थिति सही नहीं होने के कारण शिक्षा के रास्ते में गरीबी बाधा बन रही थी। ऐसे में उन्होंने आगे की शिक्षा "मनुताई कन्या शाला" से ग्रहण की। दरअसल ये वही स्कूल है, जिसके लिए सन 1911 में मनुताई बापट नाम की महिला ने युद्ध किया था। ये युद्ध इसलिए था कि महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने का अवसर दिया जाए, ताकि वह खुद के पैरों पर खड़ा हो सकें। स्कूल जाने के लिए उनके पास पैसे नहीं थे, जिस कारण वह 4 किलोमीटर की लंबी दूरी पैदल तय किया करती थीं। उन्होंने अपनी कठिनाइयों को रास्ता बनाया और आगे बढ़ते हुए सफलता की इबारत लिखने के लिए तैयार होती रहीं। ये बचपन की बात है जब वह टीबी पर रोबोट्स का प्रोग्राम देख रहीं थी, उसी वक्त उन्होंने ये तय कर लिया था कि वह रोबोट्स से जुड़ी ही शिक्षा ग्रहण करेंगी। अब उन्होंने पॉलिटेक्निक में दाखिला लिया और इलेक्ट्रॉनिक सब्जेक्ट से पढ़ाई जारी की, ताकि रोबॉट्स के सपने को पूरा कर सकें। जिंदगी का पहिया अच्छा खासा चल रहा था तब तक एक कठिनाई और सामने आ गई। उनके पिता का जॉब छूट गया, क्योंकि बैंक में ताला लग गया। अब उन्होंने ये निश्चय की घर की आर्थिक स्थिति में मदद करने के लिए डिप्लोमा के बाद नौकरी करेंगी। परन्तु उनके पिता की चाहत बच्चों को सफलता की ऊंचाई पर पंहुचना था, इसलिए उन्होंने हार नहीं मानी और 3 लाख रुपए की राशि लोन लेकर काजल की इंजीनियरिंग पूरी कराई। उनकी पढ़ाई सम्पन्न होने के बाद जब कैम्पस सिलेक्शन हुआ तो मात्र 5 हजार का जॉब ऑफर किया गया। उस दौरान उन्हें जोर का झटका लगा क्योंकि, ये जॉब 12वीं के छात्रों को दिया जा रहा था। अब उन्होंने ये पश्न पूछा कि आखिर इंजीनियरिंग करने के बाद भी ये जॉब उन्हें क्यों मिला तो उत्तर मिला कि उनके पास सिर्फ डिग्री है प्रेक्टिकल नहीं। अब उन्होंने प्रेक्टिकल के क्षेत्र में ज्ञान बढ़ाने का निश्चय किया। क्योंकि 5 हजार के जॉब से वह अपने पढ़ाई में लिए गए लोन को कभी नहीं चुका पाती। काजल के पास कोई तकनीकी चीजें नहीं थी, जैसे मोबाइल या लैपटॉप; जिससे वह जानकारी हासिल करें। अब उन्होंने खर्च के लिए बच्चों को पढ़ाना प्रारंभ किया और कैफे से रोबोटिक्स के विषय में जानकारी कलेक्ट करने लगीं। उन्होंने स्वयं एक सिलेबस तैयार किया और पुणे गईं और कॉलेज में जाकर बच्चों को प्रेक्टिकल के महत्व को समझाने लगीं। लेकिन यहां बच्चों को सिर्फ अंकों में रुचि थी, डिग्री में नही। अब उन्होंने पांचवीं कक्षा के बच्चों को रोबोटिक्स के विषय में सिखाना प्रारम्भ किया। उन्होंने स्वयं रोबोटिक्स वर्कशॉप का निर्माण किया। उन्होंने स्कूल का दौरा करना प्रारम्भ किया, ताकि बच्चों को वर्कशॉप से रू-ब-रू कराएं। लेकिन इस बीच समस्या ये आती की लोग उनसे कम्पनी के विजिटिंग कार्ड तथा नाम पूछते थे। अब उन्होंने वर्ष 2015 मे नींव रखी। यहां विजय भटाड़ एवं अर्जुन देवराकर ने उनकी मदद की जिससे Kajal Innovation & technical solution (KITS) की कम्पनी सफलता की ऊंचाई पर पंहुची। आज उनके कम्पनी में अमेरिका के क्लाइंट भी मौजूद हैं।

इतना व्यस्त शेड्यूल होने के बावजूद भी वह अपने शुरुआती स्कूल जाया करती और लड़कियों को रोबोटिक्स के विषय में बताती। इसी दौरान उन्हें एक कम्पटीशन में मौका मिला ताकि बच्चों को रोबोटिक्स के लिए तैयार कर सकें। उन्होंने 2 टीमों को तैयार किया जिसमें उन्हें एक टीम से सफलता मिली और उनकी कम्पनी का डिमांड बढ़ गया और हजारों ऑफर सामने थे परन्तु उन्होंने अपने स्कूल की बच्चियों को तैयार करने का रास्ता चुना। अब काजल अपने निवास स्थान अकोला आई और यहीं पर दफ्तर खोल दिया। वह मनुताई कन्या शाला जाती और बच्चियों को सिखाती। एक प्रतियोगिता के दौरान यहां की बच्चियों को जब एंट्री नहीं मिली तब उन्होंने ये निश्चय किया कि अब वह उन सबको अंतराष्ट्रीय लेवल के कम्पटीशन के लिए तैयार करेंगी। एक प्रतियोगिता जिसका नाम फर्स्ट लेगो लीग था उसके लिए तैयारी करना प्रारंभ किया। हालांकि इसके लिए समय बहुत कम था परन्तु उन्होंने हर नहीं मानी बच्चियों की सारी जिम्मेदारी उठाते हुए अपना कार्य जारी रखा। एक वक्त ऐसा आया जब उन्हें व्हील चेयर पर बैठना पड़ा, क्योंकि उनके पैर में चोट लग गया था। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और अपना कार्य जारी रखा। अब वो दिन आ गया जब प्रतियोगिता हुई। यहां जो बच्चे फर्स्ट रैंक पर आते वह अमेरिका जो सेकेंड रैंक पर आते। वह जापान और तीसरे रैंक पर आते वह सिंगापुर जाने वाले थे। अब सबको रिजल्ट का इंतजार था। रिजल्ट ऐसा आया जिससे, सब चौक गयें, क्योंकि रिजल्ट में पहला स्थान मनुताई कन्याशाला की बच्चियां लाईं।

☞ **मजदूर पिता ने सब कुछ गिरवी रखकर 3 बेटों को बनाया पायलट** :- 'कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों'। इस कहावत को चरितार्थ कर दिखाया है मध्य प्रदेश के एक पिता ने। जिन्होंने अपने बेटों को पायलट बनाने के लिए सब कुछ दांव पर लगा दिया और उन्हें पायलट बनाकर ही दम लिया। यह कहानी है मूल रूप से मुरैना के रहने वाले दिहाड़ी मजदूर अमृतलाल की। जिन्होंने अपना सब कुछ दांव पर लगाकर तीनों बेटों को पायलट बनाया। अमृतलाल ने अपने बेटों की पढ़ाई के लिए खूब सारा कर्ज लिया। यहां तक कि पुश्तैनी जमीन को भी साहूकारों के पास गिरवी रख दी। बेटों ने भी पिता के इस अथक प्रयास को देखकर मन लगाकर पढ़ाई की और आज तीनों पायलट हैं। मीडिया से बात करते हुए बड़े बेटे कैप्टन अजय ने बताया कि उनकी और उनके भाइयों की पढ़ाई केंद्रीय विद्यालय से हुई है। पिताजी के पास इतने पैसे नहीं थे कि वे उन्हें महंगे स्कूल में पढ़ाते। ऐसे में उन्होंने फीस के लिए पुश्तैनी जमीन को गिरवी रख दी और मजदूरी करने लगे, ताकि घर चल सके। स्कूल के बाद पिता जी ने आगे की पढ़ाई के लिए एजुकेशन लोन भी लिया।

अजय कहते हैं कि हम तीनों भाईयों ने पिताजी के संघर्ष को काफी नजदीक से देखा है। उन्होंने हमें पढ़ाने के लिए अपना सबकुछ दांव पर लगा दिया था। क्योंकि पायलट बनने के लिए जो फ्लाइट सिम्युलेटर का इस्तेमाल किया जाता है वो काफी महंगा होता है। यही कारण है कि पायलट बनने का सपना सिर्फ अमीरों के बच्चे ही देखते हैं। लेकिन अब अजय अपने पिता के साथ मिलकर एक ऐसे फ्लाइट सिम्युलेटर पर काम कर रहे हैं जो वर्तमान में इस्तेमाल हो रहे फ्लाइट सिम्युलेटर से काफी सस्ता होगा। यानी अब आम आदमी के बच्चे भी पायलट बनने का सपना देख सकते हैं। अजय और उनके पिता अब तक इस सिम्युलेटर पर 25 लाख रूपये तक खर्च कर चुके हैं। हालांकि, अभी पूरा काम होना बाकी है। क्योंकि इसमें अभी और पैसे लगेंगे। ऐसे में कैप्टन अजय चाहते हैं कि आगे इस सिम्युलेटर को बनाने

में सरकार उनकी सहायता करे, क्योंकि अभी इसमें काफी उपकरण खरीदने बाकी हैं जो थोड़े महंगे और संवेदनशील हैं। इस मामले को लेकर अब कैप्टन अजय समेत तीनों पायलट भाई और उनके पिता अमृतलाल, केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से मुलाकात करेंगे।

☞ **किसान के बेटे ने गरीब बच्चों के लिए खोला गली स्कूल :-** उत्तरप्रदेश के प्रयागराज में एक ऐसा गली स्कूल है, जहां पर झुग्गी-झोपड़ी और बस्तियों में रहने वाले बच्चे पढ़ाई करते हैं। इस गली स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता कबाड़ बीनने या मजदूरी करने का काम करते हैं। आर्थिक तंगी के चलते इन बस्तियों में रहने वाले ये बच्चे स्कूल नहीं जा पाते। कई बार बस्तियों में रहने वाले बच्चे के माता-पिता इन्हें पढ़ाना भी नहीं चाहते और काम पर लगा कर पैसे कमाने भेजते हैं, पर प्रयागराज के कीडगंज इलाके में बना यह गली स्कूल, झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले इन बच्चों के सपनों के पूरा करने के काम कर रहा है और इस स्कूल को शुरू किया है जौनपुर के रहने वाले विवेक दुबे ने। एक किसान परिवार के बेटे होते हुए भी विवेक अपने सपनों को छोड़कर इन बच्चों का जीवन संवार रहे हैं।

बता दें कि विवेक के पिता एक किसान हैं और खेती से उनके पूरे परिवार का खर्चा चलता है। विवेक के एक भाई का देहांत बहुत पहले हो गया था और अब विवेक अपने पिता के इकलौते बेटे हैं। उनके पिता बेटे को पढ़ा-लिखा कर कामयाब इंसान बनाना चाहते थे, इसलिए विवेक को प्रयागराज पढ़ने के लिए भेजा। पहले तो सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन सड़क किनारे छोटे बच्चों को काम करते देख विवेक के सपनों का मंजिल बदल गई। ईसीसी कॉलेज से बीएससी करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एमएससी में पढ़ रहे थे, पर फिर उन्होंने साल 2016 में थर्ड सेमेस्टर में पढ़ाई छोड़ दी, ताकि इन बच्चों को पढ़ा सकें। उन्होंने प्रयागराज के कीडगंज इलाके के पुराने पुल से लेकर नए पुल तक बने सभी झुग्गी-बस्तियों में बच्चों को पढ़ाने का काम शुरू कर दिया। यही नहीं इस बस्ती की गली में एक छोटा स्कूल भी खोल दिया, ताकि बस्तियों में रहने वाले बच्चों को अच्छी शिक्षा दी जा सके। विवेक इस बस्ती को अच्छा करने की कवायद में जुटे हैं। 270 बच्चे इस स्कूल में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यही नहीं इन बच्चों ने तकनीकी रूप से भी अपने आप को मजबूत कर लिया है। गली के इस स्कूल में 12 नन्हें वैज्ञानिक ऐसे है जिन्होंने कबाड़ के सामान से कूलर, टेबल फैन, गोबरगैस प्लांट, सब्जी कटर, सोलर लैंप जैसी रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले सामानों को बनाया है। इसी झोपड़पट्टी में रहने वाले बादल ने अंधेरे में पढ़ने के लिए अपनी एक सोलर लाइट बनाई है, ताकि लाइट जाने पर अपनी पढ़ाई जारी रख सके। सागर ने अपना इलेक्ट्रिक पंखा बनाया है तो समीर ने अपने लिए इलेक्ट्रिक कूलर। वही शालू ने वैक्यूम क्लीनर बनाया है। सबसे खास बात यह है कि सारा सामान कबाड़ के सामान को इकट्ठा करके बनाया गया है। अब बहुत से बच्चों का दाखिला विवेक ने सरकारी स्कूलों में करवा दिया है।

☞ **अफसर ने गरीब पिता से कहा चपरासी के लायक नहीं है आपका बेटा :-** हम सब जानते हैं कि यूपीएससी की परीक्षा पास करना कितना कठिन होता है, लेकिन कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जिन्हें लोग सरफिरा कहते हैं और वो सरफिरे लोग कुछ भी कर गुजरते हैं। संघर्ष जीवन का दूसरा नाम होता है। कोई भी व्यक्ति अगर अपने मन में कुछ बनने की ठान लेता है तो वो कर के दिखाता है। वो शख्स कोई भी मुकाम हासिल कर सकता है। सफलता पाने के लिए बस जरूरी है कि पूरी इच्छाशक्ति और मेहनत के साथ काम किया जाए। सफलता उसे ही प्राप्त होती है जो कड़ी मेहनत और लगन से अपने मंजिल को पाने की चाह रखे। ऐसा ही कुछ करके दिखाया मनीराम शर्मा ने। आज हम आपको मनीराम शर्मा के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनके पिता मजदूरी कर गुजर-बसर करते थे और मां दृष्टिहीन थीं। गरीबी से जूझ रहे परिवार में खुद मनीराम शर्मा बहरेपन का शिकार थें। उन्हें सुनाई नहीं देता था। ऐसे शख्स ने हौसला ना हारते हुए यूपीएससी की परीक्षा दी और सफलता हासिल करके दिखाया।

मनीराम शर्मा राजस्थान के अलवर के एक छोटे से गांव बंदीगढ़ के रहने वाले हैं। गांव ज्यादा संपन्न ना होने के कारण बुनियादी सुविधाओं से अछूता था। यहाँ तक के उस गांव में कोई स्कूल नहीं था। मनीराम शर्मा गांव से 5 किलोमीटर दूर एक स्कूल में पढ़ाई करने जाते थे। यह उनके लिए बहुत ही कठिन था। लेकिन उन्होंने कभी भी हार नहीं मानी और अपने सफलता के लिए हमेशा आगे बढ़ते गए। आपको बताते चलें कि मानीराम राज्य में 12वीं की परीक्षा में टॉप करने के बाद उनके दोस्तों ने घर पर आकर उनके पिता और मनीराम शर्मा को ये खुशखबरी दी। पिता भी बच्चे की सफलता की चर्चा सुनकर काफी खुश हुए। बेटे के सफल होने के बाद वो बीडीओ के पास चपरासी की नौकरी के लिए ले गए। बीडीओ ने कहा कि ये लड़का तो सुन ही नहीं सकता, इसे ना तो घंटी सुनाई देगी ना ही किसी की आवाज, ये मेरे किसी काम का नहीं हैं। इस दौरान मनीराम शर्मा के स्कूल के प्रिंसिपल ने उनके पिता को बेटे की आगे की पढ़ाई के लिए सलाह दी। बताते चले आगे की पढ़ाई उन्होंने अलवर के एक डिग्री कॉलेज से की है। यहां उन्हें लिपिक वर्ग में पढ़ने का मौका मिल गया। यहां से उन्होंने अपनी ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी की, फिर पीएचडी की पढ़ाई पूरी की। मनीराम अभी तक अपने साथ हुए भेदभाव को भूले नहीं थें। उन्होंने इस दौरान यूपीएससी की तैयारी कर आईएएस अधिकारी बनने

की ठान लिया। आपको बता दे मनीराम शर्मा ने कॉलेज के दूसरे प्रयास में राजस्थान पब्लिक सर्विस कमीशन की परीक्षा को पास कर लिया। इसके बाद उन्होंने क्लर्क का पद हासिल किया। इतना ही नहीं आगे उन्होंने विश्वविद्यालय में भी टॉप किया और नेट के एक्जाम को पास कर लेक्चरर भी बन गए। अपने हर कदम पर वो मेहनत के दम पर सफलता हासिल कर वो आगे बढ़ते जा रहे थें। पढ़ाई लिखाई में अच्छा होने के कारण मनीराम शर्मा ज्यादातर परीक्षाओं में सफल हो जाते थें। लेकिन अपने बहरेपन के कारण उन्हें उसके बाद का संघर्ष करना था। इस दौरान यूपीएससी की परीक्षा को पास करने के बाद भी उन्हें आईएएस बनने में करीब 15 साल तक लग गए। उन्होंने लगातार 2005, 2006 और 2009 में आईएएस की परीक्षा पास की। लेकिन उनके बहरेपन के कारण उनका सेलेक्शन नहीं किया जा सका। इसके बाद साल 2009 में वो फिर से आईएएस की परीक्षा में पास हो गए। ये तीसरी बार था जी मनीराम ने परीक्षा पास की थी। इसके बाद उन्होंने कान का ऑपरेशन करवाया। इस ऑपरेशन में उन्हें 8 लाख रुपए चुकाने थें। मनीराम कहते हैं कि ये रकम किन लोगों ने इकट्ठी की उन्हें इसके बारे में नहीं पता। इस रकम को काफी लोगों से जुटाया गया था। इसके बाद उनका सफलतापूर्वक कान का ऑपरेशन हुआ। मनीराम अब सुन सकते थें। इस दौरान उन्हें आईएएस अधिकारी बना दिया गया। मनीराम शर्मा को पहली बार हरियाणा में नूंह जिले में उपायुक्त बनाया गया। हालांकि अभी वो और फिलहाल अब वे पलवल जिले के उपायुक्त है। कहते हैं कि अगर इंसान कुछ करने का ठान ले तो वो उसे हासिल कर ही लेता है इंसान की जिद्द के आगे कभी-कभी भगवान को भी झुकना पड़ता है और भगवान को झुकाने का काम वही कर सकता है जो कड़ी मेहनत से न डरता हो ऐसे जाने कितने लोग होंगे जिन्हें हम जानते ही नहीं यहां तक कि हम खुद अपने आपमे एक कहानी होते हैं लेकिन हम अपने आपको तब पहचानते हैं जब हमारे साथ भी ऐसी कोई घटना हो।

☞ **गरीबी से जंग जीतकर कैसे IAS बना जूते बेचने वाला लड़का :-** पूरे देश में लाखों बच्चे सिविल सर्विस में जाने की तैयारी करते हैं। कई बार गरीब परिवार से आने वाले बच्चे कड़े संघर्ष से समाज सेवा वाली इस सबसे प्रतिष्ठित नौकरी में जा पाते हैं। जिम्मेदारियों के बोझ तले बच्चे समय निकालकर पढ़ाई करते हैं। ऐसे ही राजस्थान के रहने वाला एक लड़का पिता का हाथ बंटाने काम में तो उतर गया, लेकिन उसने अफसर बनने के अपने सपने को भी जिंदा रखा। उनके परिवार ने कभी उन्हें जिम्मेदारियों की भट्टी में नहीं झोंका, लेकिन परिवार के हालात समझते हुए उन्होंने खुद यह निर्णय लिया और बन गये परिवार का संबल। आज जानते हैं एआईआर रैंक 6 पाने वाले शुभम गुप्ता की कहानी, जिनका बचपन भी जिम्मेदारियां निभाते बीता पर वे कभी हताश नहीं हुए। आईएएस सक्सेज स्टोरी में हम आपको बताएंगे कैसे जूते बेचने वाले शुभम गुप्ता ने कड़े संघर्ष और साहस से यूपीएससी पास की और अफसर बनने का ख्वाब पूरा किया।

शुभम की प्रारंभिक शिक्षा जयपुर, राजस्थान से हुई पर काम के सिलसिले में उनके पिताजी को महाराष्ट्र में घर लेना पड़ा। तीन भाई-बहनों में सबसे छोटे शुभम और उनकी बहन भाग्यश्री का स्कूल उनके घर से काफी दूर था। स्कूल पहुंचने के लिये उन्हें रोज सुबह ट्रेन पकड़नी पड़ती थी। वापस आते शाम के तीन बजते थे। शुभम के पिता ने महाराष्ट्र के छोटे से गांव दहानू रोड पर रहने लगे और वहीं एक छोटी से दुकान खोल ली। आर्थिक तंगी के दिन थे और शुभम को लगा कि चूंकि बड़े भाई कृष्णा आईआईटी की तैयारी के लिये घर से दूर हैं तो यह उनकी जिम्मेदारी बनती हैं कि वे पिताजी की मदद करें। शुभम स्कूल से आने के बाद चार बजे तक दुकान पहुंच जाते थे और रात तक वहीं रहते थे। यहीं वो समय निकालकर पढ़ाई भी करते थे। इस समय शुभम 8वीं कक्षा में थे। 8वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक यानी पांच साल उन्होंने ऐसे ही जीवन जिया। इसी वजह से न उनको दोस्त बने, न उन्होंने कोई स्पोर्ट खेला, क्योंकि उनके पास इन सब के लिये समय ही नहीं था। शुभम का दसवीं का रिजल्ट आया तो उन्होंने बहुत ही अच्छे अंक पाए थे। सबने सलाह दी कि साइंस चुनो पर उन्हें कॉमर्स पसंद थी। 12वीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए वे दिल्ली आ गए। यहां वे श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स में एडमीशन लेना चाहते थे, जो किसी कारण से नहीं हो पाया। इससे वे काफी हताश हुए। तब उनके बड़े भाई ने हमेशा की तरह उन्हें समझाया कि जहां एडमीशन मिला है, वहीं अच्छा करो। शुभम ने ऐसा ही किया। इसके बाद उन्होंने दिल्ली के एक कॉलेज से बी.कॉम और उसके बाद एम.कॉम पूरा किया। इसके बाद उन्होंने सिविल सर्विसेस में जाने का मन बनाया। उनके पिता के जीवन में कई बार ऐसी स्थितियां आयीं कि उन्हें लगा कि काश उनका बच्चा अफसर बने। उन्होंने एक बार शुभम से यूं ही कह दिया कि तुम कलेक्टर बन जाओ और इस बात को बेटे ने दिल पर ले लिया। तब से शुभम के मन में आईएएस ऑफिसर बनने की एक दबी इच्छी थी, जिस पर समय आने पर उन्होंने काम करना शुरू किया। उन्हें सफलता भी मिली और आज उसी कॉलेज से उनके लिये सेमिनार में बोलने का न्यौता आया, जहां कभी उन्हें एडमीशन नहीं मिल पाया था। शुभम ने सबसे पहली बार 2015 में प्रयास किया पर प्री भी पास नहीं कर पाये। दूसरे प्रयास में शुभम का सेलेक्शन हो गया पर उन्हें रैंक मिली 366 इसके अंतर्गत मिलने वाले पद से वे संतुष्ट नहीं थे। उन्हें इंडियन ऑडिट और एकाउंट सर्विस में चुना गया था, जहां उनका मन नहीं भरा। इसलिये उन्होंने तीसरी बार साल 2017 में फिर परीक्षा दी, इस साल भी उनका कहीं चयन नहीं हुआ। इतनी बार हार का सामने करने के बावजूद भी शुभम का हौंसला कम नहीं हुआ और दोगुनी मेहनत से उन्होंने तैयारी की। इसी का परिणाम था कि चौथे प्रयास में शुभम न केवल सभी चरणों से सेलेक्ट हुये बल्कि उन्होंने 6वीं रैंक भी हासिल की। शुभम ने अपनी पिछली गलतियों से सबक लिया और हिम्मत हारने के बजाय डबल जोश के साथ परीक्षा दी। अपनी सालों की मेहनत का फल आखिरकार उन्हें मिला और उनका और उनके पिताजी का सपना साकार हुआ। शुभम की कहानी हमें यह सीख देती है कि अगर ठान लो तो मुश्किल कुछ भी नहीं। चाहे कितनी भी हार का सामना करना पड़े पर तब तक लगे रहो जब तक मंजिल न मिल जाये।

☞ **रिक्शा चलाने वाले गरीब बाप का बेटा बना IAS अफसर :-** बनारस शहर में एक बच्चा अपने दोस्तों के साथ खेलते-खेलते अपने ही एक दोस्त के घर में चला गया। जैसे ही उस दोस्त के पिता ने इस बच्चे को अपने घर में देखा वो गुस्से से लाल-पीले हो गये । दोस्त के पिता ने बच्चे पर चीखना-चिल्लाना शुरू किया। उसने ऊँची आवाज में पूछा, तुम कैसे मेरे घर में आ सकते हो? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे घर में आने की? तुम जानते हो तुम्हारा बैकग्राउंड क्या है? तुम्हारा बैकग्राउंड अलग हैं, हमारा अलग। अपने बैकग्राउंड वालों के साथ उठा-बैठा करो" ये कहकर दोस्त के पिता ने उस बालक को बाहर का रास्ता दिखा दिया। दोस्त के पिता के इस व्यवहार से बच्चा घबरा गया। उसे समझ में नहीं आया कि आखिर उसने क्या गलत किया है। उसे लगा कि दूसरे बच्चों की तरह ही वो भी अपने एक दोस्त के साथ खेलते-खेलते दोस्त के घर में चला गया था। दोस्तों के घर में तो हर बच्चा जाता है, फिर उसने क्या गलत किया? उस बच्चे के मन में अब 'बैकग्राउंड' के बारे में जानने की प्रबल इच्छा पैदा हो गयी। अपनी जिज्ञासा को दूर करने के लिए वो बालक अपने एक परिचित व्यक्ति के पास गया, जो कि पढ़ा-लिखा था और किसी बड़ी परीक्षा की तैयारी भी कर रहा था। इस परिचित व्यक्ति ने बालक को उसके सामजिक पृष्ठभूमि के बारे में समझाया। बालक को एहसास हो गया कि वो गरीब है और उसका दोस्त अमीर। उसके पिता रिक्शा चलाते हैं और उसकी सामाजिक परिस्थिति ठीक नहीं है। अचानक ही बालक ने उस

परिचित व्यक्ति से ये पूछ लिया कि सामाजिक बैकग्राउंड को बदलने के लिए क्या किया जा सकता है, तब अनायास ही उस परिचित के मुँह से निकल गया कि आईएएस अफसर बन जाओ, तुम्हारी भी बैकग्राउंड बदल जाएगी। शायद मजाक में या फिर बच्चे का उस समय दिल खुश करने के लिए उस परिचित ने ये बात कही थी। लेकिन, इस बात को बच्चे ने काफी गंभीरता से लिया था। उसके दिलोदिमाग पर इस बात ने गहरी छाप छोड़ी। उस समय छठी क्लास में पढ़ रहे उस बालक ने ठान लिया कि वो हर हाल में आईएएस अफसर बनेगा और जबसे ही उस बालक ने अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए जी-जान लगाकर मेहनत की। तरह-तरह की दिक्कतों, विपरीत परिस्थितियों और अभावों के बावजूद वो बालक आगे चलकर अपनी लगन, मेहनत, संकल्प के बल पर आईएएस अफसर बन गया। जिस घटना की यहाँ बात हुई है वो घटना गोविन्द जायसवाल के बचपन की सच्ची घटना है। रिक्शा चलाने वाले एक गरीब परिवार में जन्मे गोविन्द जायसवाल ने अपने पहले प्रयास में ही आईएएस की परीक्षा पास कर ली थी। आज वो एक कामयाब और नामचीन अफसर है। लेकिन, जिन मुश्किल हालातों और अभावों में गोविन्द ने अपनी पढ़ाई की वो किसी को भी तोड़ सकती हैं। अक्सर आम लोग इन हालातों और अभावों से हार जाते हैं और आगे नहीं बढ़ पाते। लेकिन गोविन्द ने जो हासिल कर दिखाया है वो बड़ी मिसाल है। गरीब परिवार में जन्म लेने वाले बच्चे-युवा और दूसरे लोग भी गोविन्द की कामयाबी की कहानी से प्रेरणा ले सकते हैं। गोविन्द के पिता नारायण जायसवाल बनारस में रिक्शा चलते थे। रिक्शा ही उनकी कमाई का एक मात्र साधन था। रिक्शे के दम पर ही सारा घर-परिवार चलता था। गरीबी ऐसी थी कि परिवार के सारे पाँचों सदस्य बस एक ही कमरे में रहते थे। पहनने के लिए ठीक कपडे भी नहीं थे। गोविन्द की माँ बचपन में गुजर गई थीं। तीन बहनें गोविन्द की देखभाल करती, पिता सारा दिन रिक्शा चलाते, फिर भी ज्यादा कुछ कमाई नहीं होती थी। बड़ी मुश्किल से दिन कटते थे। बड़ी-बड़ी मुश्किलें झेलकर पिता ने गोविन्द की पढ़ाई जारी रखी। चारों बच्चों की पढ़ाई और खर्चे के लिए पिता ने दिन-रात मेहनत की। कड़ाके की सर्दी हो, तेज गर्मी, या फिर जोरदार बरसात, पिता ने रिक्शा चलाया और बच्चों का पेट भरा। एक दिन जब गोविन्द ने ये देखा कि तेज बुखार के बावजूद उसके पिता रिक्शा लेकर चले गए, तब उसका ये संकल्प और भी मजबूत हो गया कि उसे किसी भी कीमत पर आईएएस बनना है। बचपन से ही गोविन्द ने कभी भी पिता और बहनों को निराश नहीं किया। भले ही उसके पास दूसरे बच्चों जैसी सुविधाएं ना हो, उसने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और हर परीक्षा में अव्वल नंबर लाये। गोविन्द के घर के आसपास कई फैक्ट्रियां थीं। इन फैक्ट्रियों में चलने वाले जेनरेटरों की आवाज परिवारवालों को बहुत परेशान करती थी। तेज आवाजों से बचने के लिए गोविन्द कानों में रुई डालकर पढ़ाई करता। और तो और, गोविन्द को कुछ लोग अक्सर ताने भी मारकर परेशान करते। उसे पढ़ता-लिखता देखकर आस-पड़ोस के कुछ लोग ताने मारते कि कितना भी पढ़ लो बेटा, चलाना तो तुम्हें रिक्शा ही है। लेकिन, गोविन्द पर इन बातों और तानों का कोई फर्क नहीं पड़ा। गरीबी के थपेड़े झेलते किसी तरह जिंदगी आगे बढ़ रही थी कि हालत उस समय और भी बिगड़ गए जब पिता के पाँव में सेप्टिक हो गया। सेप्टिक की वजह से पिता का रिक्शा चलाना नामुमकिन हो गया। घर-परिवार चलाने के लिए पिता ने रिक्शा किराये पर दे दिया। पिता की मेहनत की वजह से गोविन्द की बहनों की शादी हो पायी थी। इन सब के बीच गोविन्द ने ही अच्छे नंबरों से ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर ली। उसने आईएएस अफसर बनने का अपना सपना साकार करने के लिए कोचिंग लेने का मन बनाया। कोचिंग के लिए गोविन्द को बनारस से दिल्ली जाना पड़ा। दिल्ली में भी दिन मुश्किलों भरे ही रहे। छात्रों को ट्यूशन पढ़ाकर गोविन्द ने खर्चों के लिए रुपये जुटाए। कई बार तो गोविन्द ने दिनभर में सिर्फ एक बार भोजन कर अपना काम चलाया। आईएएस की परीक्षा में पास होने के मकसद से गोविन्द ने हर दिन कम से कम 12-13 घंटे तक पढ़ाई की। कम खाने और ज्यादा पढने से हालात ऐसे हो गए कि गोविन्द की तबीयत बिगड़ गयी और उसे डॉक्टर के पास ले जाना पड़ा। डॉक्टर ने सलाह दी कि अगर कुछ समय के किये पढ़ाई को नहीं रोका गया तो हालत और भी बिगड़ जाएगी और बहुत नुकसान होगा। लेकिन, सिर्फ लक्ष्य की ओर देख रहे गोविन्द ने किसी की ना सुनी और अपनी पढ़ाई जारी रखी। इस मेहनत और संकल्प का नतीजा ये निकला कि गोविन्द पहले ही प्रयास में आईएएस परीक्षा पास कर ली। गोविन्द ने आईएएस (सामान्य वर्ग) परीक्षा में 48वीं रैंक हासिल किया। गोविन्द ने हिंदी माध्यम से अव्वल नंबर पाने का खिताब भी अपने नाम किया। महत्वपूर्ण बात ये भी है कि गोविन्द को अपनी पढ़ाई और करियर के सम्बन्ध में परिवार से कोई मार्गदर्शन नहीं मिला। लेकिन, कठिनाइयों के दौर में बहनों ने गोविन्द का खूब साथ दिया। हमेशा उसकी हौसलाअफजाही की। गोविन्द की हर मुमकिन मदद की, माँ की तरह प्यार-दुलार दिया। कुछ दोस्तों और टीचरों ने भी समय-समय पर सही सलाह दी। आईएएस परीक्षा की तैयारी में दिल्ली के 'पतंजलि इंस्टीट्यूट' से भी मदद मिली। यहाँ पर धर्मेंद्र कुमार नाम के शख्स ने गोविन्द की सबसे ज्यादा मदद की। दिलचस्प बात ये भी है कि गोविन्द ने अपने जीवन में कभी शॉर्टकट रास्ता नहीं पकड़ा और बड़े ही योजनाबद्ध तरीके से पढ़ाई-लिखाई की। मेहनत बहुत ज्यादा की। अभावों को आड़े आने नहीं दिया। आईएएस परीक्षा के लिए विषय चुनने के विषय में भी गोविन्द की बात दिलचस्प है। गोविन्द के एक दोस्त के पास इतिहास की काफी किताबें थीं,

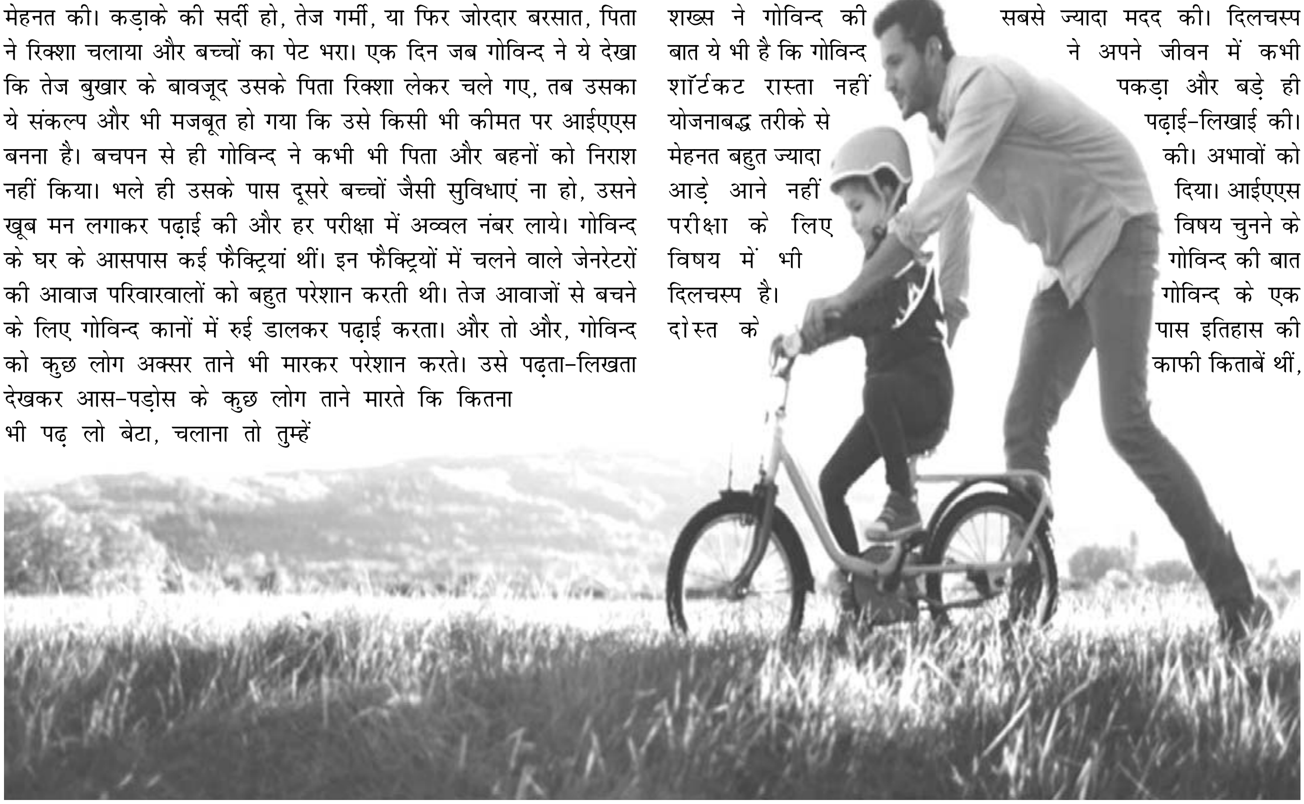

सो उसने इतिहास को मुख्य विषय चुना। दूसरा विषय दर्शनशास्त्र रखा, क्योंकि इसका सिलेबस छोटा था और विज्ञान पर उसकी पकड़ मजबूत थी। गोविन्द जायसवाल की ये कहानी लोगों को बहुत कुछ सिखाती है। अक्सर लोग गरीबी, तंग हालात और विपरीत परिस्थितियों को अपनी नाकामी की वजह बताते हैं। लेकिन, गोविन्द ने साबित किया है कि अगर हौसले बुलंद हो , मेहनत की जाए , संघर्ष चलता रहे तो अभावों और गरीबी में भी जीत हासिल की सकती है। सपनों को साकार करने के लिए परिस्थितियों और कठिनाइयों से घबराना नहीं चाहिए। अभावों को दूर करने लिए मेहनत और संघर्ष ही सफलता को सूत्र है। इस बात में भी दो राय नहीं कि अभाव के प्रभाव ने ही गोविन्द को एक बड़ी कामयाबी हासिल करने का दृढ़ संकल्प लेने पर मजबूर किया था । और, ये संकल्प पूरा हुआ कड़ी मेहनत और निरंतर संघर्ष की वजह से। गोविन्द की कहानी ये भी बताती है कि पृष्ठभूमि का भी कामयाबी पर असर नहीं पड़ने दिया जा सकता है। बैकग्राउंड अगर कमजोर भी हो तो मजबूत संकल्प और संघर्ष से सपनों को साकार किया जा सकता है।

☞ **पिता मजदूर, खुद ठेले पर बेची चाय, फिर बना IAS अफसर :-** एक आईएस अफसर, जिसने बचपन बेहद गरीबी में काटा, स्कूल जाने के लिए रोजाना 70 किमी का सफर किया। इतना ही नहीं पिता का हाथ बंटाने के लिए चाय की दुकान पर काम तक किया। लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। जी हां, हम बात कर रहे हैं आईएस हिमांशु गुप्ता की। उत्तराखंड के हिमांशु गुप्ता ने अपनी कड़ी मेहनत से यूपीएससी की परीक्षा पास की और आईएएस अफसर बने, लेकिन उनकी कहानी बस इतनी भर नहीं है। इसके पीछे है लगन, हिम्मत, जज्बा और विपरीत हालातों में कुछ कर गुजरने का जुनून। UPSC क्लियर कर IAS बनने वाले हिमांशु गुप्ता के पैरेंट्स स्कूल ड्रॉपआउट हैं। पिता दिहाड़ी मजदूरी करते थे। कमाने के लिए वो चाय का ठेला भी लगाते थे, फिर भी उन्होंने सुनिश्चित किया कि वह बेटे और बेटियों को स्कूल जरूर भेजेंगे।

'Humans of Bombay' फेसबुक पेज पर हिमांशु गुप्ता अपनी कहानी बताते हुए कहते हैं कि मैं स्कूल जाने से पहले और बाद में पिता के साथ काम करता था। स्कूल 35 किमी दूर था, आना-जाना 70 किमी होता था। मैं अपने सहपाठियों के साथ एक वैन में जाता था। जब भी मेरे सहपाठी हमारे चाय के ठेले के पास से गुजरते, मैं छिप जाता। लेकिन एक बार किसी ने मुझे देख लिया और मजाक उड़ाना शुरू कर दिया। मुझे चायवाला कहा जाने लगा, लेकिन उस ओर ध्यान देने के बजाय पढ़ाई पर ध्यान लगाया और जब भी समय मिला पापा की मदद की। हम सब मिलकर अपना घर चलाने के लिए रोजाना 400 रुपये कमा लेते थे। लेकिन मेरे सपने बड़े थे। मैं एक शहर में रहने और अपने और अपने परिवार के लिए एक बेहतर जीवन बनाने का सपना देखता था। पापा अक्सर कहते थे, सपने सच करने है तो पढाई करो! तो मैंने यही किया। मुझे पता था कि अगर मैं कड़ी मेहनत से पढ़ूंगा, तो मुझे एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में प्रवेश मिल जाएगा। लेकिन मुझे अंग्रेजी नहीं आती थी, इसलिए मैं अंग्रेजी मूवी डीवीडी खरीदता था और उन्हें सीखने के लिए देखता था। वो आगे कहते हैं कि मैं 2जी कनेक्शन वाले पापा के पुराने फोन का भी उपयोग करता और उन कॉलेजों की खोज करता, जिनमें मैं आवेदन कर सकता था। शुक्र है कि मैंने अपने बोर्ड में अच्छा स्कोर किया और मुझे हिंदू कॉलेज में प्रवेश मिल गया। मेरे माता-पिता को कॉलेज की अवधारणा के बारे में कोई जानकारी नहीं थी, फिर भी उन्होंने कहा, हमें आपकी क्षमताओं पर विश्वास है! मैं उन छात्रों के बीच अपरिचित परिवेश में था जो आत्मविश्वास से बोलते और आगे बढ़ते थे, लेकिन मेरे पास एक चीज थी जो मुझे सबसे अलग करती थी, वो थी-सीखने की भूख! मैंने अपनी कॉलेज की फीस भी खुद चुकाई, मैं अपने माता-पिता पर बोझ नहीं बनना चाहता था। मैं निजी ट्यूशन देता और ब्लॉग लिखता। 3 साल के बाद, मैं अपने परिवार में स्नातक करने वाला पहला व्यक्ति बन गया। इसके बाद मैंने अपने विश्वविद्यालय में टॉप किया। उसके कारण, मुझे विदेश में पीएचडी करने के लिए छात्रवृत्ति मिली, लेकिन मैंने इसे ठुकरा दिया क्योंकि मैं अपने परिवार को नहीं छोड़ सकता था। यह सबसे कठिन निर्णय था, लेकिन मैं रुका रहा और सिविल सेवा में शामिल होने का फैसला किया। बकौल हिमांशु गुप्ता बिना किसी कोचिंग के अपने पहले UPSC अटेम्पट में फेल हो गया, लेकिन आईएएस अधिकारी बनने का संकल्प और मजबूत हुआ, फिर मैंने दोगुनी मेहनत की और 3 और प्रयास किए। मैंने परीक्षा भी पास की, लेकिन रैंक हासिल नहीं की। लेकिन चौथे प्रयास के बाद मैं आखिरकार एक IAS Officer बन गया। तब मां ने मुझसे कहा कि बेटा, आज तुमने हमारा नाम कर दिया। हिमांशु गुप्ता कहते हैं माता-पिता को अपनी सैलरी देना एक यादगार पल रहा।

☞ **पिता हल्द्वानी में चलाते हैं गाड़ी, बेटे ने तीसरे अटेम्ट में टॉप किया UPSC सीडीएस एग्जाम :-** यूपीएससी संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) परीक्षा 2021 का फाइनल रिजल्ट 03 जून को अधिकारिक वेबसाइट पर घोषित हो चुका है। इस एग्जाम में उत्तराखंड के हल्द्वानी निवासी हिमांशु पांडे ने ऑल इंडिया स्तर पर पहला स्थान हासिल किया। हिमांशु पांडे ने यह एग्जाम कोई एक या दो साल में क्लियर नहीं किया, बल्कि यह मुकाम पांच तक निरंतर मेहनत के बाद पाया है। हिमांशु पांडे की मानें तो इस एग्जाम में वो कई बार असफल हुए, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। तीसरे अटेम्ट में वह हुआ, जिस पर अब हर कोई गर्व महसूस कर सकता है। बता दें कि हिमांशु पांडे के पिता कमल पांडे एक निजी कंपनी में चालक के पद पर तैनात है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, कमल पांडे खुद सेना का हिस्सा बनना चाहते थे। लेकिन किसी वजह से वो (कमल पांडे) सेना का हिस्सा नहीं बन सके। जब कमल पांडे खुद सेना में भर्ती नहीं हो सके तो बेटे को फौज में भेजने का सपना उनकी आंखों में तैरने लगा। इसके लिए वो अपने बेटे हिमांशु को प्रेरित भी करने लगे। हिमांशु पांडे ने सीडीएस परीक्षा की तैयारी 2017 से शुरू कर दी थी और 2017 में पहली बार एनडीए की परीक्षा दी। सीडीएस की तैयारी हिमांशु ने बीटेक की पढ़ाई के दौरान भी जारी रखी। बीटेक के बाद सीडीएस की तैयारी में जुट गए। तीन बार सीडीएस की परीक्षा दी। लिखित परीक्षा में हर बार सफल रहते, लेकिन पहली बार मेडिकल तो दूसरी बार में एसएसबी के साक्षात्कार में अटक गए। कई असफलताओं के बाद भी हिमांशु का हौसला नहीं टूटा। हिमांशु पांडे ने लगातार मेहनत करते रहे और तीसरे अटेम्ट में टॉप किया।

☞ **पिता ने प्यून की नौकरी करके अपने बेटे को IPS अधिकारी बनाया :-** पिता ने प्यून की नौकरी करके अपने बेटे को पढ़ाया तो बेटे ने भी पिता की मेहनत को देखा और यूपीएससी की परीक्षा पास कर आईपीएस अधिकारी बन माता-पिता का नाम रोशन किया। हम देखते हैं कि देश में बहुत से बच्चे अपने गरीब परिवार की स्थिति के बावजूद आगे बढ़ते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। उत्तर प्रदेश के पीलीभीत के नुरुल हसन के साथ भी ऐसा ही था। नुरुल हसन के पिता की आय घर और बच्चों की जरूरतों को पूरा नहीं कर पाती है, तो नूरुल हसन अपने पिता को अपने घर की देखभाल के लिए तभी से मदद कर रहे हैं। इसलिए नुरुल हसन को अपने जीवन में काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। नूरुल हसन ने तब यूपीएससी परीक्षा देने और सिविल सेवा में जाने का फैसला किया। नुरुल हसन ने 10वीं पास की और 11वीं में दाखिला लिया। उस समय उनके पिता का वेतन कम था और उनके परिवार की आर्थिक स्थिति खराब थी, इसलिए उन्हें उस समय एक छोटा सा घर किराए पर लेना पड़ा। कक्षा 12वीं तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, नूरुल हसन ने बी टेक प्रवेश परीक्षा लेने और कोचिंग शुरू करने का फैसला किया। उसके बाद उसके पिता ने बीटेक की फीस देकर नूरुल हसन की शिक्षा में प्रवेश लिया। नूरुल हसन

ने बीटेक की पढ़ाई शुरू करते हुए यूपीएससी परीक्षा पास करने का मन बना लिया। उसके बाद नुरुल हसन ने बीटेक की पढ़ाई पूरी की और एक कंपनी में काम करने लगे। तब नूरुल हसन का परिवार अच्छा चल रहा था और सारी मुश्किलें खत्म हो गई इसलिए नूरुल हसन ने अपनी नौकरी से यूपीएससी परीक्षा की तैयारी शुरू कर दी। नूरुल हसन ने यूपीएससी परीक्षाओं के लिए दिन-रात मेहनत की, यूपीएससी की परीक्षा पास की और आईपीएस अधिकारी बन गए, जिससे उनके माता-पिता प्रसिद्ध हो गए।

☞ **पिता चलाते हैं ऑटो, माँ ने बेटी की पढ़ाई के लिए गहने तक बेच डाले, बेटी बन गई बिहार टॉपर :-** आज भी गांव में लोग बेटियों को पढ़ाने में कतराते हैं, पर आज के युग में बेटियों ने ही अपने माता-पिता अपने क्षेत्र का नाम रोशन किया है। हम आज बात करेंगे बहुत ही गरीब परिवार में पैदा होने वाली एक लड़की की। उनके पिता भारे ऑटो चलाते थे। पैसे की कमी होने के बावजूद भी बिहार बोर्ड इंटरमीडिएट में टॉपर लिस्ट में शामिल होकर एक इतिहास रच दिया। वह लड़की कोई और नहीं, कल्पना है। कल्पना बिहार से सटे रक्सौल नगर परिषद वार्ड 22 के शिवपुरी टोला में टूटे-फूटे घर में रहती है। कल्पना दो बहन और एक भाई है। उसका भाई जो एयर फोर्स की तैयारी कर रहा है, घर में सबसे बड़ा है। अर्चना और वह खुद एक साथ पढ़ रही है। कल्पना की माता केवल थोड़ा लिखना पढ़ना जानती है तो वही पिता सातवीं पास है। कल्पना जो आज इंटरमीडिएट में बिहार टॉप हुई हैं, उसने उसके माता-पिता की ईमानदारी ने उसे इस मुकाम तक पहुंचाया। कल्पना के माता-पिता ने उसे पढ़ाने के लिए अपना गहना बेच दिया, लेकिन ट्यूशन की फीस जमा करने के लिए किसी से नहीं मांगी। बिहार इंटरमीडिएट रिजल्ट में पूरे बिहार में चौथा स्थान लाने का श्रेय कल्पना ने अपने माता पिता को दिया है।

☞ **पिता नहीं बन सके डॉक्टर तो 3 बेटीयो ने डॉक्टर बनकर पिता का सपना पूरा किया :-** आज भी गाँव खेड़ो में देखा जाता है की अधि कतर लोग अपनी बेटियों को 10वीं और 12वीं के बाद नहीं पढ़ाते हैं और उनकी शादी कर देते है। लेकिन राजस्थान के दक्षिण में बसे बोरवानिया गाँव के निवासी धुलेश्वर पारगी ने ऐसा नहीं किया। उनकी 4 बेटिया और एक बेटा है, लेकिन धुलेश्वर पारगी ने आर्थिक स्थिति खराब होने के बावजूद भी अपने इन 5 बच्चों की पढ़ाई में कोई कमी नहीं आने दी। जिसके बाद आज इनमे से कोई इंजीनियर है, तो को डॉक्टर और कोई नर्स और कोई अभी पढ़ाई कर रहा है। धुलेश्वर पारगी कहते हैं कि मैं भी डॉक्टर बनाना चाहता था, लेकिन मेरा ये सपना पूरा नहीं हो सका। लेकिन वो कहते है की जो माता पिता नहीं कर पाते उसे उनके बच्चे करते हैं, और ऐसा ही किया धुलेश्वर की बेटियों और बेटे ने। धुलेश्वर बताते है की जब बच्चे छोटे थे, तब मैं उन्हें लोरियाँ आदि नहीं, बल्कि अपने जीवन के संघर्ष की कहानी सुनाता था, उन्हें बताता था की मैं भी डॉक्टर बनाना चाहता था और तभी से बेटियों ने डॉक्टर बनाने की ठान ली थी। जिसके बाद उन्होंने खूब मन लगाकर पढ़ाई की। वही धुलेश्वर की पत्नी ने भी उन्हें से कोई काम नहीं करवाया और उन्हें केवल पढने दिया। धुलेश्वर बताते हैं की आज भी हमारा मकान आधा कच्चा है, क्योकि जो भी कमाई होती है, उसका 95% हिस्सा तो बच्चों की पढ़ाई पर ही खर्च हो जाता है। उन्होंने बच्चो को ट्यूशन पढ़ाने के लिए एक ट्यूशन टीचर को भी रखा था। ताकि गर्मी हो या सर्दी बच्चों की छुट्टी न लगे और वो पढ़ाई करती हैं। वही बच्चों ने भी खूब मेहनत की है। जिस वजह से उनका एक बेटा आज सरकारी इंजीनियर है। वही उनकी एक बेटी M.Sc के बाद B.ed कर रही हैं, तो एक बेटी नर्सिंग कर्मचारी है। इसके अलावा उनका एक बेटा और 2 बेटिया बीकानेर के एक सरकारी मेडिकल कॉलेज में MBBS की पढ़ाई कर रही है। धुलेश्वर कहते है की उनकी पांचो बेटियों ने 10वीं और 12 वीं में भी 70% से ज्यादा अंक हासिल किये थे। जिससे उन्हें सरकार की तरफ से 5 स्कूटी भी मिली है। जो कि आज बहुत काम आ रही है। धुलेश्वर बताते है की बच्चों की प्राथमिक पढाई तो जैसे-तैसे हुई सो हुई। लेकिन उन्हें अपनी संगीता बेटी को जो कि MBBS के फाइनल इयर में है। डॉक्टर बनाने की जिद थी। ऐसे उसकी पढ़ाई का खर्चा उठाने के लिए उन्होंने खेती भी की, पशुपालन भी किया और किराने की दूकान भी चलाई। तब जाकर कुछ पैसे जोड़े और संगीता को एलन पॉइंट में NEET की तैयारी कराई। वही उन्होंने अपने बेटे महिपाल और बेटी प्रियंका को उदयपुर एसेंट में कोचिंग कराई। फिर इन् तीनो बच्चो का एक ही बार में MBBS में एडमिशन भी हो गया।

☞ **पिता ने खेती कर बेटी को बनाया डॉक्टर, दादाजी करते है बूट पोलिश का काम :-** दुनियां भर में जिस तरह बेटो ने नाम कमाया है, उसी तरह बेटियों ने भी अपने माता पिता का नाम रोशन किया है, बेटिया भी अब अपने परिवार का लालन पालन करने योग्य हो गयी है जो अपने माता पिता की मेहनत बेकार नहीं जाने देती है यह कहानी सुनकर शायद आपकी आँखों में आंसू आ जाये। कुमारी मंजू से डॉ कुमारी मंजू बनने का उनका यह सफर आसान नहीं रहा था। वैसे तो कई बच्चे डॉक्टर बनते हैं लेकिन उन्हें पढ़ने के लिए सुख सुविधाएँ और शिक्षा का वातावरण मिलता है, लेकिन कुमारी मंजू के साथ ऐसा नहीं था, उन्हें ना तो शिक्षा का वातावरण मिला और ना पढ़ने के लिए सुविधाएँ, ना ही पर्याप्त संसाधन। इनके परिवार में आर्थिक परेशानी का माहौल रहता था, ऐसे में डॉक्टर की पढ़ाई करना बहुत मुश्किल था। कुमारी मंजू एक गरीब परिवार से थीं। उनके दादाजी बूट पॉलिश करने का काम किया करते थे। उनके पिताजी ग्रेजुएट थे लेकिन, जब उन्हें कोई नौकरी नहीं मिली तो परिवार का पालन करने के लिए वह किसान बन गए और खेती का काम करने लगे। उनकी माँ बहुत काम पढ़ी लिखी थीं, इसलिए कुमारी मंजू को उनसे पढ़ने में तो सहायता नहीं मिल पाती थी, परन्तु उनकी माँ चाहती थीं कि उनकी बेटी को पढ़े लिखे और जीवन में कुछ बनकर दिखाए। उनके पिताजी खूब मेहनत करते खेती किया करते थे और बेटी मंजू को पढ़ाने लिखाने के लिए भी जो बन पड़ता था करते थे। यद्यपि पुत्र ना होने के कारण रिश्तेदारों, परिवार और समाज के लोगों ने उनके पिताजी को दूसरी शादी करने के लिए बहुत दबाव बनाया, जिससे उन्हें बेटा मिल सके, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। मंजू के गाँव में इनका छत का मकान भी नहीं था और किसी प्रकार की सुख सुविध ा भी नहीं थी। उस समय इनके परिवार के आर्थिक हालात बहुत खराब थे।

डॉक्टर कुमारी मंजू बिहार के गोपालगंज जिले के भोरे प्रखंड में स्थित एक बहुत पिछड़े हुए गाँव बनकटा में जन्मीं थीं, इसलिए इनकी शुरुआती शिक्षा को पूर्ण करवाने के लिए इनके पिताजी रोजाना साइकिल से 8 किलोमीटर दूर इनको स्कूल छोड़ कर आते और घर वापस लाते थे। ना तो वहाँ पर पक्की सड़कें थीं और ना ही बिजली की व्यवस्था थी। इसके अलावा वहाँ पर्याप्त यातायात के साधन भी नहीं थे। कुमारी मंजू लालटेन की रौशनी में ही पढ़ाई करती थीं। उस समय उनके इलाके में माहौल बहुत खराब था तो, कोई भी माँ बाप अपनी बेटी को घर से बाहर नहीं निकलने देना चाहते थे, पर कुमारी मंजू ने बिना घबराए अपनी पढ़ाई की। वे छोटी उम्र से ही पढ़ाई में बहुत अच्छी थीं। दसवीं कक्षा उन्होंने बहुत अच्छे अंको से पास की और फिर आगे पढ़ने के लिए पटना गयीं। मेधावी होने के कारण दसवीं की पढ़ाई अच्छे नंबरों से पास करने के बाद आगे की तैयारी के लिए पटना चली गयीं। डॉ० कुमारी मंजू ने पटना के BN कॉलेज से इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी की। वहाँ पर भी ने पढ़ाई के लिए बहुत-सी परेशानियाँ आईं। पैसे ना होने की वजह से उन्हें अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। वे हर रोज अपनी साइकिल से 20 किलोमीटर दूर जाकर मेडिकल एग्जाम की तैयारी किया करती थीं। इतना ही नहीं, उस वक्त उनके पास मेडिकल की महंगी किताबें खरिदने के लिए पैसे नहीं होते थे, इसलिए वे अपनी सहेलियों से बुक्स मांग कर काम चलाती थीं।

कुमारी मंजू को पता था कि उनके घर के हालात अच्छे नहीं हैं, इसलिए अपने पिताजी का बोझ कम करने के लिए उन्होंने पटना में बच्चों को ट्युशन पढ़ाना शुरु कर दिया। इस प्रकार से उन्होंने अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए बहुत संघर्ष किया। उन्होंने नालंदा मेडिकल कालेज एंड हास्पिटल से अपनी MBBS की पढ़ाई पूरी की और बिहार के 1st नम्बर के मेडिकल कालेज PMCH से MS की पढ़ाई भी पूरी की और नतीजन, आज कुमारी मंजू एक सफल चिकित्सक के पद पर स्थित होकर सभी को अपनी सेवाओं से लाभान्वित कर रही हैं।

☞ **गरीब पिता ने पाई-पाई जोड़ बेटी को दिया सस्ता सा गिफ्ट, चेहरे की खुशी ने जीत लिया सबका दिल :–** आज का समय दिखावे का हो गया है। चाहे छोटा सा बच्चा ही क्यों ना हो, उसे गिफ्ट में महंगे आइटम्स ही पसंद आते हैं। रिमोट कंट्रोल कार या किसी अन्य तरीके का महंगा उपहार ही बच्चों को खुश कर पाता है। वो समय गया जब पिता द्वारा लाई गई एक रुपए की टॉफी भी बच्चे को खुश कर देती थी। समय के बदलने के बाद अब खुशियों की कीमत भी बदल गई है। लेकिन इन सबके बीच सोशल मीडिया पर ऐसी तस्वीरें वायरल हो रही है, जिसे देखने के बाद समझ आएगा कि असली खुशी किस चीज में है? सोशल मीडिया पर एक गरीब पिता के द्वारा अपनी बेटी को दिए गए नकली घड़ी और उसे देख बेटी के चेहरे की खुशी इन तस्वीरों में कैद हो गई। इस छोटी सी बच्ची की खुशी देख समझ आया कि हमें हर उस चीज के लिए कितना शुक्रगुजार होना चाहिए जो हमारे पास है। फेसबुक पर द वायरल परक नाम के पेज पर इन तस्वीरों को शेयर किया गया। इसमें एक गरीब बच्ची अपने पिता द्वारा दिए गए नकली टॉय वॉच से इतनी खुश हो गई, मानो उसे पूरी दुनियां ही मिल गई हो। उसके पिता ने ये खिलौना एक छोटे से शॉप से खरीदी थी। जब ये घटना सड़क के किनारे हो रही थी, तभी इसे वहां कार में बैठे एक शख्स ने अपने मोबाइल में कैद कर लिया। इसके बाद तस्वीरों को फेसबुक पर शेयर किया, जहां से ये वायरल हो गया। तस्वीरों के साथ शख्स ने कैप्शन में लिखा कि मुझे नहीं पता कि ये दोनों कौन हैं? लेकिन ये सब मेरी आंखों के सामने हुआ। ये पिता हर दिन एक दुकान के सामने से गुजरता था। कई दिन की सेविंग्स के बाद उसने आज ये खिलौना खरीदा और उसे अपनी बेटी को दे दिया। जैसे ही उसकी बेटी ने अपना गिफ्ट देखा, उसके चेहरे की खुशी देखने लायक थी. आज के समय में इतनी खुशी कई बच्चों को महंगे तोहफे देख कर नहीं होती, जितनी इस बच्ची को हो रही थी। बच्ची का इतने सस्ते गिफ्ट में खुशी से झूम उठना और वो भी तब जब घड़ी नकली थी, लोगों को काफी कुछ सीखा गया। कई लोगों ने कमेंट करते हुए लिखा कि आज के समय में छोटी–छोटी खुशियां मैटर करती हैं। हम भूल जाते हैं कि जो हमारे पास है, वो कई लोगों के पास नहीं है। ऐसे में जो है, उसके लिए भगवान को थैंक्स करने की जरुरत है। बेटी को इतना खुश देख पिता भी बेहद खुश नजर आया। लोगों ने दोनों को कमेंट बॉक्स में कई ब्लेसिंग्स दी और अपने पास जो भी सुविधाएं हैं, उसके लिए भगवान को शुक्रिया किया।

गौरतलब है कि पिता अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए सबकुछ न्योछावर कर देते हैं। उन्हें जेठ की तपती गर्मी में धूप ना लगे, बरसात के पानी को चादर तरह अपने ऊपर ओढ़कर अपने बच्चों को भींगने ना दे और ठंड़ की कपकपाती शर्दी में अपने सीने से लगाकर उसे गर्मी देता वह पिता कोई भगवान से कम नहीं होता। हमने अभी उन पिता के योगदान के बारे में जाना और पढ़ा, जिन्होंने बड़े से बड़े उच्च पदों पर हर मुश्किलों से डटकर सामना करते हुए बच्चों का भविष्य बनाया, ख्याति दिलायी और उन बच्चों ने भी उस पिता का मान–सम्मान बढ़ाया। अब आगे एक और भी सच्चाई से रू–ब–रू कराते हैं, जिनसे पढ़कर आपके आंखों में अश्रु आ जायेंगे।

एक हाथ में बच्ची, दूसरे हाथ से खींचता रिक्शा; ऐसे पिता धर्म निभा रहा है एक शख्स। एक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जो इस बात का प्रतीक है कि एक पिता के प्यार से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं है। एक पिता अपने बच्चे की परवरिश के लिए सब कुछ दांव पर लगा देता है। जितना महत्व एक बच्चे के जीवन में उसकी मां रखती है, उतना ही जरूरी एक पिता होता है। लेकिन कई बार पिता अपने बच्चों के लिए सारी हदें पार कर जाते हैं। भले ही बच्चों को कभी पिता द्वारा घर में बनाए गए तरीके पसंद नहीं आते, लेकिन जब बात अपनेपन और सहारे की आती है तो हर कोई पिता का ही कंधा ढूंढता है। एक आदमी सारी उम्र जी–जान मेहनत करता है, जिससे वो अपने परिवार को सुखी रख सके। एक ऐसे ही पिता की तस्वीर सोशल मीडिया पर सामने आई हैं जो आपको पिता पर गर्व महसूस कराएगी, लेकिन एक पल के लिए आपकी आंखें भी नम कर देगी। एक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जो इस बात का प्रतीक है कि एक पिता के प्यार से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं है। फोटो में एक गरीब रिक्शा वाला हाथों में अपनी नन्हे से बच्चे को लेकर सवारी चला रहा है। उसका एक हाथ रिक्शा पर है तो दूसरा अपने बच्चे पर, उसके चेहरे की चिंता उसकी जरूरत को झलक रही है। एक पिता की यह तस्वीर प्यार और मेहनत को साफ जाहिर कर रही है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रही इस तस्वीर को ट्विटर पर रूपिन शर्मा नाम के आईपीएस ऑफिसर ने शेयर किया है। उन्होंने तस्वीर के साथ कैप्शन में

लिखा- 'जरूरत, प्रेम और काम का मार्मिक मिश्रण'। ऐसा कहा जा रहा है कि यह फोटो राजस्थान की है। एक हाथ रिक्शा की हैंडिल पर तो दूसरा अपने बच्चे पर। यह तस्वीर बयां करती है कि पिता का कर्तव्य और उस बच्चे की जवाबदेही उसके उपर है, क्योंकि उसकी पत्नी की मौत के बाद इस बच्चे का ख्याल रखने वाला कोई नहीं है। इस तस्वीर को सोशल मीडिया पर लोग खूब पसंद कर रहे हैं।

दूसरी घटना उस पिता से संबंधित है, जिसका परिवार, उनके बच्चे सात साल पहले उनसे बिछड़ गये थे, फिर भी उसने हार नहीं मानी और सात साल बाद अपने बच्चों को देखकर पिता के जुबां से निकला कि 'आज दोबारा मुझे मेरा पूरा संसार मिल गया। सात साल बाद बिछड़े बच्चों का अचानक सामने आना... पिता की आंखों से खुशी के आंसू बहना... कभी बच्चों को गले से लगाना तो कभी खुशी से उनके सिर को चूम लेना। यह दृश्य गुमला चाइल्ड वेलफेयर कमेटी के ऑफिस में तब दिखा, जब बंगाल के एक स्टेशन पर बिछड़े बच्चों से उनके पिता मिले। बच्चों के गुम होने के गम में मां ने 2015 में दम तोड़ दिया था, पर पिता ने हिम्मत नहीं हारी और आखिरकार उन्हें उनके बच्चे मिल गए। खुशी के इस माहौल में भावुक पिता ने कहा कि मेरा प्यार जीत गया। अब मुझे पूरा संसार मिल गया है। मेरी पत्नी आज जिंदा होती तो बच्चों से मिलकर फूले न समाती।

हुआ यूं कि 2014 में बिलांबर सिंह उर्फ रवि तिर्की अपने 5 बच्चों से बंगाल के एक स्टेशन पर बिछड़ गए थे। पांचों बच्चे जुलीन (15), जसिंता (14), प्रियंका (12), प्रकाश (9) और भीम (8) की गुमला के CWC के ऑफिस में पिता से मुलाकात हुई। बिलांबर बताते हैं कि वो अपनी पत्नी मोनी देवी के साथ असम के चाय बगान में काम करते थे। उन्हें तारीख ठीक से याद नहीं पर 2014 में योजना बनाई कि बच्चों को एक बार अपने गुमला स्थित गांव घुमा लाएं। वह अपनी पत्नी और पांचों बच्चों के साथ ट्रेन में बैठ गए। बिलांबर बातचीत करते हुए भावुक हो जाते हैं और कहते हैं, स्टेशन का नाम याद नहीं पर ट्रेन के रुकते ही वे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ वहां उतर गए। बच्चों को प्लेटफॉर्म पर बैठा खुद पत्नी के साथ पानी लेने नल की ओर चले गए। जब पानी लेकर वापस आए तो बच्चे वहां नहीं मिले। बिलांबर बताते हैं कि एक वो दिन था और एक आज। तब से बच्चों को ढूंढने के लिए जगह-जगह घूमता रहा। मैं असम के रूट पर हर स्टेशन और ट्रेन में तलाश करता रहा। लोग जहां जाने को कहते, वहां पहुंच जाता। सारे पैसे खत्म हो गए। इसी बीच बच्चों को ढूंढने के क्रम में उनकी मां भी 2015 में मुझसे बिछड़ गई। फिर मैं अपनी पत्नी की भी तलाश करने लगा। पर उसका कुछ पता नहीं चला। 2020 में मोनी देवी की मां ने बिलांबर को बताया कि उसकी पत्नी की मौत हो चुकी है। बिलांबर पूरी तरह से टूट गए पर उन्होंने हार नहीं मानी। इसी बीच बिलांबर गुमला के CWC पहुंचे और अपनी कहानी बताई। इसके बाद CWC की सदस्य सुषमा देवी ने खूंटी चाइल्ड लाइन और सहयोग विलेज संस्था, खूंटी से संपर्क किया तो बच्चों का पता चला। बिलांबर के बच्चे गुमला से 120 किमी दूर खूंटी में चाइल्ड लाइन की देखरेख में रह रहे थे। बिलांबर से घटना की जानकारी लेने के बाद बच्चों से बात की गई। 4 बच्चों को बहुत कुछ याद नहीं था, लेकिन बड़ी बेटी ने जो बताया, वह बिलांबर की बातों से मिलता था। इसके बाद बच्चों को उनके पिता के हवाले करने का निर्णय लिया गया। पांचों बच्चों को खूंटी से गुमला लाया गया था।

गौरतलब हो कि किसी व्यक्ति के जीवन में पिता का क्या महत्व होता है, इन बातों को कितने भी पन्नों में लिखकर कैद कर ली जाये, फिर भी यह अधूरी ही होगी, क्योंकि पिता का महत्व को कभी आंका नहीं जा सकता। हां पिता के महत्व और उनका अपने बच्चों के प्रति दिये गये योगदान फादर्स डे यानि पिता दिवस में चार चांद जरूर लगा देंगे और उक्त दिवस को खास बनाने के लिए ऐसा क्या किया जाना चाहिए जो यादगार बन जाये? पिता एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती। बचपन में जब कोई बच्चा चलना सिखता है तो सबसे पहले अपने पिता की उंगली थामता है। नन्हा सा बच्चा पिता की उँगली थामे और उसकी बाँहों में रहकर बहुत सुकून पाता है। बोलने के साथ ही बच्चे जिद करना शुरू कर देते है और पिता उनकी सभी जिदों को पूरा करते हैं। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक आपकी सभी माँगों को वो पूरा करते रहते हैं, लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। खैर! समय की कमी में आपके लिए एक ऐसा मौका है जब आप अपने पिता के लिए कुछ खास कर सकें। इय वर्ष 19 जून को फादर्स डे पर आप उनके लिए कुछ खास कर सकते हैं। उन्हें कुछ खास तोहफा दे सकते हैं। फादर्स डे को लेकर बाजार में ढेरों तरह के गिफ्ट आइटम मौजूद हैं। जरूरत है आप अपने पिता की पसंद को ध्यान में रखते हुए उन्हें कोई खास गिफ्ट दें। गिफ्ट दिल से दिया जाता है उसकी तुलना पैसे से नहीं होती। इसलिए आप छोटा या बड़ा नहीं सोचे और उस तरह के गिफ्ट खरीदें जो आपके बजट में भी आ जाए और आपके पापा को पसंद भी आए। बाजार में हर रेंज में अच्छे गिफ्ट आइटम मौजूद हैं। आप चाहें तो खुद की लिखी कोई कविता भी गिफ्ट के तौर पर पापा को दे सकते हैं। एक आदर्श व्यक्ति ही जीवन में पिता की भूमिका को समझ सकता है। पिता बनना तो आसान है परंतु पिता के कर्तव्य पूरा करना, हर किसी के बस की बात नहीं होती है। इस फादर्स डे पर हम अपने पिता के लिए कुछ ऐसा करें, जो उन्हें उनके जीवन भर याद रहे। हमेशा सम्मान देना चाहिए। पिता दयालु और आदर्शवादी होते हैं। कुछ लोगों के पिता उनके लिए आदर्श भी होते है, वह उनके जैसे बनना चाहते हैं। बच्चों के लिए हमेशा तत्पर कार्य करने के लिए पिता हमेशा तैयार रहते हैं। इस भावना को बरकरार रखने के लिए फादर्स डे मनाया जाता है।

आज भी वो प्यारी मुस्कान
याद आती हैं
जो मेरी शरारतों से
पापा के चेहरे पर खिल जाती थी
अपने कंधो पर बैठा कर
वो मुझे दुनियाँ की सैर कराते थे
जहाँ भी जाते मेरे लिए
ढेर सारे तोहफे लाते थे
मेरे हर जन्मदिन पर
वो मुझे साथ मंदिर ले जाते थे
मेरे हर रिजल्ट का बखान
पूरी दुनियाँ में कर जाते थे
मेरी जिंदगी के सारे सपने
उनकी आँखों में पल रहे थे
मेरे लिए खुशियों का आशियाना
वो हर पल बुन रहे थे
मेरे सपने उनके साथ चले गये
मेरे पापा मुझे छोड़ गये
अब आँखों में शरारत नहीं
बस आंसू ही दीखते हैं
एक बार तो वापस आ जाओ पापा
हैप्पी फादर्स डे तो सुन जाओ पापा

An Easy Guide to Choosing Car Insurance for First-Time Buyers

Bought a car for the first and now your insurance renewal date is coming soon? Well, purchasing a car insurance policy for first time car owners is always overwhelming as there are a lot of aspects that are required to be considered. From the insurance coverage, add-ons and more, there are several factors to keep in mind, which at times become really confusing.

To help you deal with the easy car insurance purchase and renewal process, we have brought this guide with detailed explanations. With new-age insurers like ACKO India the process is now quite simplified, making it easier for first-time buyers to explore and understand car insurance online.

So, keep reading to know everything in detail.

Importance of Choosing the Right Car Insurance

Choosing a proper vehicle insurance policy helps in protecting against different unexpected financial burdens. In case you face an accident, comprehensive coverage helps to cover the costs of vehicle repairs, property damage and medical expenses. This also includes any third-party liabilities, offering financial protection against claims from others.

It is important to understand that a proper insurance plan mostly offers peace of mind while driving and must also be affordable and tailored to your requirements. Different plans also provide you with add-on options like protection against natural calamities or roadside assistance. Make sure to carefully review your policy, compare different features and ensure to understand the

terms and conditions.

Ways to Purchase Car Insurance for Your First Car

Purchasing car insurance while you are a first-time buyer is not complicated. Once you finalise the plan or insurer, there are two methods to follow for purchasing a policy: offline and online. Both of these methods have their own advantages and disadvantages. However, it is advisable to purchase car insurance after a thorough comparison of prices from different car insurance companies online.

To purchase a vehicle insurance policy online, you need to do the following :-

1. Go to the mobile application or official website of your insurance provider.
2. Provide your car details.
3. Select the type of car insurance you want to purchase (comprehensive, third-party or own damage).
4. Select any add-ons for your policy.
5. Complete the payment of the premium.

And, done! Your policy documents will be sent to your email ID or registered phone number.

Things to Keep in Mind While Choosing Insurance for Your New Car

Now that you are a first-time buyer of a brand-new car, here are the simple tips to keep in mind while choosing the right car insurance :-

Do Not Depend Solely on Dealers

Many car dealers promote insurance policies that earn them money from commissions. You might find that these are not the best choice for your situation. You should try to look into your options by yourself. Review the websites of car insurance companies, consider their offered benefits and look at reviews before signing up.

Know Your Needs

When choosing a car insurance policy, keep in mind how frequently you drive, the location of your home and possible risks you may encounter. If you live in a place prone to theft or floods, select plans that include coverage for them. By assessing your location and how often you drive, you can buy the most fitting car insurance.

Thorough Comparison of Plans

Do not accept the initial plan you come

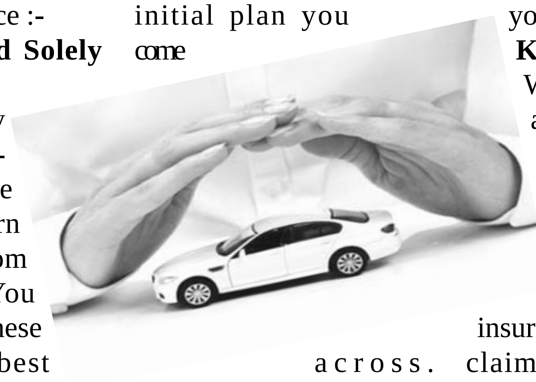

across. Check the price, scope of the policy, how to file a claim and the reviews others have left for the insurance provider. Choose the best providers by checking the options provided by comparison tools online. Paying less on premiums might result in poor customer care support or less coverage, so make sure to go through everything before you sign up.

Choose Add-ons Wisely

Engine protection and zero depreciation add-ons cover more, but will cost more as well. Go for tyres that fit well with your car. Putting engine protection in your car will help you if you live in an area prone to wet weather. Try not to add extra features that are not necessary to your insurance plan.

Know Your Insurer

While purchasing the auto insurance, a key factor to consider is the insurance provider. Thoroughly research about the insurance company, their claim settlement ratio, terms and conditions and customer ratings to get an idea how much it is feasible for your requirement. make sure to choose a company with an efficient and easy claim settlement process. A reliable insurance provider comes handy during your emergency.

Final Thoughts

Selecting a proper car insurance policy, especially if you are a first time buyer can be confusing. However, once you familiarise yourself with the coverages, premiums, add-ons and align them with your requirement and budget, the process does not seem to be too overwhelming. Remember that insurance is not only a legal requirement but rather a smart step towards car ownership!

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ अपराधिक मामले में अभियुक्त, पीड़ित या सूचक की मौत हो जाने पर क्या केस की कार्यवाही बंद हो जाती है?

राज्य किसी भी अपराध की घोषणा करती है कि क्या काम अपराध है और किस काम को करना अपराध नहीं है, इसका निर्धारण स्टेट द्वारा किया जाता है जिस किसी भी कार्य या कार्य लोप को स्टेट द्वारा अपराध बना दिया जाता है उसके लिए निर्धारित किया गया दंड भी न्यायालय के आदेश से स्टेट द्वारा दिया जाता है। एक अभियुक्त जिस पर कोई मुकदमा चलाया जा रहा है यदि वे कोई अपराध करता है तब उसका अपराध पीड़ित के खिलाफ नहीं होता है बल्कि राज्य के खिलाफ होता है जैसे कि भारत सरकार ने संसद द्वारा अधिनियमित किए गए कानून के माध्यम से उतावलेपन से मोटरयान चलाना एक अपराध बनाया गया है ऐसे उतावलापन के कारण अगर किसी व्यक्ति को किसी भी तरह की कोई नुकसान होती है तब वह व्यक्ति पीड़ित होगा लेकिन होने वाला अपराध राज्य के विरुद्ध किया गया माना जाता हैद्य राज्य सरकार उस अपराध का अभियोजन चलाता हैद्य अपराध साबित होने पर अभियुक्त को दोस्त सिद्ध कर दंडित किया जाता है।

एक आपराधिक मामले में अभियुक्त होते हैं और एक पीड़ित होते हैं। पीड़ित वह व्यक्ति होता है जिसे अपराध के जरिए नुकसान पहुंचाया गया है अगर किसी आपराधिक मामले में अभियुक्त या पीड़ित की मौत हो जाती है तब परिस्थितियां भिन्न हो जाती हैं :-

पीड़ित की मौत होने पर केस की स्थिति :- किसी आपराधिक मामले में पीड़ित की मौत होने पर अभियोजन पर किसी भी प्रकार का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है जैसे कि किसी व्यक्ति को चाकू मारकर घायल किया गया है। चाकू से हमला करने वाले पर स्टेट अभियोजन चला रही है, कुछ समय बाद जिस व्यक्ति को चाकू से मारा गया था उसकी मौत हो जाती है तब मामला खत्म नहीं होता है, मुकदमे में अभियोजन तो चलता रहता है।

स्टेट मामले को अंत तक चलाती है क्योंकि स्टेट कभी भी समाप्त नहीं होती हैद्य एक पीड़ित की मौत होने से केवल अभियोजन में एक गवाह कम हो जाता है, अगर पीड़ित ने गवाही दे दी है तब गवाह भी कम नहीं होता है। एक पीड़ित की मौत के बाद भी मुदालय को दंडित किया जा सकता द्य पीड़ित की मौत होने पर उसके उत्तराधिकारी की ओर से किसी भी आवेदन को लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। वैसे चाहे तो सीआरपीसी की धारा 302 के तहत अभियोजन चलाने का परमीशन लिए जा सकते हैं। आवेदन लगाने की आवश्यकता सिविल मामले में होती हैद्य आपराधिक मामलों में ऐसी कोई भी व्यवस्था नहीं है।

परिवाद पर दर्ज किए गए आपराधिक मामले में पीड़ित की मौत होने पर उसके उत्तराधिकारी आवेदन के माध्यम से स्वयं को उपस्थित कर सकते हैं जैसे कि कोई चेक बाउंस होने पर नेगोशिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट की धारा 138 के अधीन आयोजन चलाने पर पीड़ित की मौत हो जाने पर उसके वैध उत्तराधिकारी न्यायालय में उपस्थित होकर आगे मामले का संचालन कर सकते हैं तथा मरने के बाद व्यक्ति की ओर से उत्तराधिकार के रूप में प्रतिकर भी प्राप्त कर सकते हैं।

मुदालय की मौत होने पर मुकदमों की स्थिति :- किसी आपराधिक मामले में मुदालय की भी मृत्यु हो सकती हैद्य भारत में न्यायालय में चलने वाले मुकदमे वर्षो वर्ष तक चलते हैं ऐसी स्थिति में मुदालय भी मर सकते हैं। एक मुदालय के मर जाने से अभियोजन समाप्त नहीं होता है अपितु उसके दोष सिद्धि या दोष मुक्ति अंत तक निर्धारित नहीं होती है। जिस दिन न्यायालय द्वारा मामले में निर्णय लिया जाता है उस दिन ही यह माना जाता है कि वह व्यक्ति दोषी था या नहीं। हालांकि अभियोजन की ओर से किसी भी मुदालय की मृत्यु हो जाने पर एक आवेदन प्रस्तुत कर दिए जाने पर न्यायालय मामले को आगे नहीं चलाती है परंतु अभियुक्त के परिवार जन किसी विशेष मामले में मुदालय को बरी करवाना चाहते हैं तथा मुकदमे को आगे चलाना चाहते हैं तब अभियोजन को पूरा चलाया जा सकता है।

अगर किसी अभियोजन में एक से अधिक अभियुक्त हैं तब तो अभियोजन के समाप्त होने का कोई सवाल ही नहीं उठता है जो मुदालय जिंदा है उन पर तो मुकदमा चलाया ही जाएगा द्य अंत में जिंदा मुदालय दोष सिद्ध पाए जाते हैं तब उन्हें दंडित करने के लिए जेल भी भेजा जा सकता है। उत्तराधिकार इत्यादि के मामले में हत्या का आरोप लगने पर कोई व्यक्ति को उतराधिकार नहीं मिलता है इसलिए हत्या जैसे मामलों में अभियुक्त के उत्तराधिकारी न्यायालय से यह निवेदन करते हैं कि अभियोजन को पूरा चलाया जाए ताकि इससे यह स्पष्ट हो सके कि मरने वाला अभियुक्त दोषी था या नहीं उत्तराधिकार विधि में यदि कोई व्यक्ति हत्या का दोषी पाया जाता है तब उसे उत्तराधिकार नहीं प्राप्त होता है।

✯ क्या पुलिस किसी अपराधी की गिरफ्तारी करते समय गिरफ्तारी का विरोध करने पर उसकी हत्या भी कर सकती है?

यदि कोई व्यक्ति गिरफ्तारी का बलपूर्वक विरोध करता है तो पुलिस अधिकारी हत्या के अभियुक्त व्यक्ति की मृत्यु कारित कर सकता है किंतु भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता-2023 की धारा 43(4) से यह स्पष्ट होता है कि यदि मृत्यु या आजीवन कारावास से दंडनीय अपराध का अभियुक्त अपनी गिरफ्तारी का बलपूर्वक विरोध करता है तो पुलिस अधिकारी उसकी मृत्यु कारित कर सकता है या अगर खतरनाक अपराधी जिस पर हत्या का आरोप हो वह कैद से फरार हो रहा हो तो उसकी हत्या पुलिस कर सकती है या सेल्फ डिफेंस में भी पुलिस वैसे मुदालय की हत्या कर सकती है। पुलिस द्वारा फर्जी एनकाउंटर के मामले भी काफी चर्चा में इन दिनों रहे हैं खासकर उत्तर प्रदेश राज्य में कई फर्जी एनकाउंटर की बातें मीडिया में सुनने को मिली है जब भी कोई एनकाउंटर का विरोध होता है तो सरकार उसे सीबीआई के हवाले जांच करने के लिए भेज देती है ताकि उनके सरकार की फजीहत ना हो।

✯ क्या दो नपुंसको या दो पुरुषों या स्त्रियों के बीच किया गया विवाह वैध होता है?

दो नपुंसको के बीच किया गया विवाह शुन्य होता है यही बात दो पुरुषों के बीच या दो महिलाओं के बीच किया गया विवाह के ऊपर भी लागू होता है क्योंकि विवाह के लिए दो पक्ष कार होनी चाहिए जिनमें एक पक्षकार का पुरुष होना तथा दूसरे पक्षकार का स्त्री होना आवश्यक होता है इसलिए यदि दो पुरुष आपस में विवाह करते हैं तो वह विवाह शुन्य माना जाएगा या दो महिला आपस में विवाह करती है तो भी वह विवाह शुन्य होता है।

आवश्यकता

अगर आप में है आत्मविश्वास और तीव्र इच्छा, तो मौका है इसे पूरा करने का....

बिहार की सबसे लोकप्रिय पत्रिका

केवल सच

और

केवल सच TIMES

को बिहार के हर जिले, प्रखंड एवं पंचायत स्तर पर संवाददाता, विज्ञापन प्रतिनिधि (डोर टू डोर मार्केटिंग) एवं प्रसार के कार्य के लिए परिश्रमी एवं जुझारू युवक/युवतियों की आवश्यकता है।

योग्यताः-

जिला ब्यूरो	प्रखंड संवाददाता	पंचायत संवाददाता	विज्ञापन प्रतिनिधी
स्नात्तक उतीर्ण	स्नात्तक/इंटर	स्नात्तक/इंटर/मैट्रिक	स्नात्तक/इंटर/मैट्रिक

संपर्क करेः-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, कंकड़बाग

पटना-20, मो.- 9431073769, 9955077308

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Dispersing Happiness

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008